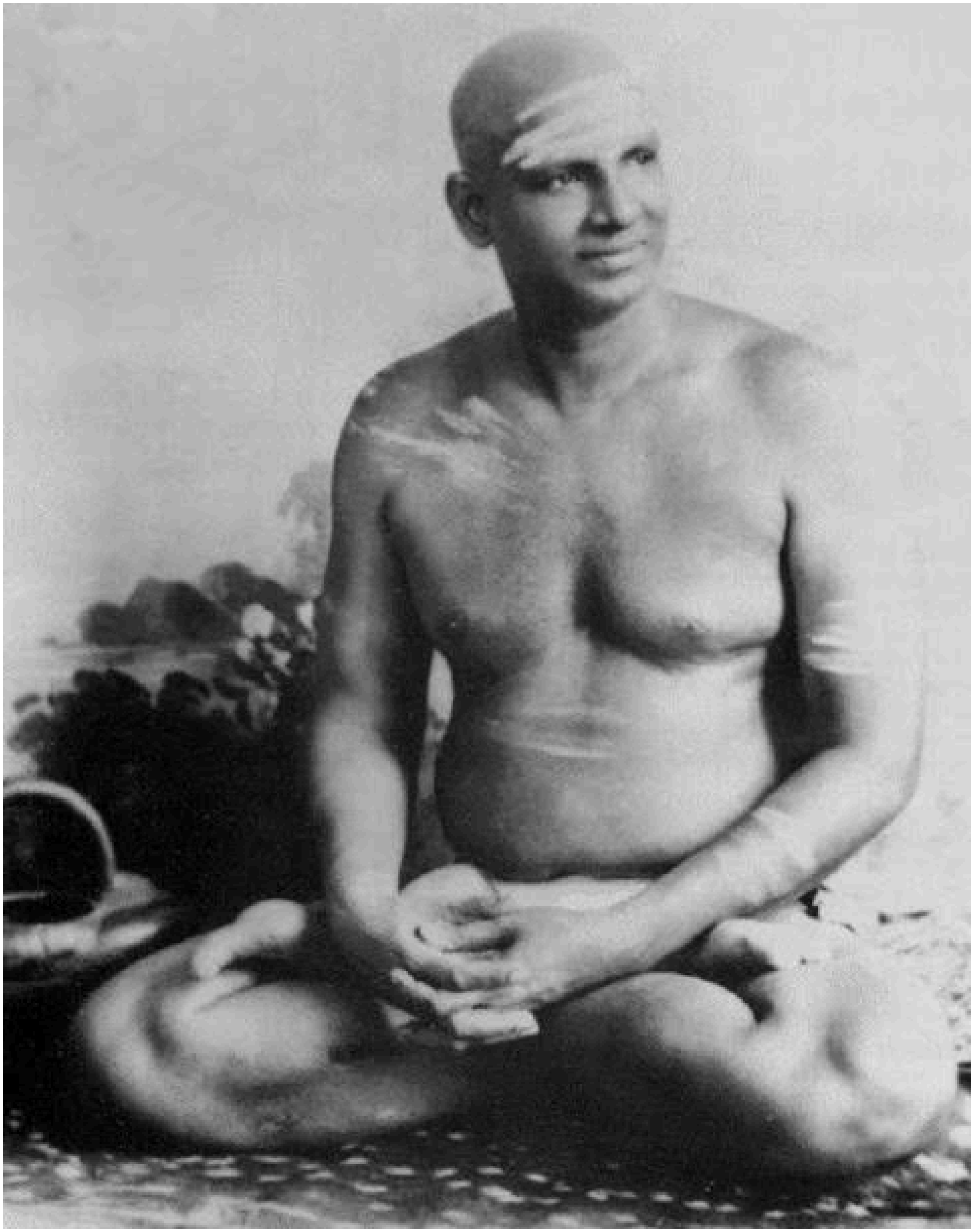
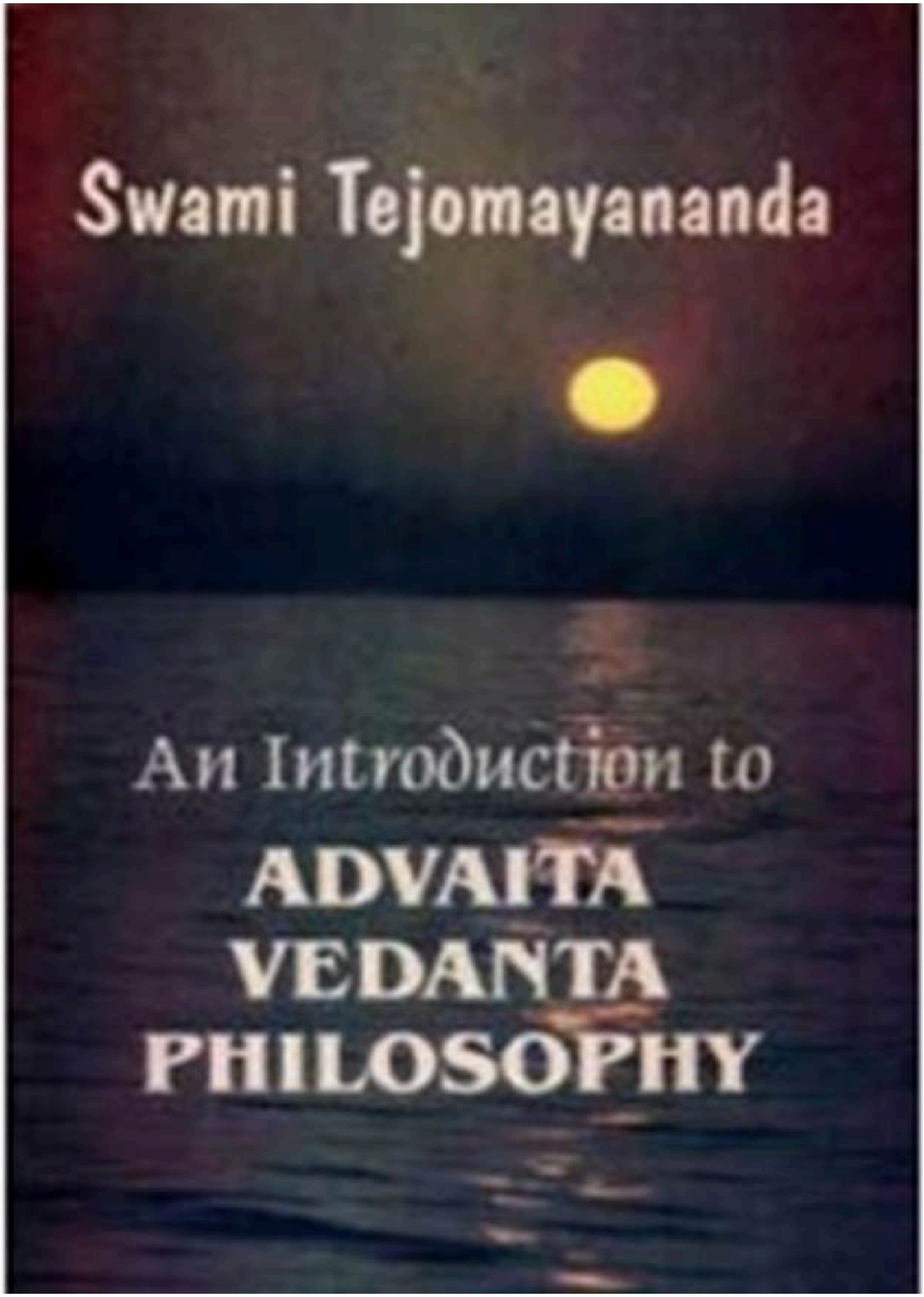



Swami Tejomayananda
An Introduction to
ADVAITA
VEDANTA
PHILOSOPHY

AN INTRODUCTION TO

ADVAITAVEDANTA PHILOSOPHY

A Free Rendering into English of

‘Laghuvasudevamanana’

BY

SWAMI TEJOMAYANANDA

का हिन्दां अन वे दां

अद्वैत वे दां त दांर्श न

अन वे दांका मेर्श च न

AN INTRODUCTION TO

ADVAITA VEDANTA PHILOSOPHY

A Free Rendering into English of

‘Laghuvasudevamanana’

BY

SWAMI TEJOMAYANANDA

Published By

THE DIVINE LIFE SOCIETY,

P.O SHIVANANDANAGAR-249 192,

Distt. Tehri-Garhwal, U.P., Himalayas, India

1999

OM

Dedicated At The

Lotus Feet Of

Gurudev

Sri Swami Sivanandaji Maharaj

OM

हिवेषयसू च

प्रका र्शका का न.द्द.. 6
भूहि मेका.. 7
भूहि मेका.. 9
तत्त्वेबो ध.. 11
वेर्णका1.. 22
उप द्धा त (प्रस्त वेन)... 22
वेर्णका2.. 29
अनबो ध चतष्ट य औ सू धन चतष्ट.य.. 29
वेर्णका3.. 32
आत्मे औ अन त्मे 32
वेर्णका4.. 36
बोध न का. श्रृंख0 ला I – प ड़ा औ दां ध्व..र्ण.. 36
वेर्णका5.. 47
बोध न का. श्रृंख0 ला II – कामे, प्रमे औ घूर्ण0... 47
वेर्णका-6.. 56
बोध न का. श्रृंख0 ला III –... 56
प्रमे औ घूर्ण0 , आत्मे-परि चय, अहिवेवे का औ अज्ञा.न.. 56
वेर्णका-7.. 65
आत्मे-ज्ञा न... 65
वेर्णका8.. 75
आत्मे त न6 र्श   6 सू हिभून्न... 75
वेर्णका 9 आत्मे त न6 अवेस्था ओं का सू क्षी.. 83
वेर्णका10.. 89
आत्मे प च; का र्श6 सू प 89
अध्य य -11 95
आत्मे सूत-=हिचत-=आन दां स्वेरूप.. 95
वेर्णका12.. 101
आत्मे अहिवेभू ज्य प मे सूत्य 101
उपसू   106
परि हिर्शष्ट I वेदां त बो ध (श्रृं स्वे मे हिर्शवे.न.द्दां)... 107
परि हिर्शष्ट II.. 119

'दांर्शमेस्त्वेमेर्हिंसू–'त दांसूवे ; व्यहिA ' 119

सू र्ण 123

प्रका र्शका का न ट

य अपन त का अन ठा प्रका र्शन , हिCसू वेदां न्त का उन हिवेद्या र्थिथाय6 का ला भू का हिलाए C किकाय C , C अपन अध्ययन का प्र हिभूका च र्ण मे G Hऔ हिCन् Gईश्व , Cगत औ आत्मे का. एकात का मे न हिसूद्धां त का दांर्शन का ग -तकान का.

ज्ञा न प्र प्त का न , C ध -ध व्यवेहिस्थात रूप सू अन भूहि त का स्त 6 मे Gप्रकाट । इसू मेला सूस् का0त का पठान य अग्रे C अन वे दां, हिCसू 'लाघृ वे सूदां वे मेनन' का न मे सू C न C त , अभू तका प्रका हिर्शत न Q हुआ , हिसूवे य एका का C अबो छपन बोदां गय । इसू ग्रेथा का नए अन वे दां का. आवेश्यकात आश्रृंमे का मेख् य लाय मे Gतबो मे सूसू का. गई, Cबो आश्रृंमे का श्रृं स्वे मे तC मेय न दांC मे C न इसू पस् तका का हिवेषय प अपन प्रवेचन र्शरू किकाए औ हिवेद्या र्थिथाय6 न हिर्शक्षीर्ण का. ख का अन सू र्ण का न का हिलाए एका मे गदां र्शका का. आवेश्यकात मे सूसू का.। इसू उद्दे श्य का ध्य न मे G खत हुए, स्वे मे C

न र्शरु आत ला ग6 का हिलाए उपयA एका आसू न र्शला मे,G प ठा का सूहि क्षीप्त अन वे दां का न का काष्ट उठा य ।

का हिलाए उत्सूका

मे वेदां त प

28.4.1999

इसू बोहुमेल् य पहि स्तका का उन सूभू ला ग6 का हिलाए प्रस्तत का HC भू त का प्र च न ज्ञा न का द्वै तका पहुच: प्र प्त का न

-किदां हिYवे इन ला इफ सू सू इट

भूहि मेका

आकिदां-गरु भूगवे न न यर्ण, Cगद्गुग रु श्रृं आकिदां र्शका च य तथा मे पज् य सूद्गुगरु श्रृं स्वे मे हिर्शवे न दांC मे C का नमेन, हिCनका. का0प औ आर्श वे दां प मे श्रृंद्धांय स्वे मे तC मेय न दां सू स्वेत प बोन , हिCनका हिवेद्वैत्ता प र्ण अग्रे C

प्रवेचन, C वेदां हि तका ग्रेथा 'लाघृ वे सूदां वे मेनन' प आध रि त —HC किका वेदां त दार्शन का एका परि चय त्मेका ग्रेथा — इसू

पस् तका का. अत्यत प्रका र्शमे न एवे हिर्शक्षी प्रदां हिवेषयवेस्त का आध ।H

य प्रवेचन वेदां त का छ त्रों6 का हिलाए उच्च स्त का ग्रेथा 6 का अध्ययन आ भू का न का हिलाए एका उत्का0ष्ट एवे

अत्यत उपय ग

भूहि मेका प्रस्तत का त् ।H स्वे मे तC मेय न दांC का. व्य ख्य ए; औ रिटप्पहिर्णय ;अपन नवे न प्रस्तहि त र्शला ,

आधुहि नका

सूदां हिचत्रों6 का स्वे मे तC मेय न दांC का हिनदांर्शen मे Gश्रृं स्वे मे नC CC श्व हिचहित्रोंत किकाय , C इसू अमेल् य

व्य ख्य न प्रद्वांहित औ सू गर्भिभूत दांष्0त 6 का मे ध्यमे सू Cरिटला हिवेषय6 का सू ला रूप मे Gप्रस्तत का न का.

य गदा न का हिलाए, मे बोधाई का पत्र औ ।H

सू था. इसू प्रका र्शन का सूप र्ण श्रृंय स्वे मे तC मेय न दांC का. अत्यत मे नत औ गभू छ त्रों मेY मे हिसूमे न ट

हिवेर्शष' हिवेहिधं की

का र्ण अद्विद्वैत य ।H इसू पस् तका का हिवेर्शष रूप सू मेल् यवे न बोन न मे Gसूहिcमेहिलात च ट्र्ससू का भू हिवेर्शष

(मेहिदांसू) इन

फ्रां सू) का 6 त हिCन् 6न मे च 1971 मे Gउनका का छ प्रवेचन6 मे Gभू ग हिलाय था । मेY मे हिसूमे न ट न

उनका कोक्षी ओं का

व्य ख्य न6 का हिवेस्त0त न ट्र्ससू हिलाए औ Cबो वे फ्रां सू ला टQ, त अपन गरु सू प्र स्र ज्ञा न का प्रहित का0तज्ञात

स्वेरूप इसू सू मेग्रे

का एका स्तहिलाहिखत प Y हिलाहिप का रूप मे Gसूका हिलात किकाय । उन् 6न प उत्सू का सू था इसू ग्रेथा का

पस् तका रूप मे Gप्रका हिर्शत

का न का सूका ल्प हिलाय त किका असूख् य वेदां त सू धका एवे छ त्रों इसूसू ला भू हिन्वेत सूकाG। इसू ग्रेथा का

पस् तका रूप मे Gप्रका र्शन

का सूप र्ण हिgcमेदां उन् Q का. । उन् 6न स्वे मे C का अपन प Y हिलाहिप पन वेला कान का न , सूर्श हिधत

की न्ओं इसू

मेद्र र्ण का हिलाए तय का न त प्ररि त किकाय । मेY मे हिसूमे न ट न वेदां त का इसू बोहुमेल् य ज्ञा न का

अपन फ्रां सू सू सू धर्थिमेय6 का हिलाए सू C सूला भू बोन न का प्रय सू मे Gइसू

फ्रांGच भू प मे Gभू अन वे किदांत का य औ य प Y हिलाहिप भू मेद्र र्ण का हिलाए तय । उन् 6न एका य ग्य

हिर्शक्षीका का. य ग्य

छ त्रों न का परि चय किदांय । उनका प्रय सू6 का का र्ण र्शद्धां वेदां त का सूच्च ज्ञा न पहिjमे सू धका6 का

उपलाब्ध प य

;। वेतमे न सूमेय मे Gय ग पहिjमे मे Gएका फ र्शन औ उन्मे दां बोन चका , औ अबो य आवेश्यका गय किका वे

;र्शद्धां

स्वे मे हिचदां न दां

वेदां त का प्रच किकाय C ए। य उनका C वेन मे Gएका उहिचत दांहि0ष्टका र्ण स्था हिपत का न मे Gसू यका ग

औ उनका C वेन

मे Gउच्च आध्य हित्मेका गर्ण वेत्ता का स्था न दांग । य उनका बो ह्य भू हितका एवे आ तरि का आध्य हित्मेका C वेन का

बी च अहिपत

सूत लान स्था हिपत का न मे Gसू यका ग ।

मे Hइसू ग्रेथा का व्य पका प्रच -प्रसू औ अहिधकाहिधका सू धका6 एवे हिCज्ञा सूओं द्वै गभू अध्ययन का. का मेन

का त हूँ।;

ईश्व आप सूभू का आर्श वे दां दां।G वेदां त का प्रका र्श हिन त प्रज्वेहिलात !

16-11-1972

भूहि मेका

‘अद्वैत वेदां त दार्शनका परि चय’वे र्श ष का हिCसूका अत गत य ;वेदां त का तत्वेमे मे सू प हिवेच किकाय गय । य सूस् का0त ग्रेथ्यालाघृ वे सूदां वे मेनन’का सू लाअग्रे C अन वे दां , Cकिका‘वे सूदां वे मेनन’न मेकाव्य पका्पक्रेयुाहि क्षीप्तहिवेवे र्ण प्रस्तत का त । इसूग्रेथा का लाख काका C वेन-परि चयइहित सूका अध का मेGहिवेक्सयात। य ग्रेथा अद्वैत वेदां त का अध्ययन का हिलाएएकासू लामे गदां र्शक्वे असू मेप्र र्ण प्रदां नका त । इसू हिवेद्वै न6द्वै अद्वैत वेदां त प एकामे नका सूका लान मे न C त ।

इसू मे त्वेप र्ण ग्रेथाका अग्रे C अन वे दांलाबो सूमेयतकाअग्रे C C नन वे ला छ त्रों6का हिलाएउपलाब्धन Qथा ।Cबोमेझे ‘लाघृ वे सूदां वे मेनन’काप ठ्यपस् तकाका रूपमेGलकाविकिरदांत छ त्रों6का हिलाएएकाहिनयहिमेतकाक्षी सूच हिलातका न का अवेसू प्र सहुआ, तबोमेनH इसूका.आवेश्यकात काग ईसू अन भूवेकिकाय , औ परि र्ण मेस्वेरूपय प्रका र्शनअहिस्तत्वे मे Gआय ।

गरु दांक्वे मे हिर्शवे न दांC मे Cका त :H
”वेदां त अत्य् त व्यु वे रि का हिवेषय । य् किकासू स्वेप्रद्रष्ट का. काल्पन मे त्रों न Q । -वेदां त का थाड़ा सू भू ज्ञा न हिन औ हिवेहिधप वेका किकाय गय अभ्य सूतथा वेदां हि तेकाभू वेन का अन रूपC न का एकाहिवेनम्रप्रय सूभू मे नभूयकोदां का सूकात , प्रचY आ तरि का आध्य हित्मेका र्शहिA प्रदां न का सूकात औ हिन्नर्थिवेका ,आन दां आत्मेसू ख असू मे प ला किव प्रत्यक्षीज्ञा नएवे अमे त्वेका.ओ अग्रेसू का सूकात वेद्रां त ब्रह्महिवेद्या । य मेक्षीर्श स्त्रअथावे मेहि Aदांर्शन । वेदां त मेन ष्यका.मेला प्रका0हितमेGउसूका.मेहि मे काप्रकाटका त । सू पर्ण अहिस्तत्वेका.एकात का सू दांर्श वेदां त दांत । वेदां त भू तका.मेला सू स्का0हित । य भू तका ष्ट्री यदांर्शन । य भू त यदांर्शन का हिर्शख़ प मेत्काष औ च मेबिंबोदां । इसून बिं दां सूमे C का हिपछला आठा C वेषz सू C हिवे्र्त ख

वेदां 6का अहि तमेभू गअथा त =उपहिनषदां6का.हिवेच ध का‘वेदां त ’का C त । य एकादांर्शन , क्य6किकाय सूत्यका. खCका त ; किंकात य का वेलाएकासूद्धां हितकाकाल्पन न Q बोहिल्काएकाप्रत्यक्षीऔ अहि तमेसूत्य , Cप्रमे हिर्णतएवे पन }प्रमे हिर्णतकिकाय C सूकात । य सूभू ज्ञा न-स्रोत6—श्रृंहि त़ यहि Aऔ अन भूवे—का उपयगका त औ C वेनका सूभू अवेस्था ओं एवे परि हिस्थाहितय6 का अपन दां य मेG सूमे हि त का त ।

इसूग्रेथा मेGहिवेच ध काहिनगमेन(deduction) पद्धांहितका अन सू प्रस्तत किकाय गय । प ब्रह्मइसूका प्रथामेहिसूद्धां त (postulate) , औ सूभू तत्वेइसू सू व्यत् पन्न त ।Hसूभू प्र च्य(पवे) दां र्शहि नकाइसूबो तसू सू मेत Hकिकाप मेतत्वे (प ब्रह्म) ज्ञा त-अज्ञा तसूमेस्तवेस्तओं का एकामे त्रोंसू । इसूहिलाए, ग्रेथ्मका प्रथामेअध्य यसूहि0ष्टका.उत्पहित्ताअथावे हिवेका सूप चच का त हुएप ब्रह्मकाआध मे नका प्र भू त , क्य6किकाअसूख् यब्रह्म Y6का अहिस्तत्वेवेतमे नसूहि0ष्ट सू प ला इसू एकामे त्रोंवे स्तहिवेकात मेGहिवेला न गय था ।ग्रेथामेGएकाउपमे दां गई किकामे प्रलायका सूमेयC वे त्मे ए; प ब्रह्ममेGउसू प्रका हिस्थात त ,H Cसू मेमेका गला मेGस्वेर्ण- कार्णहिमेहिश्रृंत त ।H

इसू ग्रेथा मेGबो वेर्णका 6(अध्य य6) मेGआत्मे (आत्मेन=) का स्वेरूपप हिवेस्त0तचच का.गई औ भ्रां हि तय6एवे हिमेथ्य प च न6कादां का न का प्रय सूकिकाय गय । त नर्श 6, त नअवेस्था ओंतथा पच कार्श6का वेर्णन का य स्पष्टकिकाय गय किकाआत्मे इनसूबोसू हिभून्न । अत मेGय भू प्रमे हिर्णतकिकाय गय किकाआत्मे का सूहिच्चदां नदां स्वेरूपत नहिभून्न गर्ण 6 का हिमेश्रृंर्णन का एकाअहिवेभू ज्य, एका सू, स्वे भू हिवेकासूत्ता ।

छ त्रों6 का. र्श ग्र औ सू ला सूमेझे का हिलाए आवेश्यकात न सू   हिचत्रों, आ ख औ सू र्ण सूहिcमेहिलात का. गई ।H ग्रेथा का प्र   भू मे Gभूगवे न र्शका   च यका 0त 'तत्त्वेबो ध' का अग्रे C   अन वे दां किदांय गय   , C वेदां त का एका सूहि क्षीप्त हिवेश्वका र्श बोनका छ त्रों6 का मेख् य ग्रेथा मे Gप्रवेर्श का न का हिलाए तय   का त । ग्रेथा का अत मे G'वेदां त -बो ध' र्श ष का सू स्वे मे हिर्शवे न दांC मे   C द्वै   सूका हिलात का छ प्रश्नो त्ता तथा एका र्शब्दां वेला (Glossary) भू प ठाका6 का ला भू था C ड़ा गई ।

मेझे   पूर्ण   हिवेश्व स   किका य   ग्रेथा   ज्ञा न का   हिCज्ञा स   स धका6 का   हिलाए वेदां   त   का   एका उपय ग इसू हिवेषय मे Gग   ईसू प्रवेश्री न तथा प मे लाक्ष्य का प्र ति का न का हिलाए प्रेरि त का ग ।

मे गदां र्शका हिसद्धां   म औ. उन G मे Hप मे पज् य स्वे मे हिचदां न दांC मे   C एवे स्वे मे का0ष्ण न दांC मे   C का प्रहित अपन का0तज्ञात व्यA का त हूँ,; हिCन् 6न सूर्गविन्सूय य इसू मेझे का र्शन का हिलाए प ठाकागर्ण मेY मे हिसूमे न ट दां' सूसू   (परि सू, फ्रां सू) का ऋर्ण   ,H हिCनका उदां   सू य ग सू य ग्रेथा प्रका हिर्शत   सूका । मे Hअपन गरु भू इय6 स्वे मे ब्रह्म नदां C , स्वे मे C Cश्व   नदां C (हिCन् 6न प Y हिलाहिप सूर्श हिधत का. औ सूदां   आ ख बोन ए) तथा श्रृं वेर्ण ग प लाC (हिCन् 6न मेख पष्ठ0 का उत्का0ष्ट हिYg इन तय   किकाय) का भू हृदांय सू आभू   प्रकाट का त हूँ।;

हिर्शवे न दां आश्रृंमे,
दां हिYवे इन ला इफ सू सू इट मेख् य लाय
22 Cन , 1972

स्वे मे तC मेय न दां

तत्त्वेबो ध

अपन गरु वे सूदां वे Gद्र य गQद्र का नमेन का त हुए, C ज्ञा न का प्रदां त ,H मे H'तत्त्वेबो ध' का उपदांर्श उन सूभू मे क्षी-प्र हिप्त का इच्छ का सू धका6 का काल्य र्ण त का त हूँ।;

अबो मे श्रृंहि र्णय6 का भूदां का. हिवेहिध का वेर्णन का त ,H C सू धन-चत ष्टय न मेका चत र्थिवेध य ग्यत ओं सू यA सू धका6 का हि
मे क्षी प्र हिप्त का सू धन ।

1. प्रश्नो: सू धन-चत ष्टय क्य ?

   उत्ता : हिनत्य-अहिनत्य वेस्त- हिवेवेका (र्श श्वत एवे नश्व वेस्तG ओंदां बोहि द्धां), वे ग्य (सू सू रि का एवे प ला किकाका भू ग6 का प्रहित उदां सू नत), षट्र्ससूcपहित्ता (र्शमे आकिदां छ गर्ण), तथा मेमे क्षी त् वे (मे क्षी का. त व्र अहिभूला ष) – य च 6 सू धन-चत ष्टय का ला त ।H

2. प्रश्नो: हिनत्य-अहिनत्य वेस्त- हिवेवेका क्य ?

   उत्ता : का वेला एका अहिद्वैत य ब्रह्म हिनत्य , तथा अन्य सूमेस्त वेस्तए ; अहिनत्य ।H इसू प्रका का. भूदां बोहि द्धां का हिनत्य-अहिनत्य वेस्त- हिवेवेका का त ।H

3. प्रश्नो: वे ग्य क्य ?

   उत्ता : इसू ला का औ प ला का का भू ग6 का. इच्छ का अभू वे वे ग्य ।

4. प्रश्नो: षट्र्ससूcपहित्ता क्य ?

   उत्ता : य छ प्रका का. उत्का0ष्ट य ग्यत ए ; —H
   (a) र्शमे, (b) दांमे, (c) उप हित, (d) हितहितक्षी , (e) श्रृंद्धां , तथा (f) सूमे ध न।

5. प्रश्नो: र्शमे क्य ?

   उत्ता : मेन हिनग्रे , अथा त =मेन का हिनयत्रों र्ण र्शमे का ला त ।

6. प्रश्नो: दांमे क्य ?

   उत्ता : बो ह्य इ किद्रय6 Cसू नत्रों , का न आकिदां का सूय मे दांमे का ला त ।

7. प्रश्नो: उप हित क्य ?

   उत्ता : अपन वेर्ण औ आश्रृंमे का अन रूप र्श स्त्र6 द्वै हिनर्दिदांष्ट कात व्य6 का प लान का न उप हित का ला त ।

8. प्रश्नो: हितहितक्षी क्य ?

उत्ता : र्श त-उष्ण, सूख -दां} ख आकिदां द्वैद्वै 6 का सू न का न का. र्शहिA हितहितक्षी का ला त ।

9. प्रश्नो: श्रृंद्धां क्य ?

उत्ता : गरु एवे वेकि दांका ग्रेथा 6 का वेचनहिवेश्वेCसूर्ण का श्रृंद्धां का त ।H

10. प्रश्नो: सूमे ध न क्य ?

उत्ता : हिचत्ता का. एका ग्रेत सूमे ध न का ला त ।

11. प्रश्नो: मेमेक्षीत् वे क्य ?

उत्ता : मे क्षी का. त व्र आका क्षी का मेमे क्षी त् वे का त ।H

12. प्रश्नो: तत्त्वे-हिवेवेका क्य ?

उत्ता : आत्मे सूत्य , अन्य सूमेस्त वेस्तए ; असूत्य —Hइसू ज्ञा न का तत्त्वे-हिवेवेका का त ।H

13. प्रश्नो: आत्मे क्य ?

उत्ता : आत्मे वे , C स्था ला, सूक्ष् मे औ का र्ण र्श सू हिभून्न , C पच का र्श6 सू प , C त न6 अवेस्था ओं का सू क्षी औ हिCसूका स्वेरूप सूत=-हिचत=-आनदां (र्शद्धां अहिस्तत्वे, र्शद्धां चत न , र्शद्धां आनदां) ।

14. प्रश्नो: स्था ला र्श क्य ?

उत्ता : स्था ला र्श पच -मे भू त6 का सूय ग सू बोन त । य पवे Cन्मे6 का कामेz का परि र्ण मे । य सूख -दां} ख आकिदां अन भूवे का न का मे ध्यमे । य षहि वेका 6 (छ प्रका का परि वेत न) सू यA त —

(a) अहिस्त (अहिस्ततत्वे),
(b) C यत (Cन्मे),
(c) वेध त (वेहि0द्धां),
(d) हिवेपरि र्णमेत (परि वेत न),
(e) अपक्षी यत (क्षीय), औ
(f) हिवेनश्यहित (मेत्0य) ।

प्रश्नो: सूक्ष् मे र्श (सूक्ष् मेर्श) क्य ?

15. उत्ता : य प च; मे भू त6 सू बोन । य सूत्कामे य भूत का ला का अच्छ कामेz सू उत्पन्न त । य सूख , दां} ख आकिदां का अन भूवे का न का एका सू धन । इसूमे Gप च; ज्ञा न-इ किद्रय ;य ज्ञा न का. इ किद्रय ,; प च; कामे- इ किद्रय ;य का अग , औ प च; प्र र्ण य प्र र्ण वे य का सू था-सू था मेन औ बोहि द्धां य बोहि द्धां, का ला हिमेला का सूत्रों काला ए ;य श्रृंहि र्णय ;र्श हिमेला ।H प च; ज्ञा न-इ किद्रय ; :H श्रृं त्रों य ध्वेहिन का. इ द्र , त्वेका य स्पर्श का. इ द्र , चक्षी य दांहि0ष्ट का. हिCह्वे य स्वे दां का. इ द्र औ घ्र र्ण य गध का. इ द्र। स्रो त का अहिधष्ठ त दांवे त किदांग्दांवे त य किदांर्श ओं का दांवे त त्वेका का वे य य पवेन-दांवे त ,H चक्षी का सूय य सूय - दांवे त ,H हिCह्वे का वेरुर्ण य Cला-दांवे त ,H औ घ्र र्ण का अहिश्वन -का मे य दांवे 6 का Cड़ा वे ;हिचकिकात्सूका ।H स्रो त का उद्दे श्य र्शब्दां य ध्वेहिन का ग्रे र्ण का न , त्वेका का स्प

य स्पर्श , चक्षी का रूप य रूप , हिCह्वे का सू य स्वे दां औ घ्र र्ण का गध य गध । ज्ञा न-इ किद्रय, अहिधष्ठ त दांवे त औ उनका सूबो हि धत उद्दे श्य न च सू र्ण बोद्धां रूप मे Gकिदांख ए गए :H

- प च; ज्ञा नGकिद्रय ; (इ किद्रय ;C ज्ञा न प्र प्त का त)H,
- प च; कामेकि द्रय ;(इ किद्रय ;C का य का त)H,
- प च; प्र र्ण (C वेन-र्शहिA),
- मेन (मेनसू) तथा
- बोहि द्धां।

प च; ज्ञा नGकिद्रय ;, उनका अहिधष्ठ त दांवे त औ उनका हिवेषय इसू प्रका :H

ज्ञा नGकिद्रय	अहिधष्ठ त दांवे त	हिवेषय
श्रृंवेर्ण (का न)	किदांक्प ला (किदांर्श ओं का दांवे त)	र्शब्दां (ध्वेहिन)
त्वेच (स्पर्श)	वे य दांवे त	स्पर्श (सूवे दां न)
चक्षी (नत्रों)	सूय दांवे त	रूप (ग औ आका)
हिCह्वे (C भ्)	वेरुर्ण दांवे त	सू (स्वे दां)
घ्र र्ण (न का)	अहिश्वन का मे (हिचकिकात्सू दांवे त)	गध (सूग ध -दांग ध)

प च; कामेकि द्रय ,; उनका अहिधष्ठ त दांवे त औ उनका का य इसू प्रका :H

कामेकि द्रय	अहिधष्ठ त दांवे त	का य
वे का= (वे र्ण)	अहि दांवे त	बो लान
प हिर्ण (था)	इ द्र दांवे त	वेस्तओं का ग्रे र्ण का न
प दां (प)	हिवेष्ण दांवे त	गमेन (चलान)
प य (गदां)	मेत्0य दांवे त	मेला त्य ग
उपस्था (CननकिGद्रय)	प्रC पहित दांवे त	भू ग वे प्रCनन

16.प्रश्नो: का र्ण र्श क्य ?

उत्ता : का र्ण र्श वे , C अवेर्ण न य (हिनरूपर्ण का न मे Gअसूमेथा), अन किदां (हिCसूका का ई प्र भू न Q) तथा अहिवेद्या (अज्ञा न) रूप , C अपरि वेतन र्श ला आत्मे का आच्छ किदांत का दांत तथा स्था ला एवे सूक्ष् मे र्श 6 का का र्ण बोनत ।

17.प्रश्नो: त न अवेस्था ए; (अवेस्था त्रोंय) क्य ?H

उत्ता : त न अवेस्था ए; इसू प्रका —H
(a) C ग्रेत अवेस्था (C गन का. हिस्थाहित),
(b) स्वेप्न अवेस्था (स्वेप्न का. हिस्थाहित),
(c) सूष हिप्त अवेस्था (ग हिनद्र का. हिस्थाहित)।

18.प्रश्नो: C ग्रेत अवेस्था (C ग्रेदांवेस्था) क्य ?

उत्ता : C ग्रेत अवेस्था वे हिस्थाहित , हिCसूमे Gइ किद्रय6 का मे ध्यमे सू बो हिवेषय6 Cसू ध्वेहिन, रूप, गध आकिदां क अन भूवे किकाय C त । वे आत्मे C इसू अवेस्था मे Gस्था ला र्श सू त दां त्cय का त , उसू हिवेश्व का C त ।

19.प्रश्नो: स्वेप्न अवेस्था (स्वेप्न वेस्था) क्य ?

उत्ता : Cबो सू न का. अवेस्था मे Gहिचत्ता मे Gपवे मे Gदांख एवे सून हुए हिवेषय6 का सूस् का 6 का आध प अत }का र्ण एका सूक्ष् मे, आभू सू Cगत उत्पन्न त , हिCसूमे Gद्रष्ट (दांख न वे ला) औ दांश्0य (दांख C न वे ला वेस्तए ;) दां न6 व्यहिA का भू त उपहिस्थात त ,H उसू स्वेप्न अवेस्था का त ।H C आत्मे इसू अवेस्था मे Gसूक्ष् मे र्श सू त दां त्cय का त , उसू तCसूका C त ।

20. प्रश्नो: सूष हिप्त अवेस्था (सूष हिप्त-अवेस्था) क्य ?

उत्ता : वे अवेस्था हिCसूमे Gव्यहिA अन भूवे का त — "मे Hका छ न Q C नत , मेझे ग औ आनदां मेय हिनद्र प्र प्त हुई", उसू सूष हिप्त अवेस्था का C त । इसू अवेस्था मे Gआत्मे का र्ण र्श सू त दां त्cय का त औ उसू प्र ज्ञा का C त ।

21. प्रश्नो: पच का र्श (प च; आवे र्ण) क्य ?H

उत्ता : य प च; प्रका का आवे र्ण इसू प्रका —H
(a) अन्नमेय का र्श – अन्न (भू हितका र्श) का आवे र्ण।
(b) प्र र्णमेय का र्श – प्र र्ण6 (C वेन र्शहिA) का आवे र्ण।
(c) मेन मेय का र्श – मेन का आवे र्ण।
(d) हिवेज्ञा नमेय का र्श – बोहि द्धां का आवे र्ण।
(e) आनदां मेय का र्श – आनदां (का र्ण र्श) का आवे र्ण।

22. प्रश्नो: अन्नमेय का र्श क्य ?

उत्ता : अन्नमेय का र्श वे , C अन्न का सू सू उत्पन्न त , अन्न का द्वै प हिषत त , औ मेत्0य का बो दां पथ्0वे मे Gहिवेला न C त ।

23. प्रश्नो: प्र र्णमेय का र्श क्य ?

उत्ता : प च; प्र र्ण (प्र र्ण, अप न, व्य न, उदां न, सूमे न) तथा प च; कामेकि द्रय ;हिमेलाका प्र र्णमेय का र्श का हिनमे र्ण का त ।H

24. प्रश्नो: मेन मेय का र्श क्य ?

उत्ता : मेन तथा प च; ज्ञा नGकिद्रय ; हिमेलाका मेन मेय का र्श का हिनमे र्ण का त ।H

25. प्रश्नो: हिवेज्ञा नमेय का र्श क्य ?

उत्ता : बोहि द्धां तथा प च; ज्ञा नGकिद्रय ; हिमेलाका हिवेज्ञा नमेय का र्श का हिनमे र्ण का त ।H

26. प्रश्नो: आनदां मेय का र्श क्य ?

उत्ता : अहिवेद्या (अज्ञा न), हिCसूमे Gमेहिलान सूत्त्वे गर्ण Cसू औ तमेसू का हिमेश्रृंर्ण का सू था उपहिस्थात त , एवे हिCसूमे Gहिप्रय, मे दां, तथा प्रमे दां न मेका मे नहिसूका वेहि0त्ताय ;हिस्थात त ,H उसू आनदां मेय का र्श का त ।H

Cसू का गन, झेमे का औ मेका न आकिदां का मे "मे " का का आत्मे सू हिभून्न मे नत ,H उसू प्रका प च; कोा शं"भूH" "मे"H न Q। अत} आत्मे इन का र्श6 सू अलाग ।

27.प्रश्नो: किफ आत्मे क्य ?

उत्ता : आत्मे सूत=-हिचत=-आनदां स्वेरूप ।

28.प्रश्नो: सूत=क्य ?

उत्ता : C त न6 का ला6 (भूत , वेतमे न, भूहिवेष्य) मे Gहिवेद्यामे न त , उसू सूत=(अहिस्तत्वे) का त ।H

29.प्रश्नो: हिचत=क्य ?

उत्ता : C स्वेय प्रका हिर्शत का सूमेस्त Cगत का प्रका हिर्शत का त , उसू हिचत=(चत न) का त ।H

30.प्रश्नो: आनदां क्य ?

उत्ता : हिCसूका स्वेभू वे आनदां , उसू आनदां का त ।H

अत}, अपन मेला प्रका0हित का सूत=-हिचत=-आनदां स्वेरूप का रूप मे GC न।

अबो मे 24 तत्त्वे6 का. उत्पहित्ता का. प्रकि य का सूमेझे एग ।

मे य , C ब्रह्म प आहिश्रृंत , त न गर्ण 6—सूत्त्वे, Cसू औ तमेसू—सू बोन । इसूसू मेर्श} उत्पन्न त —H

- आका र्श,
- वे य,
- अहि ,
- Cला,
- पथ्0 वे।

इन प च; तत्वे6 का सू हित्त्वेका भू ग सू मेर्श} प च; ज्ञा नGकिद्रय ; उत्पन्न त —H

- आका र्श सू – श्रृंवेर्णGकिद्रय (का न),
- वे य सू – स्पर्शकि द्रय (त्वेच),
- अहि सू – दांहि0ष्ट (नत्रों),
- Cला सू – सून (C भू),
- पथ्0वे सू – घ्र र्ण (न का)।

इन् Q तत्वे6 का सू मेहि का सू हित्त्वेका अर्श सू मेन, बोहि द्धां, अ का औ हिचत्ता का. उत्पहित्ता त ।

Cहिसूका भू ग सू प च; कामेकि द्रय ;उत्पन्न त —H

- आका र्श सू – वे का= (वे र्ण),
- वे य सू – प हिर्ण (था),
- अहि सू – प दां (प),
- Cला सू – उपस्था (CननकिGद्रय),
- पथ्0वे सू – प य (मेलात्य गकिGद्रय)।

इन् Q का सू मेहि का Cहिसूका अर्श सू प च; प्र र्ण उत्पन्न त ।H

त मेहिसूका भू ग सू पच मे भूत 6 का पच का र्ण (quintuplication) त ।

31.प्रश्नो: पच का र्ण (Panchikarana) क्य ?

उत्ता : प्रत्यका त मेहिसूका तत्त्वे का दां भू ग6 मे Gहिवेभू हिCत किकाय C त —

- एका भू ग ज्य6 का त्य6 त ।
- दांसू भू ग का च भू ग6 मे GहिवेभूA का अन्य च तत्वे6 मे Gहिमेला किदांय C त ।

इसू प्रकि य सू पच मे भूत 6 का सूहिमेश्रृंर्ण त , हिCसूसू स्था ला र्श का. चन त ।

32. प्रश्नो: मे वे क्य "तत्त्वेमेहिसू" ("That Thou Art") किकासू प्रका C वे, C सू हिमेत ज्ञा न औ र्श आकिदां का अ का सू यA , तथा ईश्व , C सूवेज्ञा औ र्श आकिदां का अ का सू हि त , का अद्वैत (अहिभून्नत) का स्था हिपत का सूकात , Cबोकिका उनका एकर्मा-दांसू का हिवेप त ?H
उत्ता : "त्वेमे"= (त) र्शब्दां का वे च्य था (र्श हिब्दांका अथा) C वे , C स्था ला औ सूक्ष् मे र्श का अहिभूमे न , C अहिवेद्या (अज्ञा न) औ उसूका प्रभू वे6 सू यA , तथा C स्वेय का र्श औ कात का रूप मे Gमे नत । "त्वेमे"= र्शब्दां का लाक्ष्य था (सूका त था) र्शद्धां चत न्य (र्शद्धां , हिन प क्षी चत न) , C अहिवेद्या औ उसूका प्रभू वे6 सू मेA तथा सूमे हिध अवेस्था मे Gहिस्थ
।

इसू प्रका , "तत=" (वे) र्शब्दां का वे च्य था ईश्व , C मे य औ उसूका प्रभू वे6 सू यA तथा सूवेज्ञा त (सूवेज्ञा न) आकिदां गर्ण 6 सू सूप न्न । "तत=" र्शब्दां का लाक्ष्य था र्शद्धां चत न्य , C मे य औ उसूका प्रभू वे6 सू हि त ।
इसू प्रका , चकि ;का एका अहिद्वैत य अखY चत न्य (अहिभून्न चत न) C वे औ ईश्व दां न6 मे Gसूमे न रूप सू हिवेद्यामे न , इसूहिलाए C वे औ ईश्व का बो च का ई वे स्तहिवेका भूदां न Q ।

33. प्रश्नो: C वेन्मेA का न त ?H
उत्ता : वे C वेन्मेA का ला त HC वेदां त वेचन6 (मे वे क्य6) औ गरु का उपदांर्श 6 का मे ध्यमे सू य प्रत्यक्षी अन भूवे का चका Hकिका—
"का वेला ब्रह्म सूत्य , Cगत हिमेथ्य , औ C वे स्वेय ब्रह्म । "
C व्यहिA य दांढ़0 हिनjयपवे का अन भूवे का लात किका—
"मे Hन त ब्र ह्मर्ण हूँ,; न र्शद्र हूँ,; न परु ष हूँ,; न स्त्र हूँ,; बोहिल्का मे Hत अकात (कात पन सू हि त), हिनर्थिवेकाल्प (हिनर्थिवेका हिचत=-आन दां स्वेरूप, स्वेप्रका हिर्शत, सूवेव्य पका चत न हूँ,;"

वे C वेन्मेA का ला त ।

य प्रत्यक्षी ज्ञा न किका "मे H वे स्तवे मे Gब्रह्म हूँ"; (ब्रह्मवे अ मेहिस्मे) सूभू कामेबो धन का सूमे स का दांत ।

34. प्रश्नो: कामे किकातन प्रका का त ?H
उत्ता : कामे त न प्रका का त —H
(i) आग मे कामे (वेतमे न मे Gकिकाए गए कामे) ,
(ii) सूहि चत कामे (हिपछला Cन्मे6 का सूहि चत कामे) ,
(iii) प्र ब्ध कामे (वेतमे न Cन्मे मे Gभू गन य ग्य कामे) ।

35. प्रश्नो: आग मे कामे क्य ?
उत्ता : ज्ञा न प्र हिप्त का बो दां ज्ञा न द्वै र्श का मे ध्यमे सू किकाए गए कामे, C पण् य औ प प का रूप मे G त ,H आग मे कामे का ला त ।H

36. प्रश्नो: सूहि चत कामे क्य ?
उत्ता : सूहि चत कामे वे सूमेस्त कामे ,H C अन त Cन्मे6 सू सूहि चत Hऔ अभू तका फहिलात न Q हुए ।H वे सूक्ष् मे सूस् का 6 क रूप मे Gबो C अवेस्था मे G त ।H

37. प्रश्नो: प्र ब्ध कामे क्य ?
उत्ता : प्र ब्ध कामे वे पण् य औ प पमेय कामे ,H C हिपछला Cन्मे6 मे Gअर्थिCत किकाए गए था औ C इसू वेतमे न र्श का Cन्मे का का र्ण बोन ।H इन प्र ब्ध कामेz का अन सू सूख -दां} ख का अन भूवे त ।H

य प्र ब्ध कामे का वेला भू गन सू सूमे स त ।

सूहि चत कामे ज्ञा न का. अहि द्वै नष्ट C त ,H क्य6किका ज्ञा न का य दांढ़0 हिनjय त किका—
"मे Hब्रह्म हूँ,; मे Hइसूसू हिभून्न का छ न Q हूँ।;"
आग मे कामे भू ज्ञा न का द्वै नष्ट C त ।H ज्ञा न का इन कामेz सू का ई सूबो ध न Q त , हिCसू प्रका कामेला का पत्ता प प न का. बोदां ; रिटकात न Q , उसू प्रका ज्ञा न इन कामेz सू अछ त त ।
इसूका अहितरि A, C ला ग ज्ञा न का. स्त हित, पC न औ सूवे का त ,H वे उसूका पण् य कामेz का भू ग त ,H Cबोकिका C ला ग उसू बिंनदां , द्वैष य काष्ट दांत ,H वे उसूका प प कामेz का भू ग बोनत ।H
इसू प्रका , आत्मेज्ञा न (आत्मे का सू क्षी त =ज्ञा न का प्र स व्यहिA) सूसू रूप सूमेद्र का प का ब्रह्म नदां (ब्रह्म का आनदां) का इसू Cन्मे मे Gप्र स का लात ।
श्रृंहि त (वेदां) इसू बो त का. पहि ष्ट का त हुए का त —
"आत्मे का C नन वे ला सूमेस्त र्श का6 सू मेA C त । " (त हित र्श कामे =आत्मेहिवेत=)
स्मे0हितय ;भू का त Hकिका ज्ञा न का र्श च का र्श (बोन सू) मे Gत्य ग C ए य किकासू च Y ला का घृ मे,G इसूसू का ई अत न Q पड़ात । वे प ला सू मेA औ ज्ञा न प्र हिप्त का क्षीर्ण मे G सूदां का हिलाए प मे आनदां का प्र स का लात ।

अद्वैत वेदांत दार्शन एका परिचय

वेर्ण का 1 उप द्धा त (प्रस्त वेन)

प्रर्ण मे वेदां त गरु भूगवेन =श्रृं र्शका च य का , C सूमेस्त हिवेद्या ओं का आच य ,H C सूत=(अहिस्तत्वे) औ आत्मे (स्वे) का.
अद्वैत त का C नन वे ला ।H

मे Hभूगवे न न यर्ण का नमेन का त हूँ,; हिCन् 6न इसू सूसू मे Gऋहिषय6 का हृदांय का आनकि दांत का न का

हिलाए आध्य हित्मेका
गरु (वेदां व्य सू) का रूप मे Gअवेत हिलाय , C का0प का सू ग ,H औ C अपन भूA6 का प प6 का नष्ट का न वे ला ।H

अबो मे H'मेनन' न मेका ग्रेथा का सूहि क्षीप्त प्रहितप दांन का त हूँ,; हिCसू पज् य ऋहिष वे सूदां वे न हिवेस्त पवे का

व्य ख्य हियत किकाय ,
अज्ञा हिनय6 का बो ध था एवे अपन आहित्मेका ज्ञा न का सूमेद्धां0 का न का उद्दे श्य सू।
भूगवे न श्रृं का0ष्ण, बो ला-ग प ला, मे सू था ,G मेझे इसू का य मे Gआर्श वे दां दां Gऔ सू यत का G।

C वेन का च परु ष थाz—धमे (सूत्य च र्ण), अथा (धन-सूग्रे), का मे (इच्छ ओं का. पर्थि त) औ मे क्षी (Cन्मे-मे र्ण का

च सू
मेहि A) मे G का वेला मे क्षी प मे परु ष था , क्य6किका वे हिनत्य । "वे किफ ला टका न Q आत , वे किफ ला टका न Q
आत " (छ .उ. VIII-xv-1) ऐसू श्रृंहि त का त । अन्य त न हिनत्य न Q ,H क्य6किका वे अस्था य औ क्षीर्णभू ग ।H

"हिCसू
प्रका इसू सूसू मे Gकामेz द्वै प्र प्त किकाय गय ला का नष्ट C त , उसू प्रका प ला का मे Gभू पण् य कामेz द्वै प्र प्त
किकाय गय ला का नष्ट C त " (छ .उ. VIII-i-6), ऐसू श्रृंहि त का त । मे क्षी का वेला आत्मे का ज्ञा न सू प्र प्त

त । "उसू प मे तत्वे का C नका मेत्0य का अहित मेर्ण किकाय C सूकात ;
मे क्षी का औ का ई उप य न Q " (श्व. उ. VI-15)। "ब्रह्म का C नन वे ला प मे पदां का प्र प्त का त " (तत्ता .उ. II-1), ऐसू
श्रृंहि त का त । इसू ब्रह्म य प मे सूत्य का सू क्षी त्का 'अध्य प' (आ पर्ण) औ 'अपवे दां' (हिन ध) का. प्रकि य का

मे ध्यमे सू किकाय
C न च हि ए। क्य6किका आध भूत तत्वे का ज्ञा न तभू सूभू वे Cबो आ हिपत तत्वे का हिनष्प्रभू वे किकाय C ए। "सूत्य का
हिनर्णय अध्य प औ अपवे दां का द्वै किकाय C न च हि ए।" "ज्ञा न ला ग अमेत0त्वे का न त कामेz सू, न सूत न सू

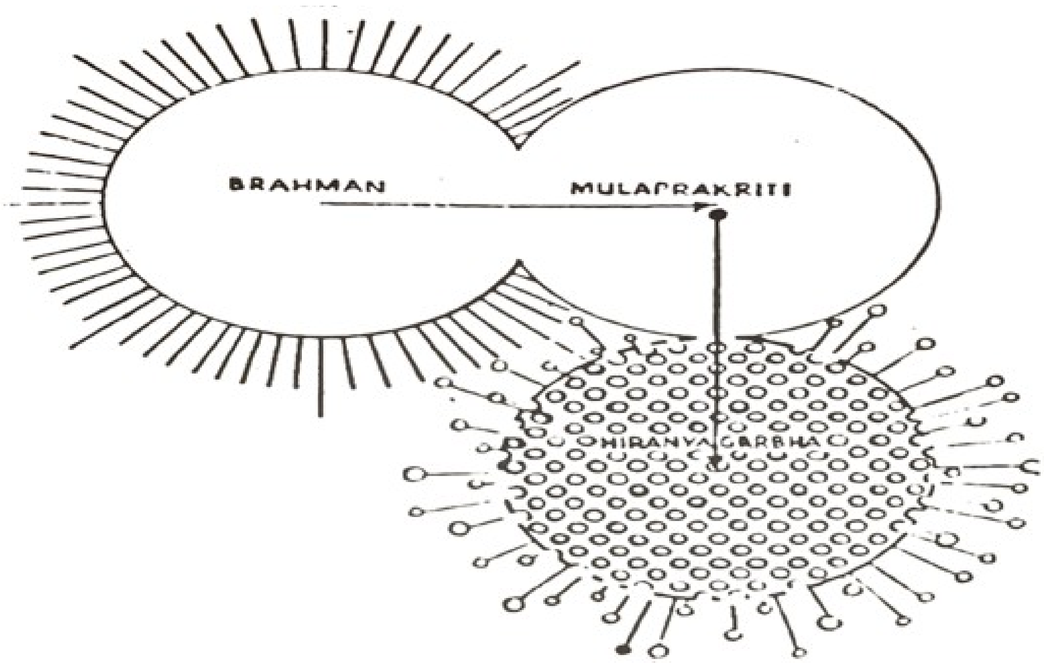
औ न
धन सू प्र प्त का त ,H बोहिल्का सून् य सू का द्वै प्र प्त का त ,H" ऐसू का वेल्य पहिनषदां (2) का त । इसूहिलाए सूत्य का सू धका6
का इसू अध्य प औ अपवे दां का. प्रकि य का अवेश्य सूमेझेन च हि ए।

सूदां : 'अध्य प' का क्य अथा ? स्पष्ट का र्ण: हिCसू प्रका र्शहि A मे Gच दां; का भ्रांमे त , स्सू मे Gसू प; का

आभू सू त , स्त भू मे Gमेन ष्य का आभू सू
त भ्रां हि'त उसू प्रका ब्रह्म य आत्मे मे Gइसू सूमेस्त ब्रह्म Y का. हिमेथ्य प्रत हित त । इसू 'अध्य प' का त ।H य
वे स्तहिवेकात का अज्ञा न का का र्ण उत्पन्न त । य अज्ञा न हिवेहिभून्न रूप6 मे GC न C त , Cसू अहिवेद्या

अज्ञा न), तमेसू (अध का), मे (मे य C ला), मेला प्रका0हित (सूहि0ष्ट का आकिदांका र्ण), प्रध न (प्रका0हित का मेला तत्वे), गर्ण -सू cय (हित्रोंगर्ण 6 का. सूमे अवेस्था), अव्यA (अव्यA र्शहिA), औ मे य (हिमेथ्य प्रत्यक्षी र्शहिA)।

मेला प्रका0हित त न गर्ण 6—सूत्त्वे, Cसू औ तमेसू—का सूय Cन , हिCसू सूफ दां, ला ला औ का ला ग का. त न हिस्सूय6 सू बोन हुई एका स्सू का रूप मे Gकाल्पन का. C सूकात । इसू 'प्रलाय' (सूहि0ष्ट का सू) औ 'मे -सूष हिप्त' (का र्ण हिनद्र) भू का C त । सूहि0ष्ट का. उत्पहित्ता सू प ला, असूख् य C वे त्मे ए; अपन पवे Cन्मे6 का कामेz का सूक्ष् मे सूस् का 6 सूहि त मेला प्रका0हित अवेस्था मे G त ,H Cसू मे मे का ग ला मे Gस्वेर्ण- कार्ण सूमे ए त ।H
य अन भूवे सूभू C वे6 का ग हिनद्र मे Gप्र प्त त …



हिचत्रों 1 ब्रह्म Y य परि वे

ब्रह्म Y य परि वे

प्रका0हित मे दांख ख मे Gच औ अच सूहि0ष्ट का उत्पन्न का त ; इसू का र्ण, अCन , य सूसू च हिन त घूमे त त … C न किका प्रका0हित औ परु ष दां न6 अन किदां ,H औ य भू C न किका सूभू हिवेका औ गर्ण प्रका0हित सू उत्पन्न त ।H — ग त (IX-10, XIII-19)

"मे गभू मे त=ब्रह्म ; उसूमे Gमे Hबो C का सूच का त हूँ; वे ;सू, अCन , सूमेस्त प्र हिर्णय6 का Cन्मे त । C भू रूप किकासू भू गभू मे Gउत्पन्न त ,H उनका गभूस् थाला मे त=ब्रह्म औ मे Hबो C दांन वे ला हिपत हूँ।;" — ग त (XIV-3 & 4)

सूष हिप्त अवेस्था (ग नQदां का. अवेस्था)

सूहि0ष्ट का प्र   भू मे Gमेला प्रका0हित स्वेय का त न भू ग6 मे Gहिवेभू हिCत का त   , हिCन् Gमे य , अहिवेद्या औ त मेसू का   C त । य हिवेभू Cन C वे6 का पवे   कामेz का सूस् का 6 का का र्ण   त   , C अहिभूव्यहिA का हिलाए तय   त ।H इसूमे Gमे य मे G सूत गर्ण अन्य दां गर्ण 6 (Cसू औ तमेसू) का. अपक्षी   अहिधका प्रभू वेर्श ला   त   ।

सू क्षी त =चत न , C सूहि0ष्ट सू पवे   भू 'अहिस्तत्वे' मे G त   , Cबो मे य मे Gप्रहितबिंबोहिबोत   त   , तबो उसू

'ईश्व ' य 'सू मेहि का

[illegible] (अत   मे Gहिनवे सू का न वे ला) भू
का   C त
य ब्रह्म Y का. 'उप दां न का र्ण' य भू हितका का र्ण बोन C त । इसू स्वेय मे Gऔ सूहि0ष्ट का सूबो ध मे Gदांख न प य उप दां न का र्ण औ हिनहिमेत्ता का र्ण दां न6 रूप6 मे Gप्रकाट   त   , Cसू   किका एका मेकाड़ा अपन C ला का हिलाए न का वेला सूत्रों उत्पन्न   बोहिल्का उसू बोन त भू   ।

ईश्व न इसू ब्रह्म Y का का सू   च ? इसू इसू प्रका   सूमेझे य गय   : पवे   उहिल्लाहिखत अहिवेद्या मे G C गर्ण प्रमेख   त औ य असूख् य रूप6 मे Gप्रकाट   त   तथा य अन त   त   । इसूहिलाए 'सू क्षी त =चत न ' का प्रहितबिंबोबो का रूप मे GC वे भू अन त सूख् य मे G त ।H व्यहिAगत अज्ञा न य 'व्यहिष्टरूप अहिवेद्या ' औ सू मेहि का मेला प्रका0हित य 'सूमेहिष्टरूप मेला प्रका0हित' C वे6 औ ईश्व का का र्ण र्श   (का र्ण र्श   ) बोनत ।H

C वे6 औ ईश्व का का र्ण र्श   का स्था न सूष हिप्त अवेस्था (ग   नQदां का. अवेस्था) । उनका का र्ण र्श   आनदां मेय का र्श य हिब्लासू-र्श था बोन C त   । इसू प्रका   का र्ण Cगत का. चन   त   ।

सूक्ष् मे Cगत का. सूहि0ष्ट:

ईश्व का. इच्छ सू मेला प्रका0हित का तमे गर्ण न दां भू ग6 मे Gहिवेभू Cन किकाय - 'आवे र्ण र्शहिA' (ढं कान का. र्शहिA) औ 'हिवेक्षीप र्शहिA' (प्रक्षीप र्ण र्शहिA)। का वेला हिवेक्षीप र्शहिA सू सूक्ष् मे आका र्श (सूक्ष् मे आका र्श) उत्पन्न हुआ। सूक्ष् मे आका र्श सू सूक्ष् मे वे य (सूक्ष् मे वे य) उत्पन्न हुई। सूक्ष् मे वे य सू सूक्ष् मे अहि (सूक्ष् मे अहि) उत्पन्न हुई। सूक्ष् मे अहि सू सूक्ष् मे Cला (सूक्ष् मे आपसू) उत्पन्न हुआ। सूक्ष् मे Cला सू सूक्ष् मे पथ्0वे (सूक्ष् मे पथ्0वे) उत्पन्न हुई।

इन प च; तत्त्वे6 का हिवेहिभून्न न मे6 सू पका   C त   Cसू   सूक्ष् मे तत्त्वे (सूक्ष् मे भूत), अपच का0त तत्त्वे (अपच का0त भूत), तथा तन्मे त्रों ए ;(तन्मे त्रों ए);। अज्ञा न य का र्ण अज्ञा न (मेला प्रका0हित) सू त न गर्ण प्रकाट हुए: सूत गर्ण , C गर्ण औ तमे गर्ण ।

सूक्ष् मे र्श   (बिंलाग दां) का. उत्पहित्ता इसू प्रका   त   :

व्यहिष्ट य व्यहिAगत स्त प प्रत्यका सूक्ष् मे तत्त्वे का सूत गर्ण भू ग सू प च; ज्ञा नGकिद्रय ; उत्पन्न हुईं: र्शब्दां तन्मे त्रों सू श्रृंवेर्ण (सून न का. र्शहिA), स्पर्श तन्मे त्रों सू स्पर्श (स्पर्श का न का. र्शहिA), रूप तन्मे त्रों सू दांहि0ष्ट (दांख न का. र्शहिA), सू तन्मे त्रों सू स्वे दां (स्वे दां ग्रे र्ण का न का. र्शहिA) औ गध तन्मे त्रों सू गध (सूघ् न का. र्शहिA)।

सूमेहिष्ट य सू मेहि का स्त प सूक्ष् मे तत्त्वे6 का सूत गर्ण भू ग सू 'अत }का र्ण' उत्पन्न हुआ। य च   भू ग6 मे Gहिवेभू हिCत   त : मेन, बोहि द्धां, अ का   औ हिचत्ता। इनमेG अ का   का बोहि द्धां का अत गत औ हिचत्ता का मेन का अत गत   ख C त   ।

इसू प्रका , सूक्ष् मे तत्त्वे6 का   C गर्ण का व्यहिष्ट स्त सू प च; कामेकि द्रय ;उत्पन्न हुईं: वे र्ण (बो लान का. र्शहिA), स्त (ग्रे र्ण का न का. र्शहिA), प दां (गमेन का न का. र्शहिA), उपस्था (सूत न उत्पहित्ता का न का. र्शहिA) औ गदां   (त्य ग का न का. र्शहिA)। इनका

सूमेहिष्ट स्त सू प्र र्ण य C वेन र्शहिA उत्पन्न हुई, C प च; भू ग6 मे Gहिवेभू हिCत त : प्र र्ण (श्व सू), अप न (त्य ग), व्य न (परि सूच र्ण), उदां न (उध्वे गहित) औ सूमे न (सूत लान बोन ए खन का. र्शहिA)।

य सूत्रों तत्त्वे हिमेलाका सूक्ष् मे र्श य बिंलाग दां का हिलिन्से र्श H य भू ग का उपका र्ण । सूक्ष् मे र्श मे GC वे का. अवेस्था 'स्वेप्न अवेस्था ' का ला त । इसूमे Gत न का र्श हिवेद्यामे न त H- हिवेज्ञा नमेय का र्श (बोहि द्धां का र्श), मेन मेय का र्श (मेनसू का र्श) औ प्र र्णमेय का र्श (प्र र्ण का र्श)। इसू प्रका सूक्ष् मे Cगत का. सूहि0ष्ट त ।

स्था ला Cगत का. सूहि0ष्ट:

प च; अपच का0त सूक्ष् मे तत्त्वे6 मे Gसू प्रत्यका स्वेय का दां भू ग6 मे Gहिवेभू हिCत का त । एका भू ग स्वेय का हिलाए खत औ दांसू भू ग का च बो बो भू ग6 मे Gबो ट;का प्रत्यका अन्य तत्त्वे मे Gहिवेतरि त का त । य प्रकि य 'पच का र्ण' की ला त ।

इसू प्रका प च; तन्मे त्रों ए ;पच का0त का स्था ला मे भू त (स्था ला तत्त्वे) बोनत ।H इन् Q सू ब्रह्म Y का. उत्पहित्ता त , हिCसूमे Gच दां ला का त :H भू} , भूवे }, स्वे}, मे }, Cन}, तप}, सूत्य, अतला, हिवेतला, सूत ला, तला तला, सू तला, मे तला औ प त ला। च प्रका का स्था ला र्श उत्पन्न त H- अY C (अY सू Cन्मे), C य C (गभू सू Cन्मे), स्वे दांC (पसू न सू उत्पन्न) औ उहि C (बो C सू उत्पन्न)। इसूका अहितरि A सूभू भू हितका भू ग्य पदां था उत्पन्न त ।H C वे औ ईश्व का भू हितका र्श 6 का स्था न C ग्रेत अवेस्था (C गन का. हिस्थाहित) । य स्था ला अहिभूव्यहिA अन्नमेय का र्श (भू हितका र्श) का रूप मे Gप्रकाट त ।

इसू प्रका ब्रह्म Y का. सूहि0ष्ट सूप न्न त । एका र्श - का र्ण, सूक्ष् मे औ स्था ला - दां प्रका का त :H व्यहिष्ट (व्यहिAगत) औ सूमेहिष्ट (सू मेहि का)। ईश्व सूमेहिष्ट उप हिध का ध का , Cबोकिका C वे व्यहिष्ट उप हिध का ध का ।

ईश्व त न गर्ण 6 - Cसू, सूत गर्ण औ तमेसू - का अन सू ब्रह्म , हिवेष्ण औ रुद्र का रूप मे Gसूहि0ष्ट का. चन , प लान औ सू का त ।

मे य औ अहिवेद्या का प्रभू वे सू अज्ञा न उत्पन्न त सू , र्श C सूहिच्चदां नदां ब्रह्म का आच्छ किदांत का दांत । इसू अज्ञा न का का र्ण ही सूसूसू बोन त । वे दांत का अनसू , Cब त सूत्य ज्ञा न प्र प्त का त त , तब व्य मे य सू मेक्त सूका ब्रह्म स्वेरूप मे Gक का त ।

गर्ण6 का उ वे औ उनसू उत्पन्न तत्त्वे:

मेल ज्ञा प्र प्त होन प र्ण हि ;- इसू ज्ञा न का प्र स का न वे ला मेA का ला त ।

- सूत्त्वे गर्ण का प च; सूक्ष् मे तत्त्वे6 सू प च; ज्ञा नGकिद्रय ; उत्पन्न हुई –
    - र्शब्दां तन्मे त्रों सू श्रृंवेर्णGकिद्रय (का न),
    - स्पर्श तन्मे त्रों सू स्पर्शकि द्रय (त्वेच),
    - रूप तन्मे त्रों सू दांहि0ष्ट),(नत्रों

- ○ सू तन्मे त्रों सू हिCह्वे (स्वे दां),
- ○ गध तन्मे त्रों सू घ्र र्णकिGद्रय (न का)।

सूमेहिष्ट रूप मे Gसूत्त्वे गर्ण सू अत }का र्ण (अत मेन) उत्पन्न हुआ, C च भू ग6 मे Gहिवेभू हिCत -

1. मेन (सूकल्प-हिवेकाल्प का न वे ला),
2. बोहि द्धां (हिनर्णय का न वे ला र्शहिA),
3. अ का (स्वेय का. अन भूहि त),
4. हिचत्ता (स्मे0हित)।

अ का का बोहि द्धां का भू ग औ हिचत्ता का मेन का भू ग मे न C त ।

कामेकि द्रय ;औ प्र र्ण6 का. उत्पहित्ता:

C गर्ण का व्यहिष्ट रूप सू प च; कामेकि द्रय ;उत्पन्न हुईं –

1. वे र्ण (बो लान का. र्शहिA),
2. प हिर्ण (था - ग्रे र्ण का न का. र्शहिA),
3. प दां (प - चलान का. र्शहिA),
4. उपस्था (CननकिGद्रय),
5. गदां (त्य ग का न का. र्शहिA)।

सूमेहिष्ट रूप सू C गर्ण सू प्र र्ण उत्पन्न हुआ, C प च; प्रका का –

1. प्र र्ण (श्वसून कि य),
2. अप न (त्य ग कि य),
3. व्य र्ण (र्श मे GऊC का सूच),
4. उदां न (ऊध्वे गमेन का न वे ला प्र र्ण),
5. सूमे न (प चन कि य मे Gसू यका)।

स्था ला ब्रह्म Y (स्था ला सूहि0ष्ट) का. उत्पहित्ता:

प च; अपच का0त सूक्ष् मे तत्वे, C तमेसू प्रध न त ,H दां भू ग6 मे Gहिवेभू हिCत त H–

- एका भू ग स्वेय का बोन ए खत ।
- दांसू भू ग च बो बो भू ग6 मे Gहिवेभू हिCत का अन्य च तत्वे6 मे Gहिमेला C त ।
  इसू हिमेश्रृंर्ण का पच का र्ण (Quintuplication) का C त । इन पच का0त तत्वे6 सू स्था ला भूत उत्पन्न त ,H हिCसूसू स्था ला ब्रह्म Y (ब्रह्म ण्Y) का हिनमे।र्ण

त न प्रका का र्श (का र्ण, सूक्ष् मे, स्था ला) का सूमेहिष्ट औ व्यहिष्ट रूप:

- सूमेहिष्ट = सूप र्णर्श 6 का य ग।
- व्यहिष्ट = एकाला र्श ।

- सूमेहिष्ट का र्ण र्श = ईश्व (ईश्व),
- व्यहिष्ट का र्ण र्श = प्र ज्ञा (व्यहिष्ट C वे),
- सूमेहिष्ट सूक्ष् मे र्श = हि ण्यगभू,
- व्यहिष्ट सूक्ष् मे र्श = तसू,
- सूमेहिष्ट स्था ला र्श = वेश्व य हिवे ट परु ष,
- व्यहिष्ट स्था ला र्श = हिवेश्व।

हित्रोंगर्णोंमेका सूहि0ष्ट च :

ईश्व त न गर्ण 6 का आध प सूहि0ष्ट, प लान औ सू का त H–

- C गर्ण सू – ब्रह्म (सूहि0ष्टकात),
- सूत्त्वेगर्ण सू – हिवेष्ण (प लाका),
- तमे गर्ण सू – रुद्र (सू का)।

अज्ञा न का न र्श औ मे क्षी का. प्र हिप्त:

अज्ञा न (अहिवेद्या) सू सूसू का भ्रांमे उत्पन्न त ।

इसू भ्रांमे का नष्ट का न का हिलाए दां प्रका का ज्ञा न आवेश्यका H–

1. प क्षी ज्ञा न (श्रुंवेर्ण, मेनन) – हिCसूसू सूत्य का अहिस्तत्वे बो ध त ।
2. अप क्षी ज्ञा न (हिनकिदांध्य सून, सू क्षी त्का) – हिCसूसू स्वेय का ब्रह्म C नन का प्रत्यक्षी अन भूवे त ।

इसू प्रका , मे क्षी प्र हिप्त का. प्रकि य सू त अवेस्था ओं मे Gपर्ण त –

1. अज्ञा न,
2. आवे र्ण र्शहिA,
3. हिवेक्षीप र्शहिA,
4. प क्षी ज्ञा न,
5. अप क्षी ज्ञा न,
6. दांख 6 का अत ,
7. प मे आनदां का. प्र हिप्त।

वेर्ण का 2

अन बो ध चतष्ट य औ सू धन चतष्ट य

इसू दांसू   अध्य य मे Gएका उत्तामे ग्रेथा का च   अहिनवे य तत्वे6 का वेर्णन किकाय गय   , हिCन् Gअन बोन्ध चत ष्टय का   C त   । य   H(i) हिवेषय य प्रहितप द्या तत्वे, (ii) प्रय Cन य ला भू, (iii) सूcबोन्ध य ग्रेथा तथा प्रहितप द्या हिवेषय का बो च का न त , औ (iv) अहिधका   य य ग्य हिवेद्या था । वेदां त सू हि त्य मे Gहिवेषय ब्रह्म य प मे सूत्य , औ मे क्षी य मेहि A इसूका प्रय Cन । सूcबोन्ध का त त्पय प्रहितप द्या औ प्रहितप दांन का बो च का. काड़ा सू   , अथा त =ब्रह्म औ वेदां त ग्रेथा , C इसू स्पष्ट का त   ।

C सू धन चत ष्टय सू सूcपन्न , वे   य ग्य हिवेद्या था ।

हिCसू प्रका   का वेला ब्र ह्मर्ण   बो 0स्पहितसूवेन यज्ञा का न का अहिधका   त   Hऔ का वेला क्षीहित्रोंय   Cसूय

यज्ञा का सूकात

H उसू प्रका   वे   व्यहिA वेदां त का अध्ययन का सूकात   , C सू धन चत ष्टय सू सूcपन्न   । य च   गर्ण   H(i) हिवेवेका ,

अथा त =हिनत्य औ अहिनत्य वेस्तओं का बो च का भूदां भू वे, (ii) वे   ग्य, अथा त =इसू ला का औ प ला का मे Gकामेz

का फलाभू ग का

प्रहित हिवे हिA, (iii) षट्र्ससूcपहित्ताय ;, Cसू   र्शमे (मे नहिसूका हिनयत्रों र्ण) आकिदां, औ   (iv) मेमे क्षी त् वे,

अथा त =Cन्मे औ मे र्ण का च

सू मेA   न का. त व्र इच्छ ।

हिवेवेका का अथा य ज्ञा न   किका ब्रह्म   हिनत्य   औ य सूसू   अहिनत्य । य ज्ञा न श्रृंहि त (वेदां), स्मे0हित

(धमे र्श स्त्र), प   र्ण

आकिदां का अध्ययन सू सू C रूप सू प्र प्त   त   । वे   ग्य का अथा इ किद्रयCहिनत सूख 6 Cसू   पष् प, चदां न आकिदां

का प्रहित तथा

स्वेग य अप्सू ओं औ अन्य ला किकाका सूख 6 का प्रहित अरुहिच खन   , क्य6किका य सूभू क्षीहिर्णका औ त्य ज्य ,H

Cसू   का त्ता का.

उल्ट , मेत्रों औ मेला। षट्र्ससूcपहित्ताय ; छ गर्ण 6 सू यA   त   ,H C इसू प्रका   :H (i) र्शमे, (ii) दांमे, (iii) उप हित,

(iv)

हितहितक्षी , (v) सूमे ध न औ (vi) श्रृंद्धां ।

र्शमे का त त्पय मेन का श्रृंवेर्ण (आध्य हित्मेका हिवेषय6 का सून न य अध्ययन का न) का. ओ हिस्था का न औ इसू

अन्य

सू सू रि का हिवेषय6 सू दां   खन   । दांमे का अथा ज्ञा नGकिद्रय6 औ कामेकि द्रय6 का सूय मे का न   । उप हित का

त त्पय सूभू

सू सू   रि का गहितहिवेहिधय6 सू   हिनवेहि0त्ता , हिCसूमे Gत्य ग औ हिनष्का मे सूवे   भू   र्श हिमेला ।H हितहितक्षी

न Q   त औ वे सूमर्ण भूहिA का मे ग प चलात ।H इसूहिलाएमेमे क्षी त् वे का   न भू आवेश्यका बोत य गय   ।

का अथा सूख -दां, ख, गमे -

सूदां आकिदां द्वैद्वै 6 का सू न का न   , C पवे   Cन्मे6 का कामेz का का   र्ण उत्पन्न   त ।H सूमे ध न का त त्पय मेन का

सूदां

आध्य हित्मेका अध्ययन औ बिंचतन मे Gहिस्था   खन   । श्रृंद्धां का अथा गरु औ वेदां त का प्रहित अट ट हिवेश्व सू

खन   ।

मेमे क्षी त् वे का अथा सू सू   रि का बोध न6 सू मेA   न का. प्रबोला इच्छ   खन   , हिCसूमे Gऐषर्ण त्रोंय (का मे, धन

औ सूत न का.

इच्छ) का त्य ग किकाय C त   । य वेस   त   Cसू   Cलात हुए घ मे Gफ स व्यहिA किकासू भू त   बो

C हिवेद्या था उपयA गर्ण 6 सू यA त , उसू सूहिमेध (यज्ञा य ईंधन) औ गरु का हिलाए दांहिक्षीर्ण लाका अपन आध्य हित्मेका
गरु का प सू C न च हि ए औ श्रृंद्धां वे सूcमे नपवे का उनका च र्ण6 मे Gप्रर्ण मे का न च हि ए। किफ उसू गरु सू प्र थान का न
च हि ए: ' प्रभू! मे परु ष! अज्ञा न न र्शका! C वे का न ? ईश्व का न ? य हिवेश्व क्य ? य त न6 किकासूसू उत्पन्न
त ?H औ इसू सूसू बोध न सू का सू मेA हुआ C सूकात ? ' य र्श स्त्र6 का भू आदांर्श : 'C ब्र ह्मर्ण (अथा त = आध्य हित्मेका सू धका) कामेz द्वै प्र प्त न वे ला सूमेस्त ला का6 का. प क्षी का का उनमे Gवे ग्य प्र प्त का ला, उसू सूमेझेन
च हि ए किका अका0तका (स्वेयभू ब्रह्म) कामेz सू प्र प्त न Q किकाय C सूकात । उसू प मे त्मे का सू क्षी त्का का न का हिलाए सूहिमेध लाका उसू गरु का प सू C न च हि ए, C वेदां 6 मे Gप गत औ ब्रह्म मे Gहिस्थात ' (मेण् Yका उपहिनषदां =1.2.12)। 'प्रर्ण मे, सूवे औ बो -बो प्रश्नो का न सू तत्वेदांर्श ऋहिष तc Gउसू ज्ञा न का. हिर्शक्षी दांगG' (भूगवेद्गी त 4.34)। Cबो हिर्शष्य इसू प्रका हिवेनम्रत पवे का प्रश्नो का त , तबो गरु का0प पवे का सूसूCG वे ईश्व च औ हि किका C बो च ब्रह्मज्ञा न प्रदां न सूमेझे त , ,H C स्त्रिवे मेसूGवे य सू औ तामेसू न मेका त न गर्ण 6 का द्वै हिभून्न-हिभून्न त । इसूका पj त=गरु उसू आत्मे का वे स्तहिवेका स्वेरूप का ज्ञा न का त ,H उतन स्पष्टत सू C त्वहिA गरु का मे मदांर्शन सू आत्मे औ प मे त्मे का अभ दां का सूमेझेन , वे मेहि A प्र प्त का त । य हिसूद्धां त अटला औ हिनहिंत ।
हिCतव का ई था का. थाला सूमे G ख आ;वेला का फला का दांखि सूकात ।
य सूमेझेन च हि ए किका उपयA च सू धन भूगवे न का. का0प औ असूख् य Cन्मे6 का पण् य6 का फलास्वेरूप प्र प्त त ।H य

सू र्श

अन बोध चत ष्टय

(i) हिवेषय (ग्रेथा मे Gवेर्थिर्णत हिवेषय-वेस्त) ,
(ii) प्रय Cन (ग्रेथा का अध्ययन सू प्र प्त न वे ला ला भू),
(iii) सूबो ध (ग्रेथा औ हिवेषय-वेस्त का बो च सूबो ध), औ
(iv) अहिधका (C इसू ग्रेथा का पढ़न का य ग्य) ।
वेदां त सू हि त्य मे Gहिवेषय ब्रह्म (प मे सूत्य) , प्रय Cन मे क्षी (Cन्मे-मे र्ण का च सू मेहि A) , सूबो ध व्य ख्यय (ब्रह्म) औ उसूका. व्य ख्य (ग्रेथा) का बो च का सूबो ध , तथा अहिधका वे सू धका , C सू धन चत ष्टय का च गर्ण 6 सू सूप न्न ।
सू धन चत ष्टय

(i) हिवेवेका (हिनत्य औ अहिनत्य वेस्तओं मे Gभूदां का न का. क्षीमेत),
(ii) वे ग्य (इसू ला का औ प ला का का कामेफ ला सू उत्पन्न सूख 6 का प्रहित उदां सू नत),
(iii) षट्र्ससूcपहित्ता (छ} आ तरि का गर्ण —र्शमे, दांमे, उप हित, हितहितक्षी , सूमे ध न, श्रृंद्धां), तथा
(iv) मेमे क्षी त् वे (मे क्षी प्र हिप्त का. त व्र इच्छ)।
षट्र्ससूcपहित्ता

(i) र्शमे – मेन का सू सू रि का हिवेषय6 सू ट का श्रृंवेर्ण (वेदां त अध्ययन) मे Gहिस्था खन।

(ii) दांमे – ज्ञा नGकिद्रय6 औ कामेकि द्रय6 का वेर्श मे G खन।

(iii) उप हित – सूभू सू सू रि का कात व्य6 सू हिनवेहि0त्ता। इसूमे Gत्य ग औ हिनष्का मे सूवे भू सूहिcमेहिलात ।H

(iv) हितहितक्षी – प्र ब्ध कामे का का र्ण उत्पन्न सूख -दां} ख, र्श त-उष्ण आकिदां द्वैद्वै 6 का सू न का न का. क्षीमेत।

(v) सूमे ध न – मेन का मेर्श आत्मेज्ञा न प्र हिप्त का. ओ काGकिद्रत खन।

(vi) श्रृंद्धां – गरु औ वेदां त र्श स्त्र6 का वेचन6 मे Gअट ट हिवेश्व सू।

वेर्ण का 3

आत्मे औ अन त्मे

सूदां : य हिवेश्व किकातन तत्वे6 सू बोन ?
स्पष्ट का र्ण: य हिवेश्व दां तत्वे6 सू बोन — आत्मे (स्वे) औ अन त्मे (अस्वे)।

सूदां : आत्मे , C किका इसू हिवेश्व सू प , किफ भू इसूमे Gका सू सूमे हिवेष्ट त ?
स्पष्ट का र्ण: चकि ;का य ब्रह्म Y चत न औ Cड़ा दां न6 प्रका का. सूत्ता ओं सू बोन , औ चत नत आत्मे का स्वेभू वे , इसूहिलाए आत्मे का ब्रह्म Y मे Gसूमे वेर्श अपरि य । यकिदां ऐसू न , त य ब्रह्म Y अहिस्तत्वे मे Gन Q ग । इसूहिलाए, ब्रह्म Y मे Gआत्मे का. उपहिस्थाहित का स्वे का का न आवेश्यका ।
सूदां : चत न (सूवे दां नर्श ला) औ Cड़ा (असूवे दां नर्श ला) तत्वे का न-का न सू ?H
स्पष्ट का र्ण: सूमेस्त गहितर्श ला वेस्तए ; चत न ,H औ सूभू अचला वेस्तए ; Cड़ा ।H
सूदां : Cबो य दां न6—चत न औ Cड़ा—इतन अहिधका औ हिवेहिवेध ,H त ब्रह्म Y का वेला दां भू ग6 मे Gका सू बो ट; C सूकात
स्पष्ट का र्ण: अन त्मे (अस्वे) वे स्तवे मे Gएका ; य का वेला अपन हिवेहिभून्न प्रभू वे6 का का र्ण अन का प्रत त त । इसू प्रका , आत्मे (स्वे) भू एका , किंकात य C वे6 औ ईश्व 6 का रूप मे Gहिवेहिभून्न उप हिधय6 का का र्ण अन का प्रत त त , C किका अन त्मे का प्रभू वेस्वेरूप हिनर्थिमेत त ।H
सूदां : एका ईश्व अन का रूप6 मे Gका सू प्रकाट त ?
स्पष्ट का र्ण: ईश्व का अन का रूप6 का य हिवेच का वेला हिवेहिभून्न मेर्थि तय6 औ प्रहितमे ओं का मे ध्यमे सू उत्पन्न त , Cसू किका हिर्शवे, हिवेष्ण आकिदां का. छहिवेय ,; C त थास् था न6, ग वे;6, घृ 6 आकिदां मे GपC C त ।H

सूदां : क्य हिमेट्टी , पत्था आकिदां सू बोन मेर्थि तय6 मे G ईश्व त्वे का. काल्पन का. C सूकात ?
स्पष्ट का र्ण: ,; यकिदां इन मेर्थि तय6 मे Gईश्व त्वे हिनहि त न त , त ला ग इतन कारिठान ई उठा का , इतन धन खच का का उनका अहिभूष का, नवे द्या आकिदां क्य6 का त ? य ;य का न अप्र सू हिगका ग किका ग -बिं दां इन मेर्थि तय6 का. पC न Q का इसू हिवेषय मे Gका वेला आस्था वे न ला ग6 का दांष्ट0 त का उदां र्ण का रूप मे Gहिलाय C न च हि ए। आहिख , Cबो ला ग इसू भू हितका र्श का आत्मे मे नन का भ्रांमे प ला सूकात ,H Cबोकिका य मेला-मेत्रों सू भू हुआ , त किफ इन पहिवेत्रों औ ऊC मेय मेर्थि तय6 मे Gईश्व त्वे दांख न मे Gक्य आपहित्ता सूकात ?
सूदां : क्य का ई ऐसू उदां र्ण , हिCसूसू य हिसूद्धां सूका किका अन त्मे अपन प्रभू वे6 का का र्ण अन का रूप6 मे Gप्रकाट त , औ आत्मे भू अन त्मे का प्रभू वे सू हिनर्थिमेत उप हिधय6 का मे ध्यमे सू अन का प्रत त त ?
स्पष्ट का र्ण: ,; Cसू पथ्0वे अपन हिवेहिभून्न रूप त र्ण6 का मे ध्यमे सू अलाग-अलाग रूप6 मे Gप्रकाट त — Cसू पवेत , वेक्षी0, स्त भू, दां वे , अन C का भूY , घृ , मेठा, हिमेट्टी का बोतन आकिदां—वेसू मेला प्रका0हित, C स्वेय अन त्मे , अन का रूप6 मे G प्रकाट त ।

Cसू आका र्श, C अहिवेभू ज्य , पथ्0वे का हिवेहिभून्न रूप त र्ण6 Cसू — घृड़ा , घृ आकिदां—मे Gप्रवेर्श का घृट का र्श (घृड़ा मे Gहिस्थात
आका र्श), ग 0 का र्श (घृ मे Gहिस्थात आका र्श) आकिदां न मे6 सू C न C त , वेसू अहिद्वैत य आत्मे हिवेहिभून्न प्रका का र्श 6 द्वै , C किका मेला प्रका0हित का प्रभू वेस्वेरूप हिनर्थिमेत त ,H उनमे Gप्रवेर्श का त हुई प्रत त त । अज्ञा न ला ग इसू हिवेहिभून्न
रूप6 मे Gदांख त —HCसू किका मे, का0ष्ण आकिदां किदांव्य स्वेरूप, औ ब्र ह्मर्ण, क्षीहित्रोंय, वेश् य, र्शद्र , पर्श, पक्षी , का.ट, का.ड़ा आकिदां
सू सू रि का स्वेरूप। इसू प्रका , आत्मे अन का प्रत त त ।

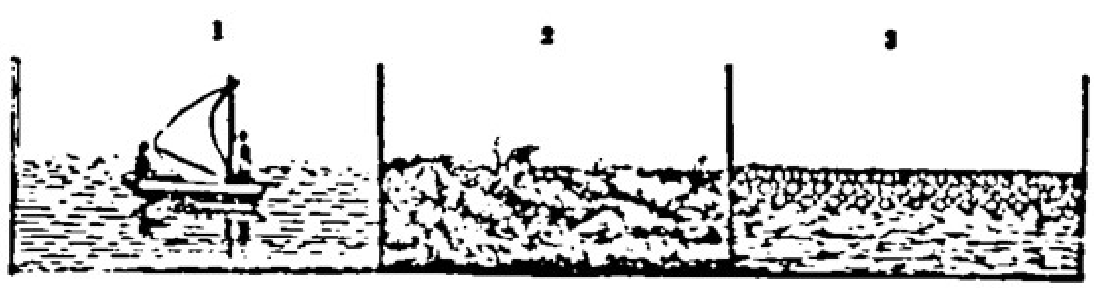
य दांहि0ष्टका र्ण आवेहिच्छन्न पक्षी (उप हिधय6 द्वै सू हिमेत चत न का हिसूद्धां त) का आध प किदांय गय । अबो

प्रहितबिंबोबो पक्षी (य हिसूद्धां त किका C वे त्मे प मे त्मे का अत }का र्ण मे Gप्रहितबिंबोबो मे त्रों) का आध प

हिनम्नहिलाहिखत
दांष्ट0 त किदांए C सूकात —H
Cसू एका Cला अन का रूप6 मे Gप्रत त त — Cसू मे सू ग , नदां , त ला बो, का ए; का Cला, घृड़ा का Cला

आकिदां—वेसू
एका अन त्मे (मेला भू त र्शहिA) हिवेहिभून्न रूप6 मे Gप्रकाद त ।
स्पष्ट का र्ण: Cसू घृट का र्श (घृड़ा का आका र्श) औ मे का र्श (सूवेव्यआका र्श) मे Gका ई भूदां न Q , वेसू C वे त्मे
औ प मे त्मे मे Gभू का ई भूदां न Q ।
Cसू एका सू ग मे सू ग्श न ला बो आकिदां मे Gअन का प्रहितबिंबोबो6 का रूप मे Gकिदांख ई दांत , वेसू एका

आत्मे अन का
सूदांश : यकिदां C वे त्मे का वेला काहिल्पत य प्रहितबिंबोहिबोत सूत्ता , त वे स्तहिवेका प मे त्मे औ अवे स्तहिवेका C वे त्मे का एका
र्श 6 का अत }का र्ण मे Gप्रहितबिंबोहिबोत का अन का प्रत त त ।
वो सू का C सूकात ? क्य य सूत्य औ असूत्य का सूमे न मेनन Cसू न Q ग ?
सूदांष्ट का र्ण: C वे त्मे का त न स्वेसू रू बो ध —H का का सू सूमेझे C सूकात ?
(i) प मे र्थिथाका स्त (अहिद्वैत य सूत्य),
(ii) व्यवे रि का स्त (सू पहि क्षीका यथा था) , औ
(iii) प्रत हितमे न स्त (हिमेथ्य स्वेरूप)।
य त न6 स्त त न अवेस्था ओं सू Cड़ा हुए .H..



हिचत्रीं. C वे का त न प ला

C वे का त न रूप

1. प मे र्थिथाका C वे (ग हिनद्र का. अवेस्था) – Cसू र्श त Cला।
2. व्यवे रि का C वे (C ग्रेत अवेस्था) – Cसू Cला मे Gउत्पन्न त गG।
3. प्रत भू हिसूका C वे (स्वेप्न अवेस्था) – Cसू त ग6 सू उत्पन्न झे ग।

य त न6 अवेस्था ए; मेर्श} (i) ग हिनद्र , (ii) C ग्रेत, औ (iii) स्वेप्न का अन रूप ।H हिCसू प्रका Cला मे Gअस्था य

रूप सू त गG उत्पन्न त Hऔ त ग6 सू झे ग उत्पन्न त , उसू प्रका व्यवे रि का C वे
व्यवे रि का
(व्यहिAगत चत न) प मे र्थिथाका C वे (र्शद्धां चत न) सू प्रकाट त , औ प्रत भू हिसूका C वे (हिमेथ्य चत न)
C वे सू प्रकाट त ।

हिCसू प्रका Cला का. त लात , र्श तलात औ स्वे दां, C Cला का स्वे भू हिवेका गर्ण ,H त ग6 मे Gप्रकाट त Hऔ

किफ त ग6
का मे ध्यमे सू झे ग मे Gभू प्रकाट त ,H उसू प्रका प मे र्थिथाका C वे (हिCसूका आध र्शद्धां ब्रह्म) का सूत=
(अहिस्तत्वे), हिचत=
(चत न) औ आनदां (प मे न दां) का गर्ण व्यवे रि का C वे मे Gप्रकाट त Hऔ किफ व्यवे रि का C वे का मे ध्यमे सू

प्रत भू हिसूका C वे मे Gभू प्रकाट त ।H
हिCसू प्रका हिबोन त ग6 का झे ग का अहिस्तत्वे न Q त , औ हिबोन Cला का त ग6 का का ई अहिस्तत्वे न Q
इसूहिलाए, Cसू घृट का र्श (घृड़ा का भू त का आका र्श) वे स्तवे मे Gमे का र्श (सूमेग्र आका र्श) सू हिभून्न न Q त , उसू
प्रकाउसूC वे त्मे का प मे र्थिथाका स्वेरूप वे स्तवे मे Gप मे त्मे सू हिभून्न न Q । य वेदां त का अहि तमे हिनष्काष ।
प्रका प्रकाहि जो G सूपूर्ण कासि हि त C नेहिता' (सत्यमू , हिसूका) C वेहिसूद्धांका अद्वैअहिस्तत्वे र्श Q—अन्न, मेौ कहिदोसू प मे र्थिथाका C वे का र्श तका
का व्यवे रि का
—सू प हिस्थात प मे र्थिथाका सूत्ता का अलाग का का उसू अपन 'स्वे' का रूप मे Gप च नत , औ श्रृंहि त (वेदां 6) का ग न अध्ययन
C वे का का ई अहिस्तत्वे न Q त । का वेला प मे र्थिथाका C वे वे स्तहिवेका औ र्श श्वत ।
औ तका सूग त हिवेवेका द्वै य प्रत्यक्षी अन भूवे का त किका 'अ ब्रह्म हिस्मे' (मे H अहिद्वैत य ब्रह्म हूँ);, वे व्यहिA पर्ण
ब्रह्मस्वेरूप C त ।
सूमेस्त उपहिनषदां Gएका स्वे मे Gघृ षर्ण का त Hकिका ऐसू आत्मेज्ञा न व्यहिA पण् य औ प प—दां न6 सू मेA C त ।

वेर्ण का 4

बोध न का. श्रृंखब0 लाप ड़ा औ दां ध र्ण

व्यहिAगत आत्मे (C वे)Cन्मे-मे र्णका च मेGएकाश्रृंख0 ला द्वै बोध हुई हिCसूका सू त प्रमेख काहिड़ाय ; —H
(i) प ड़ा (दां} ख)
(ii) दां ध र्ण (र्श प्र हिप्त)
(iii) कामे (कि य)
(iv) ग-द्वैष (प्रमे औ घृर्ण0)
(v) स्वेरूप का. भ्रां हि त (अ त -अहिभूमे न)
(vi) हिवेवेका भू वे (अहिवेवे का)
(vii) अज्ञा न (अहिवेद्या)

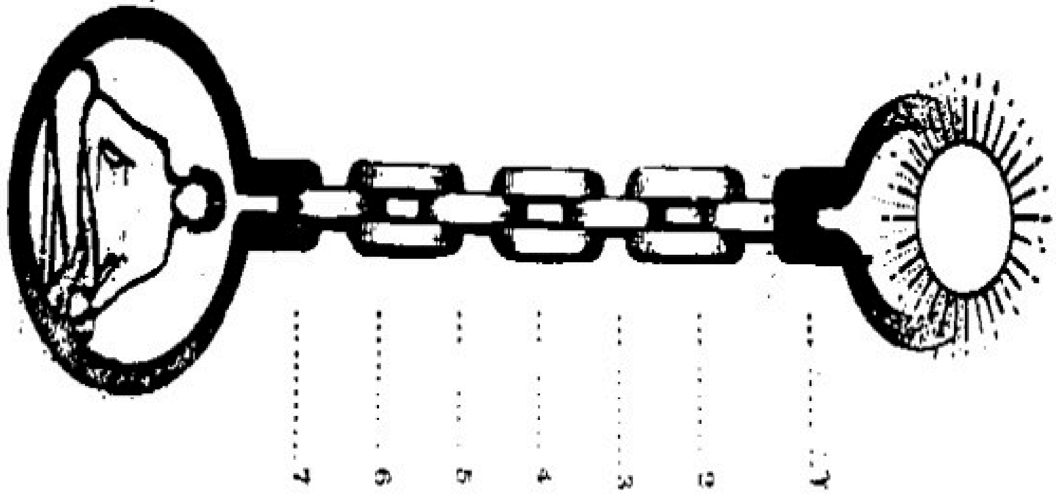
इन् G'बोध न का. श्रृंख0 ला ' का C त । इसू श्रृंख0 ला मे Gप्रत्यका उत्ता वेत काड़ा अपन सू प ला वे ला काड़ा का का र्ण त । इसू अध्य य औ अगला अध्य य मे Gप्र हिभूका च काहिड़ाय6 का हिवेश्लेष र्ण किकाय C एग।
सूदां : क्य प ड़ा (दां} ख) मे आत्मे का स्वे भू हिवेका गर्ण , य य बो ह्य (अहितरि A) ?

स्पष्ट का र्ण: य का वेला बो ह्य तत्वे । यकिदां इसू आत्मे का स्वे भू हिवेका गर्ण मे न हिलाय C ए, त इसूसू काई असूग त हिनष्काष उत्पन्न 6ग।
सूदां : वे का सू?

स्पष्ट का र्ण: यकिदां प ड़ा C वे त्मे का स्वे भू हिवेका स्वेभू वे त , त —

1. काभू भू दां} ख का न र्श न Q सूकात था।
2. किकासू भू व्यहिA का सूख का. प्र हिप्त न Q सूकात था।
3. का ई भू व्यहिA अपन दां} ख6 सू मेहि A प न का हिलाए का ई प्रय सू न Q का त।
4. का ई भू पण् यकामे का न , य ग-सू धन का न , ध्य न, उप सून आकिदां का न का प्रय सू न Q का त।
5. वेदां , प र्ण औ अन्य र्श स्त्र6 का. का ई उपय हिगत न Q C त।

सूदां : क्य य सूभू वे न Q किका दां} ख मेन ष्य6 का हिलाए स्वे भू हिवेका औ वे उसूसू मेहि A प न का प्रय सू का G?



हिचत्रों 3: बोध न का. श्रृंख0 ला

बोध न का. श्रृंख0 ला

1. अज्ञा न (Ajnana) – अज्ञा नत
2. अहिवेवे का (Aviveka) – हिवेवेका का अभू वे
3. अहिभूमे न (Abhimana) – अ का औ आसूहिA
4. ग-द्वैष (Raga-Dvesha) – प्रमे औ घृर्ण0
5. कामे (Karma) – कामे औ उसूका फला
6. C न्मे (Janma) – दां ध र्ण
7. दां} ख (Duhkha) – प ड़ा औ काष्ट

स्पष्ट का र्ण: न Q, य सूभू वे न Q किका दां} ख C वे त्मे का स्वे भू हिवेका गर्ण । यकिदां य उसूका मेला स्वेभू वे त , त का ई भू व्यहिA इसू सूमे ष्ट का न का प्रय सू न Q का त , क्य6किका का ई भू अपन वे स्तहिवेकात का हिमेट न का प्रय सू न Q का त । यकिदां किकासू का. स्वे भू हिवेका सूत्ता सूमे ष्ट C ए, त वे अपन C वेन का इहिच्छत लाक्ष्य का. प्र हिष्त का सू का सूकात ?

सूदां : का ई व्यहिA अपन स्वेभू वे (स्वेरूप) का अपन वे स्तहिवेकात क्य6 मे न ग ?

स्पष्ट का र्ण: इसू एका उदां र्ण सू सूमेझे य C सूकात । हिमेठा सू च न का स्वे भू हिवेका गर्ण । यकिदां हिमेठा सू का उसूसू अलाग का किदांय C ए, त च न स्वेय नष्ट C एग । इसू प्रका , यकिदां प ड़ा C वे त्मे का स्वे भू हिवेका गर्ण त , त प ड़ा का हिवेन र्श का सू था आत्मे भू नष्ट C त ।

प त आत्मे न र्श हि त औ र्श श्वत । र्श स्त्र6 मे Gका गय —

- "आत्मे अहिवेन र्श । " (बो 0दां ण्यका उपहिनषदां =IV-v-14)
- "वे आका र्श का. भू हि त सूवेब्य औ र्श श्वत । "
- "न त वे Cन्मे लात औ न मे त । वे का Q सू उत्पन्न न Q त औ न किकासू वेस्त मे Gबोदांलात । वे अCन्मे , हिनत्य, अहिवेन र्श औ प्र च न , तथा र्श का नष्ट न प भू नष्ट न Q त ।" (काठा पहिनषदां =I-ii-18)

इसूहिलाए य हिसूद्धां त किका प ड़ा आत्मे का स्वे भू हिवेका गर्ण न Q, बोहिल्का बो ह्य (अहितरि A) ।

सूदां : क्य किकासू वेस्त का स्वे भू हिवेका गर्ण न का बो दां भू उसूका वे स्तहिवेका स्वेरूप बोन सूकात ?

स्पष्ट का र्ण: न Q, ऐसू सूभूवे न Q ।

सूदां : हिCसू प्रका किकासू C दांई पत्था य मेत्रों 6 का प्रभू वे सू अहि का. ऊष्मे सूमे स्र सूकात , हिबोन अहि

का नष्ट किकाए,
औ वे स्पर्श मे Gठा Y भू सूकात , उसू प्रका , यकिदां प ड़ा C वे त्मे का स्वे भू हिवेका गर्ण त , त उसू य ग, उप सून , तथा उच्च कामेz का मे ध्यमे सू नष्ट किकाय C सूकात था , औ आत्मे एका नए गर्ण —सूख —का प्र स्र का

सूकात था । स्पष्ट का र्ण: यकिदां ऐसू त , त आत्मे का प्र स्र न वे ला सूख स्था य न Q त , बोहिल्का अस्था य त ।

सूदां : य क्य6? स्पष्ट का र्ण: C का छ भू कामेz द्वै उत्पन्न त , वे कामेz का सूमे स्र त लास्र C त ।

उप A उदां र्ण मे—G

- अहि औ आत्मे अपन ऊष्मे औ प ड़ा का अस्था य रूप सू C दांई पत्था य पण् य कामेz का का र्ण ख सूकात ।H
- प त Cबो उन उप य6 औ कामेz का प्रभू वे सूमे स्र ग , तबो वे स्वे भू हिवेका गर्ण (गमे औ प ड़ा) पन } प्रकाट C एग ।

इसूहिलाए, यकिदां मे य मे न ला Gकिका प ड़ा C वे का स्वे भू हिवेका गर्ण , त इसूका अथा य ग किका मे क्षी का वेला क्षीहिर्णका ग , स्था य न Q।
य र्श स्त्र6 का उन वेचन6 का हिवेरुद्धां ग , C का त —H

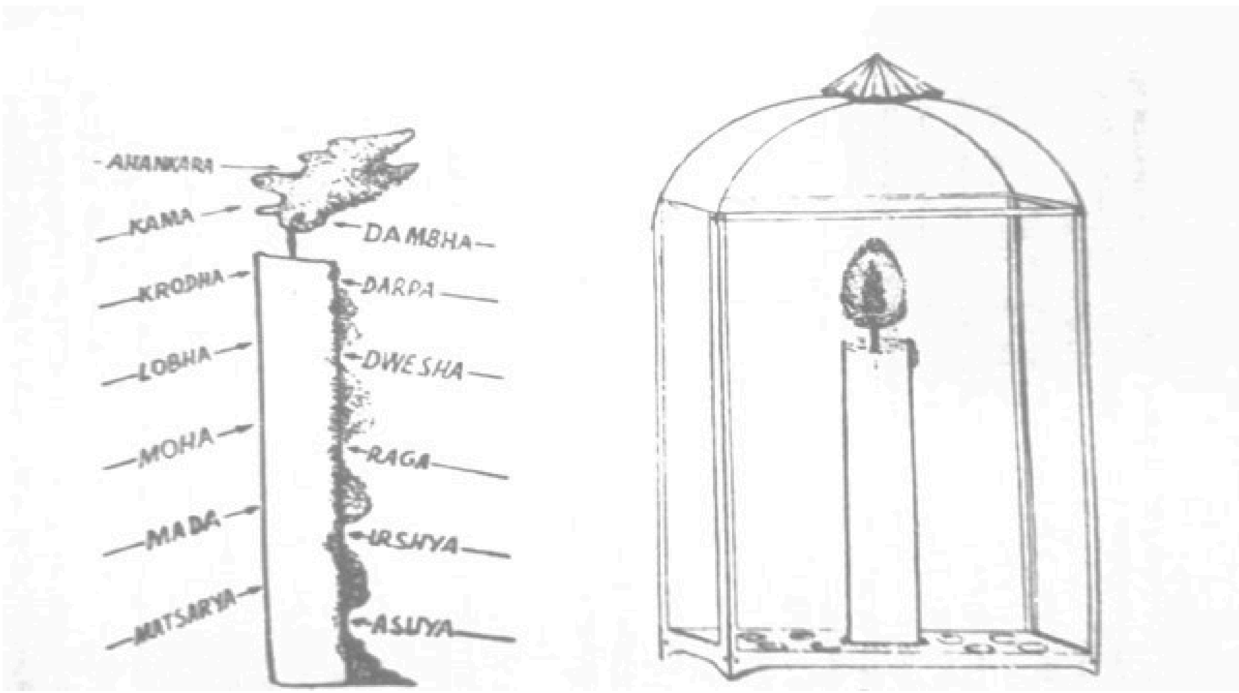
- "C मे क्षी प्र स्र का त , वे काभू ला टका न Q आत ।"
- "आत्मे अखY , आनदां मेय, हिन का औ अद्गुभू त । "

इसूका अला वे , यकिदां प ड़ा C वे त्मे का स्वे भू हिवेका गर्ण त , त वे ग हिनद्र , सूमे हिध औ र्श हि त का. अवेस्था मे Gभू बोन त । लाकि कान ऐसू न Q दांख C त ।
Cबो का ई व्यहिA ग हिनद्र , सूमे हिध, य मे नहिसूका र्श हि त सू C गत0 त , त वे अन भूवे का त —
"मे Hअबो तका सूख था ।"
इसूसू य हिनष्काष हिनकालात किका—

1. सूख आत्मे का स्वे भू हिवेका गर्ण ।
2. दां} ख का वेला एका बो ह्य प्रभू वे ।
3. Cबो C वे दां ध र्ण का त , तभू वे प ड़ा का अन भूवे का त ।

क्य6किका "C ;दां ध र्ण , वे ;प ड़ा ।" य प्रका0हित का हिनयमे ।

सूदां : क्य C , Cका मे आकिदां भू का वेला दां ध र्ण का का र्ण प ड़ा का अन भूवे का त ?H



हिचत्रों:अज्ञा न औ ज्ञा न मे Gअत

अज्ञा न औ ज्ञा न मे Gअत

स्पष्ट का र्ण: ,; C , Cका मे औ अन्य उच्च पदांस्था व्यहिA भू दां ध र्ण का का र्ण दां} ख का अन भूवे का त ।H उनका दां} ख हिवेहिभून्न रूप6 मे G त ,H Cसू —

- र्शत्रों ओं द्वै उत्प ड़ान,
- ज्य का. हिgcमेदां रि य6 का बो झे,
- धन औ सूप हित्ता का. हिन,
- हिप्रयCन6 का. मेत्0य,
- वेद्धां0 वेस्था , औ
- अपन स्वेय का. मेत्0य।

य का वेला एका भ्रांमे किका का छ ला ग इसू सूसू मे Gपर्ण रूप सू सूख ।H

सूदां : भ्रांमे किकासू प्रका दां} ख का सूख मे Gबोदांला सूकात ? स्पष्ट का र्ण: Cसू एका का ला , C अपन हिसू प

भू बो झे लाका तg सू दां ड़ात , एका किकासू न य अन्य श्रृंहिमेका अपन
कारिकान परि श्रृंमे का आनदां मे न लात Hऔ अपन का य का सू;त -ग त हुए का त ।H य भ्रांमे , हिCसूका का र्ण वे स्तहिवेका
रूप सू प ड़ा दांन वे ला परि हिस्थाहितय ; भू सूख दां प्रत त त ।H सूदां : क्य हिवेवेका . (बोहि द्धांमे न) व्यहिA

भू दां ध र्णका का र्ण प ड़ा का अन भूवे का त ?H स्पष्ट का र्ण: ,; वे भू भूख , प्य सू, गमे , ठा Y, बो मे रि य ,;

हिबोच्छ औ सू प; का Yका , र्श आकिदां का आ मेर्ण का का र्ण
र्श रि का प ड़ा का अन भूवे का त ।H
सूदां : तबो किफ अज्ञा न औ हिवेवेका . व्यहिA मे Gक्य अत ? स्पष्ट का र्ण: बो ह्य रूप सू दांख न प इनमेG

अहिधका अत न Q किदांख ई दांत , किंकात आ तरि का सूमेझे औ अन भूवे का स्त प
इनका बो च अत्यहिधका हिभून्नत त । हिवेवेका वे न एवे ज्ञा नयA व्यहिA र्श स्त्र6 का. वे र्ण , तका औ अन भूवे द्वै सू यत

प्रसूपर्ण इसू ग्रसूअत }G र्ण का ।H वे न सू हिका आत्मे का आत्मे ।H का
स्वेरूप सूत=-हिचत=-आनदां (र्शद्धां अहिस्तत्वे-चत न -प मे न दां) , Cबोकिका अत }का र्ण का स्वेरूप असूत्यत , Cड़ात औ प ड़ा । "
र्श स्त्र6 मे Gका गय — "असू ग ह्यय परु ष}" अथा त ="य आत्मे किकासू भू वेस्त सू असूबो द्धां " (बो 0दां ण्यका उपहिनषदां IV-iii-15)। तका द्वै मे उसू अवेयवे- हि त, सूत्य औ र्श श्वत का रूप मे Gप च नत ।H ग हिनद्र , र्श त अवेस्था औ
सूमे हिध का अन भूवे द्वै भू मे इसू सूत्य मे नत ।H

किकान्त , अहिवेवे का. औ अज्ञा न व्यहिA आत्मे का वे स्तहिवेका स्वेरूप का. C च किकाए हिबोन र्श आकिदां का आत्मे मे न लात । वे स्वेय का वे स्तहिवेका गर्ण 6 का स्था न त र्ण अ का औ दां मे Gका दांत औ स्वेय का C हित, ग, सूप्र दां य आकिदां का

आधिHदांवेपत्न हूँ", "मे Hमेनुष्य हूँ", "मे Hअ श्र हिनवे सू हूँ";, "मे Hतहिमेला हूँ";,
"मे Hब्र ह्मर्ण हूँ";, "मे Hक्षीहित्रोंय हूँ";, "मे Hवेश् य हूँ";, "मे Hर्शद्र हूँ";, "मे Hब्रह्मच हूँ";, "मे Hग 0स्था हूँ";, "मे Hवे नप्रस्था हूँ";, "मे H
हूँ"; आकिदां। इसू प्रका हिवेवेका . औ अहिवेवे का. का बो च मे न अत त । Cबो मे इसू हिवेषय का. औ ग ई सू C च
का त ,H त मे प त Hकिका बो ह्य कामेz का स्त प भू इन दां न6 मे Gसूमे नत न Q त।
सूदां : य का सू?

स्पष्ट का र्ण: हिवेवेका र्श ला मेन ष्य, व्यA Cगत का. हिमेथ्य त का C नका , स्वेप्न मे Gभू गन का सूमे न अपन 'प्र ब्ध' भू ग का भू हिमेथ्य मे नत ; Cबोकिका अज्ञा न मेन ष्य Cगत का सू था-सू था C वे का दां} ख-सूख का भू वे स्तहिवेका मे नत । इसू प्रका य हिसूद्धां त किका दां -सूख मे Gभू हिनहिjत रूप सू दां} ख , य ;तका किका हिवेवेका र्श ला व्यहिAय6 का मे मेला मे Gभू। दां का का र्ण दांवे 6 य दांवे 6 का भू दां} ख त , हिCसूका सूका त 'वेज्र स्त: प दां :' Cसू र्श स्त्र6 मे Gहिमेलात - 'दांवे त ओं का स्वे मे इन्द्र अपन था मे Gवेज्र ध र्ण का त ।H'

- हिवेवेका . व्यहिA इसू Cगत का हिमेथ्य मे नत Hऔ अपन प्र ब्ध का अन सू सूख -दां} ख का अन भूवे वेसू का त H Cसू स्वेप्न मे Gकिकाए गए अन भूवे का दांख त ।H
- अज्ञा न व्यहिA इसू सूसू औ उसूमे Gप्र प्त सूख -दां} ख का सूत्य मे नत Hऔ इनसू स्वेय का बो ध; लात ।H

इसूहिलाए हिसूद्धां त किका दां ध र्ण मे Gप ड़ा त त , य ;तका किका हिवेवेका . व्यहिA का हिलाए भू।

सूदां : क्य दांवे त भू प ड़ा का अन भूवे का त ?H

स्पष्ट का र्ण: ,; दांवे त भू दां ध र्ण का का र्ण प ड़ा का अन भूवे का त ।H

र्श स्त्र6 मे Gका गय :

- "वेज्र स्त} प दां }" – "स्वेग का C इ द्र अपन था मे Gवेज्र ध र्ण का त ।H"
- य सूका त का त किका वे भू झेगड़ा6, ध, र्श प, औ दांत् य6 का आ मेर्ण सू प हिड़ात त ।H
- वे अपन पण् य कामेz का सूमे स्र न का बो दां पन } Cन्मे लान का भूय सू भू बोध; त ।H

सूदां : यकिदां दांवे त भू प ड़ा का अध न ,H त वे पC न य औ मेन ष्य6 का सूख प्रदां न का न वे ला का सू

सूकात ?H स्पष्ट का र्ण: उदां र्ण का हिलाए, C ओं औ सूमेद्धां0 ला ग6 का ला।G यद्याहिप वे स्वेय अपन प ड़ा ओं

का अध न त ,H किफ

भू वे अपन प्रC Cन6 औ अहिश्वंत6 का प ड़ा का दां का न औ उन Gआनदां प्रदां न का न मे Gसक्षीमे त ।H इसमे

Gजात ई सूदांH लाकि कान इन वेचन6 का वे स्तहिवेका त त्पय य —अत }का र्ण का गण 6 का रूप मे Gप ड़ा का C मका , वे

स्वेतला का मे Gअपन आन दांमेय स्वेरूप का अन भूवे का न ।H"

न Q किका र्शस्त्र6 मे Gऐसू वेचन हिमलात HOसू किका "स्वेगला" का मे Gदांवे त आन दांमेय त "H, C हिवेप त

इसूका अलावे , र्शस्त्र6 मे Gय भू का गय किका "य दांवे त भू सू0ष्ट का इसू हिवेर्श ला सू सू -सू ग मे Gहिग पड़ा" (ऐत य

अथा का सूका त दांत

उपहिनषदां II-1), C स्पष्ट रूप सू य इ हिगत का त किका दांवे त ओं का हिलाए भू र्श ध र्ण का न का सू था-सू था प ड़ा का सूय ग अहिनवे य । इसूहिलाए, प्रत्यका व्यहिA का र्श का बोध न6 सू मेA का हिवेदां मे हिA य पर्ण मे क्षी का. अवेस्था प्र स्र का न का सूभू वे प्रय सू का न च हि ए।

सूदां : यकिदां मे क्षी का अथा मेर्श दां सू मेA न , त वे का छ किदांव्य आत्मे ए; C मे Gआका र्श मे Gत 6 का रूप मे Gकिदांख दांत ,H उन् GमेA आत्मे ए; क्य6 का C त ?

स्पष्टसूकार्ण: क्यमे, श्रीयका चहिGप्रसूदांवे त का।H

(i) सू ला क्य, अथा त उसू दांवे त का. उप सून का. C त , उसू ला का मे G हिनवे सू का न , (ii) सू मे प्य, अथा त उसू दांवे त का सूमे प न , (iii) सू रूप्य, अथा त उसू दांवे त का सूमे न स्वेरूप ध र्ण का न , औ (iv) सू यज् य, अथा त उसू दांवे त मे Gपर्ण त } लाय C न । इन च 6 प्रका का. मेहि Aय ;प्र स्र का न का हिलाए अलाग-अलाग मे ग बोत ए गए —H सू ला क्य मे क्षी चय (ईश्व का. सूवे औ सूमेपर्ण) सू, सू मे प्य मे क्षी कि य (हिर्शवे, हिवेष्ण आकिदां दांवे त ओं का. उप सून) सू, सू रूप्य मे क्षी य ग (यमे, हिनयमे आकिदां अष्ट ग य ग का अभ्य सू) सू, औ सू यज् य मे क्षी ज्ञा न (C वे त्मे औ प मे त्मे का. एकात का सू क्षी त्का) सू प्र स्र त । प ला त न प्रका का. मेहि A य6 का बोहुत अहिधका मे त्वे न Q , क्य6किका इन हिस्थाहितय6 मे Gपन Cन् मे का. सूभू वेन बोन त । का वेला अहि तमे प्रका का. मेहि A सूवे¡त्तामे औ वे छ न य मे न C त , क्य6किका इसूमे Gपन Cन् मे न Q त । र्श स्त्र6 मे Gका गय , "य गन सू यज् यमे=" अथा त 'य ग का मे ध्यमे सू प मे त्मे सू एकात्वे'। र्श हि त मे क्षी का मे त्रों र्शन् यत य अहिस्तत्वे नत न Q सूमेझेन च हि ए, क्य6किका C व्यहिA दां त हुए मेA त , वे दांसू 6 का किदांख ई दांत , Cबोकिका दां का नष्ट न का बो दां मेA हुए व्यहिA का का ई दांख न Q सूकात , किफ भू उसूका अहिस्तत्वे बोन त । हिCसू प्रका ग हिनद्र मे Gआनदां अन भूवे किकाय C त लाकि कान उसूका का ई रूप न Q त , उसू प्रका मे क्षी का आनदां का अन भूवे का वेला आत्मे स्वेय का सूकात , प त वे दांसू 6 का हिलाए दांश्0य न Q त ।

सूदां : यकिदां मे क्षी का आनदां औ ग हिनद्र का आनदां एका सूमे न , त क्य मे ग हिनद्र का मे क्षी मे न सूकात ?H स्पष्ट का र्ण: ऐसू कादां हिप न Q । इसू इसू रूप मे Gन Q सूमेझेन च हि ए। यद्याहिप अद्वैत आनदां का अन भूवे का. दांहि0ष्ट सू ग
हिनद्र औ मे क्षी का. हिस्थाहित मे Gसूमे नत प्रत त सूकात , किफ भू ग हिनद्र मे Gअज्ञा न बोन त औ व्यहिA बो दां
मे GC ग्रेत अवेस्था मे Gला ट आत , Cबोकिका मे क्षी मे Gन त अज्ञा न त औ न का ई पन वेहि0त्ता त । अत} मे क्षी का.
प्र हिप्त मे त्रों ग हिनद्र सू न Q सूकात।

इसू प्रका , मे प्रलाय (Cबो सूमेस्त C वे अव्यA अवेस्था मे Gअपन सूहि चत सूस् का 6 का सू था सूप्त त)H का भू मे

क्षी का.
हिस्थाहित न Q सूमेझेन च हि ए। य भू ग हिनद्र का सूमे न , हिCसूमे Gअज्ञा न बोन त औ अगला काल्प (सूहि0ष्ट
च) मे GC वे किफ सू प्रकाट त ।H प त मे क्षी का आनदां व्यहिA स्वेय अन भूवे का त , य मे त्रों एका र्शन् यत

त Q
पन- गमेन न Q त। Cबोकिका C वेन्मेA अवेस्था मे Gव्यहिA का र्श सू उत्पन्न न वे ला काष्ट सू न पड़ात ,H यद्याहिप वे बोहिल्का प्रत्याक्षी अन भूहि त का हिवेषय ।
उम् Gस्वेप्नवेत सूमेझेत औ उनसू प्रभू हिवेत न Q त।
सूदां : यकिदां दां त हुए मेA परु ष (C वेन्मेA) औ र्श त्य ग का मेA हुए परु ष (हिवेदां मेA) दां न6 आत्मे-
सूक्षीभूति त (र्श स्त्र6) औ यहिA (दां र्निका) हिवेक्षेअ र्ण) ? का मे ध्यमे सू य हिसूद्धां किकाय किका हिवेदां मेहि A प मे आनदां का. अवेस्था Cबोकिका र्श का बोन ...सू हिवेहिभून्न प्रका का ...बोन त ।H अबो मे अन भूवे (अन भूहि त) का आध
स्पष्ट का र्ण: मेध् य अत य किका हिवेदां मेA अवेस्था मे Gअज्ञा न औ उसूका प्रभू व6 का र्ण त} न र्श भू Cलित
प भू इसू प्रमे हिर्णत का Gग।
तथा का ई
ग हिनद्र मे Gप्रत्यका व्यहिA का र्श -बो ध का अभू वे का का र्ण किकासू प्रका का. प ड़ा का अन भूवे न Q त। दांसू ओ , C ग्रेत औ स्वेप्न अवेस्था ओं मे Gसूभू का र्श -बो ध का का र्ण काष्ट6 का अन भूवे त । इसूहिलाए, य सू वेभू हिमेका सूत्य किका C ;का Q र्श ग , वे ;काष्ट भू 6ग। आत्मे , C स्वेभू वेत} आनदां स्वेरूप , भू र्श ध र्ण का न प काष्ट का अन भूवे का त , यद्याहिप य काष्ट आत्मे का स्वे भू हिवेका गर्ण न Q ।
सूदां : इसू र्श ध र्ण का का र्ण क्य ?

स्पष्ट का र्ण: र्श ध र्ण का का र्ण का वेला पच भू त (प च; मे भू त6) का सूय ग न Q , क्य6किका य पच भू त सूप र्ण ब्रह्म Y मे G
व्य प्त ,H किफ भू C -;C ;वे प ए C त ,H वे ;र्श का. उत्पहित्ता न Q त। बोहिल्का Cबो पच भू त C वे का सूहि चत कामेz का सू था सूय ग का त ,H तबो र्श का हिनमे र्ण ।

सूदां : क्य य न Q का C सूकात किका र्श का हिनमे र्ण परु ष का र्श (वे य) औ स्त्र का र्श हिर्णत (बिंYबो) का सूय ग सू त , C किका पच भू त6 का हिवेका ?H
स्पष्ट का र्ण: ऐसू हिनहिjत रूप सू न Q का C सूकात। क्य6किका काई बो र्श औ र्श हिर्णत का सूय ग का बो वेCदां भू र्श का. उत्पहित्ता न Q त। इसूहिलाए, र्श का वे स्तहिवेका का र्ण का वेला पच भू त न Q, बोहिल्का वे पच भू त C सूहि चत कामेz सू C

त ,H वे र्श हिनमे र्ण का हिलाए उत्ता दां य ।H

अबो, चकि ;का पच भू त, आका र्श औ सूमेय सू वेभू हिमेका रूप सू हिवेद्यामे न ,H अत} हिवेहिभून्न प्रका का र्श 6 का. उत्पहित्ता का वे C वे6 का कामेz का. हिवेहिभून्नत ओं का का र्ण सूभू वे त । हिCसू प्रका का c हिमेट्टी सू हिवेहिभून्न प्रका का बोतन बोन त

Cबोकिका हिमेट्टी त सूवेत्रों एका त , उसू प्रका पच भू त भू सूवेत्रों एका सूमे न त हुए भू , Cबो वे C वे6 का भूत का ला न कामेz का सू था सूय ग का त ,H तभू हिवेहिभून्न प्रका का र्श उत्पन्न त ।H अन्यथा , सूभू र्श एका प्रका का न च हि ए—एका C हित, ग, आका , हिवेर्शष त ए;, ऊ;च ई, C वेनका ला आकिदां मे Gसूमे न।

हिCसू प्रका उप A उदां र्ण मे Gहिमेट्टी उप दां न का र्ण (सू मेग्रे) औ का c हिनहिमेत्ता का र्ण (कामे

का न वे ला) , उसू

प्रका य ;पच भू त उप दां न का र्ण Hऔ C वे6 का सूहि चत कामे हिनहिमेत्ता का र्ण ।H Cबो तका सूहि चत कामे फला दीन ' की हिलाए

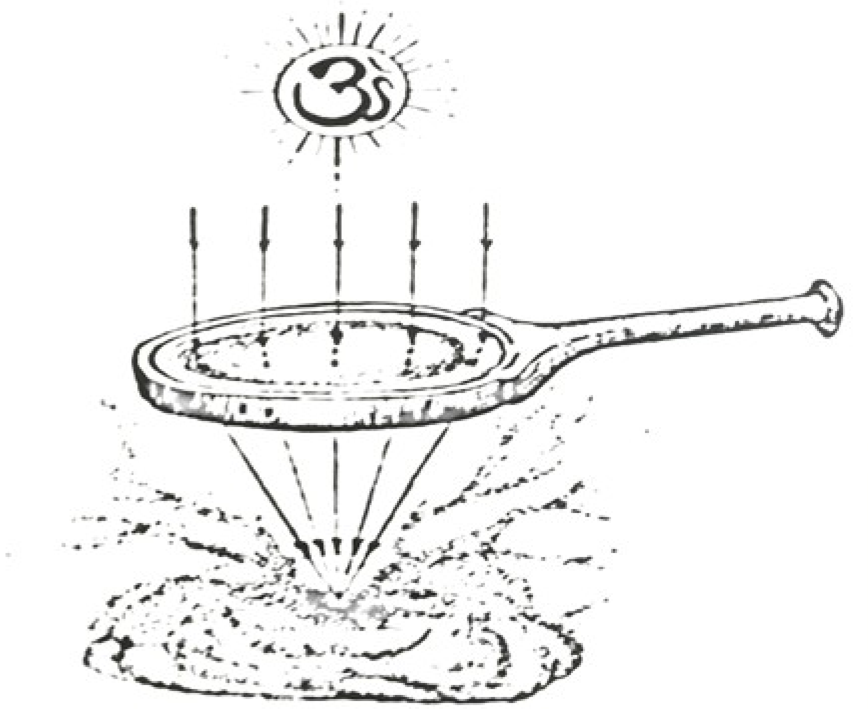
तय त ,H तबो तका र्श प्र त्त त त । इसू का र्ण स्वेप्न औ C ग्रेत अवेस्था ओं मे Gर्श का अहिस्तत्वे बोन र्शत का क्य6किका कामेz का फला भू गन का हिलाए र्श आवेश्यका त । Cबो कामेz का. सूमे हित्त C त , तबो

अहिस्तत्वे सूमे त्त C त , Cसू किका ग हिनद्र मे G त । इसू प्रका , Cबो तका हिमेट्टी उपलाब्ध त , तबो

तका का वेला हिमेट्टी का न मे त्रों सू बोतन न Q बोनत , Cबो तका किका का c का

प्रयत्नी न । इसू प्रका , Cबो तका ईश्व द्वै उत्पन्न किकाए गए पच भू त हिवेद्यामे न ,H तबो तका यकिदां किकासू C वे की कामे

सूमे त्त C ए,; त उसू किफ काभू र्श प्र त्त न Q ग औ वे पर्ण रूप सू मेA C एग।



हिचत्रों 5 : अत }का र्ण रूप लासूG का मे ध्यमे सू ज्ञा न का. अहि , अज्ञा न का काप सू का भूस्मे का दांत

सूदां : हिवेहिभून्न र्श स्त्र6 मे Gभूत का ला का कामेz का प्रभू वे का बो मे Gअलाग-अलाग काथान क्य6 ?H का छ कामेका Y सूबो ध का गय किका "च पण् य य प प, किकाए गए कामेz का फला अवेश्य भू गन पड़ात । च का ड़ा6 काल्प (सूहि0ष्ट च) बो त C ए,; भू ग हिबोन किकाए गए कामेz का फला काभू नष्ट न Q त ।" वे Q ज्ञा न सू सूबो हि धत र्श स्त्र6 मे Gका गय किका "ज्ञ

का. अहि सूभू पवे कामेz का उनका फला6 सूहि त भूस्मे का दांत " (ग त IV-7)। इन हिवे ध भू सू र्श स्त्र वेचन6 मे Gसू किकासूका अन सू र्ण का न च हि ए?

स्पष्ट का र्ण: र्श स्त्र6 मे Gदां प्रका का वेचन त —H (i) प्रबोला वेचन (बोलार्श ला य हिनर्ण य का काथान) औ (ii) दांबी ला वेचन (कामे प्रभू वेर्श ला काथान)। तका र्श स्त्र मे Gप्रबोला वेचन का हिसूद्धां त वेचन का C त , C अहि तमे सूत्य का व्यA का त , Cबोकिका दांबो ला वेचन का पवे पक्षी वेचन का C त , हिCसू आग C का खहि Yत किकाय C त । अहिधका प्रभू वेर्श ला औ हिनर्ण य का वेचन कामे प्रभू वेर्श ला वेचन6 का हिन स्त का दांत ।H उदां र्ण का हिलाए, "अबिं सू प मे धमे} " (अबिं सू सूवे¡च्च धमे) य एका बोहुत मे त्वेप र्ण औ प्रभू वेर्श ला र्श स्त्र-वेचन , लाकि कान इसूसू भू अहिधका प्रभू वेर्श ला वेचन —"यज्ञा पर्शवे वेध्य }" (यज्ञा मे Gपर्शओं का वेध किकाय C न च हि ए), C हिवेर्शष परि हिस्थाहितय6 मे Gअबिं सू का सू मे न्य हिनय का हिन स्त का त ।

इसू प्रका , "कामेफ लामे =अवेश्य अन भूवेन यमे"= (कामेz का फला अवेश्य भू गन पड़ात) य काथान भू तबो अपन मे त्ता ख दांत Cबो उसूसू अहिधका प्रभू वेर्श ला काथान "तपसू किकाहिल्बोष हि त" (तप सू प प नष्ट त ,H मेन स्मे0हित XII-104) आत । अत} Cन्मे-Cन्मे त का सूहि चत पण् य-प प रूप कामे, च वे किकातन भू हिवेर्श ला 6, आत्मेज्ञा न द्वै पर्ण त } नष्ट C त ।H

सूक्षी प मे,G हिबोन कामे का पन Cन् मे न Q त ; हिबोन पन Cन् मे का दांख न Q त ; औ Cबो दांख सूमे स्त C त , त पर्ण आनदां का. प्र हिस्त त । य वेदां त का अहि तमे हिनष्काष ।

वेर्ण का 5

बोध न का. श्रृंख0।ला कामे प्रमे औ घूर्ण0

पवे अध्य य मे Gय बोत य गय किका C वे का. प ड़ा ए ;का वेला र्श का सू था Cड़ा वे का का र्ण ,H औ य र्श कामेz का परि र्ण मे ।

सूदां : कामे किकातन प्रका का त ?H

स्पष्ट का र्ण: कामे त न प्रका का त —H
(i) पण् य (सूत्कामे) , (ii) प प (दांष् कामे) औ (iii) हिमेहिश्रृंत (पण् य औ प प दां न6 का सुहि0मेश्रृंर्ण)। दांवे त आकिदां का र्श पण् य कामेz का का र्ण प्र स्र त ,H पर्श आकिदां का र्श प प कामेz का का र्ण हिमेलात Hऔ
मेन ष्य6 का र्श हिमेहिश्रृंत कामेz का का र्ण प्र स्र त ।H प्रत्यका प्रका का कामेz का त न श्रृंहि र्णय6 मे

Gहिवेभू हिCत किकाय गय —
(i) उत्का0ष्ट (श्रृंष्ठ), (ii) मेध्यमे (मेध्यमे) औ (iii) सू मे न्य (सू मे न्य)। इन हिवेहिवेध प्रका का कामेz का का र्ण अन का प्रका का
र्श उत्पन्न त ।H

सूदां : हिवेहिभून्न प्रका का पण् य, प प औ हिमेहिश्रृंत कामेz का परि र्ण मे क्य त ?H स्पष्ट का र्ण: उत्का0ष्ट पण् य

कामेz (अत्यहिधका उत्तामे पण् य कामे) का का र्ण हि ण्यगभू (सूहि0ष्ट का अहिधष्ठ त) औ अन्य दांवे त ओं का
र्श प्र स्र त ।H मेध्यमे पण् य कामेz का का र्ण इ द्र आकिदां दांवे त ओं का र्श प्र स्र त ।H सू मे न्य पण् य कामेz का का र्ण
यक्षी, क्षीसू, हिपर्श च आकिदां का र्श प्र स्र त ।H
उत्का0ष्ट प प कामेz (अत्यहिधका घृ प प) का का र्ण ऐसू र्श प्र स्र त HC दांसू 6 का हिन पहुच; त ,H Cसू — का ट; दां
य हिवेष ला वेक्षी0, बो घृ, सू प;, हिबोच्छ , उल्ला , मेच्छ , C6का आकिदां। मेध्यमे प प कामेz का का र्ण ऐसू

पड़ा -प ध औ C वे हिमेलात
H C मेन ष्य6 का हिलाए का छ दां तका उपय ग त ,H Cसू काट ला, आमे, का ला , न रि यला आकिदां का वेक्षी0 तथा सूअ , भूसूग,
गध , ऊ;ट आकिदां। सू मे न्य प प कामेz का का र्ण प पला, तला सू , बोला आकिदां वेक्षी0 तथा ग य, घृ ड़ा आकिदां का

र्श प्र स्र त ।H
उत्का0ष्ट हिमेहिश्रृंत कामेz (श्रृंष्ठ हिमेहिश्रृंत कामे) का का र्ण ऐसू मेन ष्य Cन्मे लात ,H C हिनष्का मे कामे मे Gहिस्थत त ,H हिCन् Gसूद्गुगर
प्र स्र त औ C श्रृंवेर्ण, मेनन, आत्मे-ज्ञा न औ C वेनमेहि A का मे ग सू प मे मेहि A प्र स्र का त ।H मेध्यमे हिमेहिश्रृंत

कामेz
का का र्ण वे मेन ष्य Cन्मे लात ,H C अपन वेर्ण औ आश्रृंमे का अन सू कात व्य6 का प लान का त ,H प न्त इन कामेz का फला6
का. का मेन भू खत ।H सू मे न्य हिमेहिश्रृंत कामेz का परि र्ण मेस्वेरूप च Y ला, हिर्शका का न वे ला, अत्य च औ

अन्य
घृहि0र्णत C वेन C न वे ला मेन ष्य6 का Cन्मे त ।
अत} हिवेवेका वे न व्यहिA का प ला य हिवेच का न च हि ए किका उसूका कामे किकासू प्रका का फला दांगG।

उसू का वेला उन् Q कामेz
का अपन न च हि ए C उसू श्रृंष्ठ मे नवे C वेन का. ओ ला C ए ;औ अत त} आत्मेज्ञा न का मे ध्यमे सू मे क्षी का. प्र हिस्र का ए;।

सूदां : सूसू मे Gला ग "मे Hका त हूँ";, "मे Hका त हूँ"; इसू प्रका का वे क्य का त ।H इसूसू प्रत त त किका 'मे'H C आत्मे , वे कात । त किफ कामे का सूबो ध इन त न सू धन6 सू का सू C ड़ा C त ?

स्पष्ट का र्ण: आत्मे त अपरि वेतन र्श ला, हिनहिष् य औ अद्वैत स्वेरूप , इसूहिलाए उसूमे Gकात0 त्वे भू वे न Q सूकात।

सूदां : किफ ऐसू क्य6 प्रत त त किका आत्मे कात , Cबोकिका का ई अन्य कात किदांख ई न Q दांत ?

स्पष्ट का र्ण: आत्मे मे Gकात0 त्वे का बो ध का वेला अध्य सू (अज्ञा नCहिनत भ्रांमे) का का र्ण त , य उसूका स्वे भू हिवेका गर्ण

न Q । यकिदां य उसूका स्वे भू हिवेका गर्ण, त ला ग य प्रय सू न का त किका "मे भू त का कात पन का झेठा भू वे का वेदां त अध्ययन का द्वै सूमे प्त किकाय C न च हि ए, अन्यथा Cन्मे औ मेत्0य का च सू मेहि A न Q हिमेला ग।"

सूदां : मे न हिलाय C ए किका कात0 त्वे आत्मे का स्वे भू हिवेका गर्ण , त क्य उसू नष्ट का न का प्रय सू न Q किकाय C सूकात?

स्पष्ट का र्ण: न Q, क्य6किका C स्वे भू हिवेका त , वे व्यहिA का. स्वेय का. वे स्तहिवेकात त । का ई भू व्यहिA अपन स्वे भू हिवेका प्रका0हित का नष्ट का न का प्रय सू न Q का त। यकिदां आत्मे का. मेला प्रका0हित नष्ट C ए, त किफ आत्मेसू धन का भ्रूलेमथई (र्था मे G ता हुए र्मेंहिदां A, का न्मेA) किदांय C ए, त गरु -हिर्शष्य प प Cसू सूप र्ण वेदां त प प भू व्यथा C एग। इसूका अला वे, श्रृंहि तय6 मे Gका गय किका "आत्मे हिनष्काला (अखY), हिनहिष् य, र्श त, हिनदां¡ष औ हिनमेला " (श्वत श्वत उपहिनषदां VI-19)। अत} य स्पष्ट किका आत्मे मे Gकात0 त्वे का गर्ण प्र का0हितका रूप सू न Q , य का वेला अज्ञा नCहिनत भ्रां हि त (अध्य सू) का परि र्ण मे ।

सूदां : यकिदां आत्मे स्वेप्न औ C ग्रेत अवेस्था मे Gकात प्रत त त , त क्य य सूभू वे न Q किका ग हिनद्र (सूष हिप्त) मे G कात0 त्वे प्रकाट न , क्य6किका वे सू धन6 का. अन पहिस्थाहित त ? Cसू का ई बोढ़ई Cबो स्ना न य भू Cन का त , तबो उसूका औg न न का का र्ण का ग प्रकाट न Q त।

स्पष्ट का र्ण: ऐसू न Q । आत्मे Cबो पर्ण रूप सू र्श त त , तबो भू कात0 त्वे प्रकाट न Q त। य प्रमे हिर्णत का त किका आत्मे मे Gकात0 त्वे का गर्ण स्वे भू हिवेका रूप सू न Q , बोहिल्का य का वेला अध्य सू (भ्रांमे) का परि र्ण मे ।

सूदां : अध्य सू (अज्ञा नCहिनत भ्रांमे) क्य ?

स्पष्ट का र्ण: अध्य सू का अथा किकासू वेस्त का गर्ण 6 का दांसू वेस्त मे Gदांख न। Cसू Cबो का ई व्यहिA न वे मे Gबोठा का नद चलात , त किकान का वेक्षी0 उसू हि लात हुए प्रत त त ।H य ;न वे का. गहित वेक्षी06 मे Gआ हिपत का दां C त औ वेक्षी0 का. हिस्था त न वे प आ हिपत का दां C त । इसू प्रका मेन, वे र्ण औ र्श द्वै किकाए गए सूभू कामेz का आत्मे मे G आ हिपत का किदांय C त , औ आत्मे का. हिनहिष् यत इन सू धन6 प आ हिपत का दां C त । य का वेला अज्ञा न का का र्ण त । अत} य सूमेझेन च हि ए किका आत्मे मे Gकात0 त्वे का. काल्पन का वेला अध्य सू का परि र्ण मे ।

सूदां : यकिदां कामे का सू धन (मेन, वे र्ण , र्श) Cड़ा औ अचत न ,H त उनमे Gकात0 त्वे (कात पन) का सू सूकात ? यकिदां वे स्वेय कात त, त उन् Gभू कि य र्श ला का न का हिलाए अन्य सू धन6 का. आवेश्यकात त। यकिदां ऐसू , त वे अन्य सू धन क्य ?H

स्पष्ट का र्ण: य आवेश्यका न Q किका Cड़ा सू धन6 का सूकि य का न का हिलाए अन्य सू धन6 का. आवेश्यकात । उदां र्ण का हिलाए, वे औ बो ढ़ Cसू Cड़ा र्शहिAय ;हिबोन किकासू अन्य बो सू धन का वेक्षी06 का उख ड़ाका दां ला C त ।H इसू प्रका मेन, वे र्ण औ र्श हिबोन किकासू अन्य सू धन का कात का रूप मे Gका य का सूकात ।H

सूदां : मेन, वे र्ण औ र्श द्वै किकाए गए कामे का न-का न सू त ?H

स्पष्ट का र्ण:

- मेन का पण् य कामे: सूत्काल्प, उच्च आध्य हित्मेका हिवेच , प ला का बिंचतन आकिदां।
- मेन का प प कामे: हिवेषय सूहिA, दांसू 6 का प्रहित द्वैष , र्श स्त्र6 प सूदां , प प-पण् य मे Gभूदां न मे नन आकिदां।
- मेन का हिमेहिश्रृंत कामे: सूत्कामेz का सू था-सू था सू सू रि का सूख का. इच्छ खन ।
- वे र्ण का पण् य कामे: वेदां 6 का अध्ययन, Cप, सूत्सूग , सूत्य वेचन, मेध औ हिवेनम्र वे र्ण आकिदां।
- वे र्ण का प प कामे: झेठा , बिंनदां , काठा वेचन, हिन था का बो तGका न आकिदां।
- वे र्ण का हिमेहिश्रृंत कामे: पC -प ठा का दां न सू सू रि का हिवेषय6 प चच का न ।
- र्श का पण् य कामे: त था स्ना न, गरु औ दांवे त ओं का प्रर्ण मे, सूमे C-सूवे आकिदां।
- र्श का प प कामे: बिं सू , च , व्यहिभूच , बो ला ग6 का. सूग हित आकिदां।
- र्श का हिमेहिश्रृंत कामे: धमे था का य का हिलाए अन्य यपर्ण सू धन6 का उपय ग का न ।

इन त न6 प्रका का कामेz का ग ई सू हिवेच किकाय C न च हि ए।

सूदां : ऐसू हिCज्ञा सू का न का क्य ला भू औ इसू का सू प्र प्त किकाय C सूकात ?

स्पष्ट का र्ण: इसू प्रका का. हिCज्ञा सू का परि र्ण मे दां प्रका का त (i) मेख् य फला औ (ii) अवे त फला। Cसू किका प ला का गय , त न प्रका का कामे का वेला त न सू धन6 (मेन, वे र्ण औ र्श) द्वै किकाए C त ।H आत्मे इनसू अछ त त औ आका र्श का. भू हि त हिवेभू Cन हि त त । य स्वेय चत न -स्वेरूप । इसूहिलाए य किकासू भू प्रका का कामे का. कात न Q सूकात , Cसू किका र्श स्त्र6 मे Gका गय : "C आत्मे स्वेप्न मे Gअन भूवे का त , C ग्रेत अवेस्था मे Gभू गत , किफ भू अपन र्श श्वत स्वेरूप मे Gहिस्थात त , वे वे स्तहिवेका आत्मे ।" इसूका त त्पय य किका आत्मे न त किकासू कामे सू प्रभू हिवेत त औ न किकासू प्रका का का य का त । Cबो य सूमेझे हिलाय C त किका "हिचदां का र्शस्वेरूप आत्मे किकासू भू कामे सू स्पर्श न Q का त ", तबो व्यहिA सूभू र्शका ओं का त्य गका ग न र्श हि त औ सूत ष प्र प्त का त ।
य इसूका मेख् य ला भू ।
इसूका अहितरि A, ब्रह्म-ज्ञा न प्र हिप्त का बो दां भू व्यहिA का अपन त न सू धन6 (मेन, वे र्ण , र्श) का पण् य कामेz मे Gलाग न च हि ए। यकिदां य सूभू वे न , त कामे सू कामे हिमेहिश्रृंत कामे का न च हि ए, किंकात प प कामेz का. ओ प्रवेत्ता0 न Q न च हि ए। इसू प्रका C वेन का इसू हिनयमे का सूमेझेका उसूमे Gहिस्थात न इसू हिCज्ञा सू का हिद्वैत यका ला भू । इसू एका उदां र्ण सू सूमेझे सूकात —HCसू का ला का वेक्षी0 का उग न वे ला व्यहिA का हिलाए उसूका फला मेख् य ला भू त , Cबोकिका उसूका प फ ला आकिदां ग र्ण ला भू त ।H

सूदां : क्य ज्ञा न परु ष वे स्तवे मे Gकामेz सू अछ त त ,H Cसू Cला सू कामेला पत्रों? यकिदां य हिसूद्धां गय किका वे अकात (कात0 त्वे सू हि त) Hऔ का वेला सू क्षी मे त्रों ,H त किफ उनका हिलाए भू पण् य कामे का न का हिनयमे क्य6 आवेश्यका बोत य गय ?

स्पष्ट का र्ण: ,; इसूमे Gका ई सूदां न Q किका ज्ञा न परु ष का का छ भू का न का. आवेश्यकात न Q त , औ वे किकासू भू कामे का कात न Q त । किफ भू , ज्ञा न परु ष च प्रका का त —H (i) ब्रह्महिवेत (ब्रह्म का C नन वे ला), (ii) ब्रह्महिवेद्वै (श्रृंष्ठ ब्रह्मज्ञा न), (iii) ब्रह्महिवेद्वैरि यन (अहिधका श्रृंष्ठ ब्रह्मज्ञा न) औ (iv) ब्रह्महिवेद्वैरि ष्ठ (सूवेश्रृं ष्ठ ब्रह्मज्ञा न)। इनमेG सू का वेला ब्रह्महिवेद्वैरि ष्ठ हिवेदां मेAत ,H अथा त वे पर्ण रूप सू हिचत्तावेहि0त्ताय6 सू मेA त ।H उनका हिलाए किकासू भू प्रका का हिनयमे-हिनषध ला ग न Q त ।

र्शष त न प्रका का ज्ञा न परु ष, यद्याहिप वे भू हिनयमे6 सू प त ,H किफ भू वे उहिचत आच र्ण का प लान का त ।H क्य6किका
वे अभू भू मे नहिसूका वेहि0त्ताय6 सू पर्ण त } मेA न Q हुए त , सूसू मे Gकि य र्श ला त Hऔ ला का काल्य र्ण का का यz मे G
सूला त ।H अत} वे सूमे C मे Gएका आदार्श प्रस्तत का न त पण् य कामेz मे Gप्रवेत्ता0 त ।H प त आध्य हित्मेका सू धका6 का मेध्य
वे सूभू कामेz का त्य ग का का का वेला ज्ञा न का. सूवे¡च्चत का. घृ षर्ण का त :H "ब्रह्म सूत्य, अन्यत =सूवे असूत्य" —"का वेला ब्रह्म सूत्य , बो का. सूबो हिमेथ्य । " अत} य स्पष्ट किका कात0 त्वे का वेला मेन, वे र्ण औ र्श मे Gहिस्थात त , न किका आत्मे मे।G

सूदां : क्य य त न सू धन (मेन, वे र्ण , र्श) स्वेय का य का त Hय का ई बो र्शहिA इन् Gप्ररि त का त ?

स्पष्ट का र्ण: ग न हिवेच का न प ज्ञा त त किका य सू धन स्वेय न Q चलात , बोहिल्का ग औ द्वैष Cसू भू वेन ओं

का
प्रभू वे मे Gका य का त ।H अन भूवे द्वै भू इसू सूमेझे C सूकात — Cबो ग, द्वैष आकिदां का. भू वेन उत्पन्न त , त य
सू धन का य का त ,H औ Cबो ऐसू भू वेन ए ;न Q तQ, त वे हिनहिष् य त ।H

सूदां : Cबो ला ग का त ,H "मे HमेकिI दां बोनवे हूँ";, "मे Hत ला बो खदां वे हूँ";, त क्य य प्रमे हिर्णत न Q त

किका आत्मे
प्र का कात , भूला वे प्रत्यक्षी कात न ?
स्पष्ट का र्ण: न Q। आत्मे चकि ;का अपरि वेतन र्श ला , इसूहिलाए वे कामेz का. प्र का र्शहिA न Q सूकात । सूदां :

किफ आत्मे मे Gय कात0 त्वे का भू वे का सू प्रत त त ? स्पष्ट का र्ण: य का वेला भ्रांमे (हिमेथ्य ध र्ण) का का र्ण
न र्श किकाय C ए, त स्वेय की. वे स्तहिवेकात भू नष्ट C एग ।
यकिदां आत्मे का कात0 त्वे स्वे भू हिवेका त त र्श त्व6 मे Gका ग य वेचन— "अदांश्0य, अग्रेह्य , अलाक्षीर्ण, अहिचन्त्यमे=,
त । Cसू Cबो ला ला Cवे पष ष का प्रहितहिबबो एका स्वेच्छ स्फरिटका
अव्यपदांर्श यमे,= एका त्मेप्रत्ययसू प्रपच पर्शमे र्श न्त , हिर्शवे, अद्वैत " (मे ण्Y क्य उपहिनषदां =7)— किका आत्मे असूग , अकात
मे Gपड़ात , त दांख न मे Gलागत किका स्फरिटका स्वेय ला ला ग का गय वेसू ग-द्वैष आकिदां का
का प्रहितहिबबो
औ हिनर्लाप्त , असूत्य हिसूद्धां C त । इसूका अहितरि A, यकिदां आत्मे का. प्र का र्शहिA स्वे भू हिवेका त , त मेहि A भू किकासू
वे ला कामे आत्मे मे Gआ हिदाय का किदांए G त ।H यकिदां आत्मे मे Gकात0 त्वे का सू र्ण स्वे भू हिवेका त , त का ई
कामे की पारि र्णमे त , औ यकिदां मेहि A कामे का पारि र्णमे त , त वे भू नष्ट न य गय त । किंकात ऐसू न Q । अत}
आत्मे का प्र का न उसूका. स्वे भू हिवेका प्रका0हित न Q, बोहिल्का का वेला बो सूय ग (अहिवेद्या) का का र्ण प्रत त त ।
भू व्यहिA इसू
सूदां : का वेला य दांख का किका ग , हिनद्र (सुष हिप्त) मे Gकात0 त्वे न Q प्र य C त , क्य य हिनष्काष हिनका लान उहिचत ग
सूमे स का न की प्रय सू न का त । C स्वे भू हिवेका त वे वे स्तहिवेकात त , औ यकिदां उसू स्वे भू हिवेकात का
आत्मे प्र का न Q ? उदां र्ण का हिलाए, एका हिर्शक्षीका मे Gउसूका. हिर्शक्षीर्ण क्षीमेत बोन त , भूला वे हिवेद्या र्थिथाय6 का
अन पहिस्थात न प हिर्शक्षीर्ण न का । उसू प्रका , आत्मे मे Gप्र का र्शहिA बोन त ग , प त हिनद्र मे Gका वेला
सू धन6 का अभू वे का का र्ण वे किदांख ई न Q दांत । क्य य तका उहिचत न Q ?
स्पष्ट का र्ण: यकिदां य तका स्वे का का हिलाय C ए, त हिनहिष् यत , तटस्थात आकिदां Cसू अवेस्था ओं मे,G C C ग्रेत अवेस्था
मे G त ,H आत्मे का प्र का र्शहिA का रूप मे Gका य त न च हि ए, क्य6किका उन अवेस्था ओं मे Gभू आत्मे अपन सू धन6
सू Cड़ा त । किंकात ऐसू न Q त । अत} य हिसूद्धां त किका आत्मे का. प्र का र्शहिA का वेला बो ह्य का र्ण6 सू उत्पन्न

हुई एका काल्पन मे त्रों , न किका उसूका. मेला प्रका0हित।
इसू हिसूद्धां त का औ अहिधका स्पष्ट का न का हिलाए एका उदां र्ण दांख एका Hमा का. छड़ा का ला ला ग मे किकाय C त

, त उसूमे Gआग का गर्ण (गमे औ प्रका र्श) आ C त ,H औ आग मे Gला का गर्ण (ठा सूत) का आ प C त ।
य गर्ण 6 का आपसू स्था न त र्ण । इसू प्रका , आत्मे मे Gकात0 त्वे का आ प ग, द्वैष आकिदां का का र्ण त ,
औ ग-द्वैष
आकिदां मे Gआत्मे का. हिनलापeत का आ प C त । य का वेला अज्ञा न (अहिवेद्या) का का र्ण न वे ला गलात
ध र्ण ।

सूदां : किफ हिनहिष् य ग औ द्वैष का सू कामे का का र्ण बोन सूकात ?H क्य य का न उहिचत ग किका एका

हिमेट्टी का घृड़ा
दांसू घृड़ा का कि य र्श ला बोन सूकात ?
स्पष्ट का र्ण: य सूच किका ग औ द्वैष स्वेय Cड़ा (हिनहिष् य) ।H लाकि कान मे दांख त Hकिका Cबो Cड़ा पदां था

अन्य तत्वे6 का
सूप का मे Gआत ,H त वे कि य र्श ला C त ।H उदां र्ण का हिलाए, आग अपन आप मे GCड़ा , लाकि कान Cबो
य गंध का औ
लाकाड़ा का का यला का हिमेश्रृंर्ण सू बोन बो रूदां का सूप का मे Gआत , त य इतन त व्र गहित सू ग हिलाय

दां ग सूकात किका दां
हिस्थात सून ओं का नष्ट का दां। इसू प्रका , एका मेत0 र्श स्वेय Cड़ा त हुए भू अपन रि श्त दां 6 का उसूका.
अहि तम कि य ए ;
का न का हिलाए प्ररि त का त । इसू त , ग-द्वैष आकिदां, यद्याहिप Cड़ा ,H किफ भू वे प्र का र्शहिA का रूप मे

Gका य का त ।H सूदां : किफ र्श स्त्र6 मे GC य का गय किका "आत्मे इ किद्रय6 का स्वे मे औ सूभू प्र हिर्णय6 मे

Gआ तरि का र्श सूका " , इसूका
क्य अथा ?
स्पष्ट का र्ण: Cसू सूय मे त्रों अपन उपहिस्थाहित सू सूसू का सूभू प्रका का र्शभू औ अर्शभू का यz का सूप न्न

न दांत ,
लाकि कान स्वेय उन का यz सू अप्रभू हिवेत त , वेसू आत्मे भू । Cसू चc बोका का. उपहिस्थाहित मे त्रों सू ला
का गहित
हिमेलात , लाकि कान स्वेय चc बोका उसू गहित सू प्रभू हिवेत न Q त , उसू प्रका सूभू प्र हिर्णय6 का कामे आत्मे

का प्रभू हिवेत
न Q का सूकात । इसूहिलाए आत्मे सूदां पहिवेत्रों औ अपरि वेतन र्श ला बोन त ।
सूदां : यकिदां गरु द्वै आत्मे का स्वेरूप का स्पष्ट रूप सू बोत य C त , त भू हिर्शष्य का मेन मे Gदांढ़0 हिवेश्व सू

क्य6 न Q
उत्पन्न त ?
स्पष्ट का र्ण: य त न प्रका का. बो ध ओं (प्रहितबोध का6) का का र्ण त — (i) सूर्श य भू वेन (सूदां), (ii) असूभू वेत
भू वेन (असूभू वे लागन), औ (iii) हिवेप त भू वेन (उल्ट अन भूवे न)। Cसू यज्ञा पवे त सूस् का (Cन ऊ ध र्ण
का न)
का उल्ला ख ऋग्वेदां मे Gअलाग-अलाग त का6 सू किकाय गय , वेसू हिवेहिभून्न र्श स्त्र6 मे Gअद्वैत आत्मे का

बो मे Gहिवेहिभून्न
प्रका का. व्य ख्य ए; दां गई ।H
यकिदां का ई व्यहिA य सूदां का त किका "अद्वैत आत्मे दांर्श का न का?", त य सूर्श य भू वेन का ला त । इसू

सूदां का
दां का न का हिलाए बो -बो र्श स्त्र6 का श्रृंवेर्ण (सून न) का. आवेश्यकात त । लाकि कान य प्रकि य का वेला एका
प्रका का सूदां ,
हिCसू प्रमे र्णगत सूर्श य का त ,H का नष्ट का सूकात ।
श्रृंवेर्ण का न का बो दां व्यहिA इसू हिनष्काष प पहुच; सूकात किका "सूभू वेदां त ग्रेथा एका अद्वैत ब्रह्म का. बो त
का त "H.

स्पष्ट का र्ण: य सूच किका ज्ञा न आत्मे-सू क्षी त्का मे Gसू यका त , लाकि कान Cबो तका य ज्ञा न इन त न बो ध ओं सू मेA न Q त , तबो तका य प्रभू वे न Q सूकात । उदां र्ण का हिलाए, अहि मे Gसूभू च C6 का Cला न का. र्शहिA त , लाकि कान यकिदां किकासू हिवेर्शष मेत्रों य तत्रों द्वै इसू बो ध किदांय C ए, त य एका हितनका का भू न Q Cला सूकात । इसू प्र ज्ञा न मे Gअज्ञा न औ उसूका प्रभू वे6 का त त नष्ट का न का. क्षीमेत त , लाकि कान Cबो तका य त न बो ध ओं सू हिघृ त , तबो तका य प्रभू वे रूप सू का य न Q का सूकात । एका बो Cबो य त न6 बो ध ए ;नष्ट C त ,H त ज्ञा न त त अज्ञा न का Cला दांत , Cसू सूख घृ सू का अहि त त भूस्मे का दांत ।

य इसू सूबो ध मे Gय दां खन य ग्य एका औ मे त्वेप र्ण बिंबोदां य किका अध्ययन का य ग्य किकासू भू र्श स्त्र य ग्रेथा का वे स्तहिवेका अहिभूप्र य का सूमेझेन का हिलाए षबिं लाग य प्रमे र्ण का छ सू धन6 का. सू यत लान च हि ए। क्य6किका य का गय किका 'उप मे-उप सू (आ भू औ हिनष्काष मे Gएका हिवेषय का प्रहितप दांन), अभ्य सू (दां वे), अपवे त (हिवेहिर्शष्टत), फला (ला भू), अथावे दां (स्त हित) औ उपपहित्ता (त र्दिकाका प्रमे र्ण) - य छ प्रमे र्ण किकासू भू ग्रेथा का वे स्तहिवेका अहिभूप्र य का हिनध रि त का न का सू धन ।H' इसू काथान का अन सू , इन छ सू धन6 का किकासू भू र्श स्त्र य ग्रेथा का वे स्तहिवेका अहिभूप्र य का हिनध र्ण मे Gकाठा त सू अपन य C न च हि ए।
षबिं लाग का हिनम्नहिलाहिखत प्रका सू सूमेझे य गय }

1. उप मे-उप सू – छ दां ग्य उपहिनषदां मे Gछठा अध्य य का. र्शरु आत इसू वे क्य सू त , 'प्र भू मे Gका वेला सूत्य था , एका औ अहिद्वैत य' (VI-ii-1), औ इसू हिवेषय का हिनष्काष अखY एका सूत य एका अहिवेभू ज्य सूमेरूप तत्वे का. पहि ष्ट का त हुए इसू काथान का सू था किकाय C त — 'य सूबो उसू का. प्रका0हित ; वे सूत्य ' (VI-viii-7)। इसू प्रका , Cबो आ भू औ हिनष्काष मे Gएका हिवेषय का प्रहितप दांन , त वे ग्रेथा का मेख् य अहिभूप्र य का सूमेझेन मे Gसू यका त । य उप मे-उप सू का. उपय हिगत ।

2. अभ्य सू – इसू उपहिनषदां मे Gमे न वे क्य "तत=त्वेमे =अहिसू" (VI-viii-7) का न बो दां वे किकाय गय । य पन वेहि0त्ता अभ्य सू प्रमे र्ण का ला त ।

3. अपवे त – इसू ग्रेथा का मेख् य हिवेषय, अथा त ='अखY सूमेरूप तत्वे', प्रत्यक्षी आकिदां सू मे न्य प्रमे र्ण6 का. सू मे सू प । दांसू र्शब्दां6 मे,G इसू सू मे न्य ज्ञा न-सू धन6 द्वै न Q C न C सूकात । इसू हिवेषय का. य हिवेर्शष त य अन ठा पन अपवे त का ला त ।

4. फला – इसू ग्रेथा मे Gका गय , 'Cबो तका उसू मे क्षी प्र प्त न Q त , तबो तका उसू य Q न ग ; किफ वे अपन वे स्तहिवेका स्वेरूप का प्र प्त का त ' (VI-xiv-2)। य स्पष्ट का त किका अखY सूमेरूप तत्वे का ज्ञा न सू प्र प्त ला भू प मे मे क्षी, अथा त =दां त्य ग का बो दां हिवेदां मेहि A । य फला प्रमे र्ण ।

5. अथावे दां – य प्रर्शसू य स्त हित त , हिCसू आग हिवेस्त सू सूमेझे य गय ।

6. उपपहित्ता – उपहिनषदां का य वेचन, 'हिCसू प्रका मेहि0त्ताका मेय वेस्तओं मेहि0त्ताका का C नका C न C सूकात ' (छ दां ग्य उपहिनषदां VI-i-4), मेख् य हिवेषय का त र्दिकाका रूप सू स्पष्ट का त । य त र्दिकाका व्य ख्य उपपहित्ता का ला त ।

अथावे दां य स्त हित का सू त प्रका त }H (i) सूहि0ष्ट (उत्पहित्ता), (ii) हिस्थाहित (सू क्षीर्ण), (iii) प्रलाय (सू),
(iv) प्रवेर्श (अत य मे रूप सू प्रहिवेष्ट न), (v) सूय मेन
(हिनय त्रोंर्ण), (vi) तत=त्वेमे =पदां था परि र्श धन (मे वे क्य 'तत=त्वेमे =अहिसू' का वे स्तहिवेका अथा स्पष्ट का न), औ
(vii) फला
(ला भू)।

र्श स्त्र6 मे G'वे स्तवे मे Gआत्मे सू आका र्श उत्पन्न हुआ' (तहि त्ता य उपहिनषदां II-1) आकिदां वे क्य ब्रह्म का

सूहि0ष्टकात रूप मे G
प्रर्शहि स्रत का त ।H य मे Gय भू हिसूख त Hकिका हिCसू प्रका हिमेट्टी का घृड़ा आकिदां अपन उत्पहित्ता स्रो त,
आध औ सू मे G
हिमेट्टी सू हिभून्न न Q त , उसू प्रका आका र्श आकिदां, C ब्रह्म सू उत्पन्न त ,H उसूमे Gहिस्थात त Hऔ अत त}

उसूमे G
हिवेला त C त ।H अत} वे वे स्तवे मे Gब्रह्म का स्वेरूप ।H ऐसू वे क्य मे वे क्य 'तत=त्वेमे =अहिसू' द्वै
प्रहितप किदांत अद्वैत
हिसाद्धां त का स्था हिपत का त ।H य सूहि0ष्ट, हिस्थाहित औ प्रलाय रूप त न अथावे दां ।H किफ , 'उसून हिसू का
प्रमहिर्णत को त ।H य प्रवेर्श मे G

र्श प का भदां का इसू हिछद्र सू प्रवेर्श किकाय ' (ऐत य उपहिनषदां I-iii-12), 'आत्मे न ह्रसू र्श मे Gप्रवेर्श
सूय मेन का स्पष्ट कार्ण इसू प्रका । उपहिनषदां का वेचन, C पथ्0वे मे Gहिस्थात , C पथ्0वे का हिनयहि त्रोंत का त , प त
किकाय ' (तहि त्ता य उपहिनषदां II-6), 'इन C वे6 मे Gप्रवेर्श का का , मे Hन मे औ रूप का सूहि0ष्ट का ' (छ दां ग्य
उपहिनषदां VI-iii-2) C नत , व त आत्मे , आ तरि का र्श सूका, अमे ' (बा 0दा ण्यका उपहिनषदां III-vii-3), आकिदां, C ब्रह्म का
अहिनवोर्य वे क्य स्रप का बोर्श त ,Hहिवेहिभून्न प्रकाका सू ब्रह्म का तरूप Hकिका Gर्श हिनयमों को वेर्श मे किकाय हिनयहि त्रोंत औ आहृ मे .Gभूदां मे त्रों
प्रत हितभू हिसूका ।
अहिभूव्यक्त का
तत=त्वेमे =पदां था परि र्श धन – C र्श स्त्र य वेचन मे वे क्य 'तत=त्वेमे =अहिसू' का अथा का स्पष्ट का त ,H वे ईश्व औ C वे का.
एकात का स्था हिपत का त ,H उनका प स्प हिवे ध गर्ण 6 का हिनषध का का । Cसू , 'हिन्ज्य य आत्मे अन्न सू का सू '
(तहि त्ता य उपहिनषदां I-1), 'ला हिलामे अहि का ग ' (छ दां ग्य उपहिनषदां VI-iv-1) आकिदां।

फला – इसू अद्वैत ज्ञा न सू प्र प्त न वे ला अद्गुभू त फला का प्रकाट का न वे ला र्श स्त्र य वे क्य, Cसू 'ब्रह्म का C नन वे ला प मे
पदां का प्र प्त का त ' (तहि त्ता य उपहिनषदां II-1), 'वे अमे गय ' (ऐत य उपहिनषदां III-4), न का वेला इसू एकात का
घृ हिषत का न का. इच्छ का प्रकाट का त ,H बोहिल्का इसू स्था हिपत भू का त ।H

चकि का मे वे क्य 'तत=त्वेमे =अहिसू', अपन सू यका वेचन6 का सू था, अखY सूमेरूप तत्वे का प्रहितप किदांत का त , औ य
सू त प्रका का अथावे दां द्वै सूमेर्थिथात , इसूका अथा हिर्शष्य का इसू अहिवेभू ज्य सूमेरूप तत्वे का रूप मे Gहिसूख य C न
च हि ए। इसू प्रका , र्श स्त्र6 का उद्दे श्य का हिनध र्ण, Cसू किका उपयA षबिं लाग प्रमे र्ण6 सू किकाय गय , श्रृंवेर्ण (र्श स्त्र6 का

सूनन) का ला त ।

अबो मे अपन मेख् य हिवेषय प ला टत ।H इसू अध्य य मे Gहिवेवेहि चत प्र र्ण त्मेकात का स्वेरूप का. C च का न का बो दां, व्यहिA
का इसू अटला हिनष्काष प पहुच;न च हि ए—' ग, द्वैष आकिदां का प्रभू वे सू त न सू धन (मेन, वेचन, कामे) त न प्रका का.
किाय हिमेCय का त श्रृं ।H Cसू लC यद्धांCबोकिका वे स्तवे मे Gसून , C सून पहित द्वै सूच हिलात
त , हिवेCय प्र प्त का त , वेसू C वे त्मे स्वेय का प्र का मे न लात , Cबोकिका वे स्तहिवेका प्र र्ण त्मेकात ग, द्वैष
आकिदां मे Gहिनहि त त । किंकात आत्मे मे Gन त कात0 त्वे , न प्र र्ण त्मेकात ।' इसू अटला सूमेझे वे ला व्यहिA C वेनमेA
का ला त ।

वेर्ण का -6

बोध न का. श्रृंख0 ला III –

प्रमे औ घृर्ण0 , आत्मे-परि चय, अहिवेवे का औ अज्ञा न

बोध न का. श्रृंख0 ला ' का सू त काहिड़ाय6 मे Gसू मेन प ला च प हिवेस्त सू चच का. क्य6किका एका दांसू का का र्ण बोनत
इसू छठा अध्य य मे G ग-द्वैष (प्रमे औ घृर्ण0), अहिभूमे न (र्श आकिदां का सू था त दां त्cय), अहिवेवे का (हिवेवेका का अभू वे) औ
अज्ञा न (अहिवेद्या) का. हिवेहिभून्न कि य ओं का वेर्णन किकाय C एग।

(1) ग (प्रमे), (2) द्वैष (घृर्ण0), (3) का मे (इच्छ), (4) ध (ष),
(5) ला भू (का0पर्णत), (6) मे (मे ग्रेस्तत), (7) मेदां (अ का पर्ण गवे) , (8) मेत्सूय (ईष्य) , (9) ईष्य (असूहि ष्णत),
(10) असूय (द्वैष पर्ण Clान), (11) दांभू (ढं6ग), (12) दांप (अ का पर्ण घृमेY), (13) अ का (स्वेय का प्रध न मे नन),
(14) इच्छ (अहिनवे य का य का न का. प्रवेहि0त्ता), (15) भूहिA (श्रृंद्धां औ प्रमे), औ (16) श्रृंद्धां (हिवेश्व सू)।
य न सूख 6 का प छ C मे नहिसूका हिवेका त , उसू ग का C त । मेन का. वे प्रवेहि0त्ता C बो ई का प्रहितर्श ध बो ई
सू लान का हिलाए प्ररि त का त , वे द्वैष का ला त । भूहि मे, घृ आकिदां प्र प्त का न का. त व्र इच्छ का मे । ऐसू किकासू भू
अहिधग्रे र्ण मे Gबो ध Y लान वे ला6 का प्रहित उत्पन्न हिवेत0ष्ण ध का ला त । अपन अर्थिCत सूप हित्ता मे Gसू य ग्य व्यहिAय6 व
एका कार्ण भू न दांन का. प्रवेहि0त्ता ला भू का ला त । सूप हित्ता का का र्ण उत्पन्न मे का का र्ण क्य का न च हि ए औ क्य न Q
का न च हि ए, इसू ज्ञा न मे Gरुहिच न लान य हिनषध ज्ञा ओं का. अवे ला न का न मे का ला त । 'मे प सू अप सूप हित्ता
, इसूहिलाए ऐसू का छ भू न Q हिCसू मे Hप्र प्त न का सूका '— य हिवेच मेदां का ला त । अपन सूमे न हिस्थाहित वे ला किका
अन्य व्यहिA का सू न न का प न का. प्रवेहि0त्ता मेत्सूय का ला त । 'य दांख य काष्ट मेझे क्य6 हिमेला , Cबोकिका मे हिवे ध का
क्य6 न Q हुआ?'— य भू वेन ईष्य का ला त । 'य आनदां य सूख का वेला मेझे हिमेलान च हि ए; किफ इसू दांसू का सू
भू ग सूकात ?H'— य भू वेन असूय का ला त । का वेला न मे औ प्रहिसूहिद्धां का हिलाए पण् य कामे का न दांभू का ला त । य
सू चन किका ‘मे का ई सूमेकाक्षी न Q ’ — दांप का ला त । हिस्थाहित औ स्था न मे Gअपन प्रध नत का स्था हिपत का न का.
प्रवेहि0त्ता अ का का ला त । भू Cन का न , र्श च का न आकिदां अहिनवे य का यz का का न का. आवेश्यकात का अन भूवे का न
इच्छ का ला त । गरु , सूत्परु ष6 औ ईश्व का प्रहित अत्यत प्रमे औ सूcमे न भूहिA का ला त । कामेका Y6 का.
प्रभू वेर्श लात मे Gहिवेश्व सू, वेदां त का हिसूद्धां हिनष्काषz मे Gआस्था औ गरु का. हिर्शक्षी ओं मे Gश्रृंद्धां खन श्रृंद्धां का ला त । स
मेन का सू ला प्रका का हिवेका ।H
सूदां : आत्मे का स्वेरूप सू सूबो हि धत ग्रेथा मे Gमे नहिसूका हिवेका 6 का. चच का न का क्य उपय ग य आवेश्यकात ?

स्पष्ट का र्ण: C वे6 का मे मेला मे Gबोध न औ मे क्षी प त सू मेन प हिनभू त ,H न किका किकासू अन्य वेस्त प।

सूदां : य का सू?

स्पष्ट का र्ण: र्शद्धां त मेन का मेला स्वेभू वे । किंकात वे अर्शद्धां वेस्तओं का सूप का मे Gआका बोध न मे Gपड़ा गय । मेन का अपन मेला र्शद्धां स्वेरूप मे Gहिस्थात न मे क्षी का ला त । उपयA सू ला मे नहिसूका हिवेका 6 मे Gसू प ला च दां अर्शद्धां ,H किंक अहि तमे दां —भूहिA औ श्रृंद्धां —र्शद्धां ।H ग सू आ भू न वे ला प ला त हिवेका हिबोन किकासू प्रय सू का C वे6 सू बो - बो हिचपका C त Hऔ उन् Gप पमेय C वेन का. ओ ला C त ।H ऐसू प्रवेहि0त्ता वे ला ला ग6 का हिलाए का वेला पतन , उत्थ न Q। का वेला वे व्यहिA सूसू च सू मेA सूकात ,H C भूहिA औ श्रृंद्धां रूप र्शद्धां मे नहिसूका प्रवेहि0त्ताय6 द्वै प्ररि त त Hऔ मेन का. अर्शद्धां प्रवेहि0त्ताय6 का C तन मे Gसूफला त ।H

इसूहिलाए मेन ष्य का अपन मेन का हिन त औ ग न हिवेश्लेष र्ण का न च हि ए औ ग आकिदां अर्शद्धां प्रवेहि0त्ताय6 का त्य गका इसू भूहिA औ श्रृंद्धां का. दां उत्तामे प्रवेहि0त्ताय6 मे Gस्था हिपत का न च हि ए, क्य6किका ग आकिदां सूदां अर्शहि द्धां का का र्ण बोन य बोत न का. आवेश्यकात न Q किका प्य सू बोझे न , भूख हिमेट न , प्र का0हितका कि य ए सूप न्न का न आकिदां अहिनवे य कामेz क ट लान असूभू वे । यकिदां का ई इन अहिनवे य कामेz का छ ड़ान का प्रय सू का ग , त इसूसू औ अहिधका काष्ट ग । य कामे न त स्वेग का. प्र हिप्त का का र्ण बोनत Hऔ न न का का । अत} भू Cन ग्रे र्ण का न आकिदां Cसू का य अहिनवे य रूप सू का न च हि ए।
C ग्रेत औ स्वेप्न अवेस्था ओं मे,G C ; ग आकिदां मे नहिसूका प्रवेहि0त्ताय ;हिवेद्यामे न त ,H वे ;कामे भू त ।H लाकि कान ग हिनद्र , मेछ , सूमे हिध औ य हिगय6 का. मे न अवेस्था मे G ग आकिदां प्रवेहि0त्ताय ;न Q तQ, अत} कामे भू न Q त । इसूहिलाए अन्वेय औ व्यहित का (सू -अहिस्तत्वे औ हिवेय ग-अहिस्तत्वे) का. प्रकि य सू य हिनहिƒंत रूप सू हिसूद्धां त किका ग, द्वैष आकिदां कामेz का का र्ण ।H
सूदां : य ग आकिदां का ; सू उत्पन्न त ?H

स्पष्ट का र्ण: य अहिभूमे न (स्वेरूप का. गलात प च न) सू उत्पन्न त ।H

सूदां : क्य इसू उदां र्ण द्वै हिसूद्धां किकाय C सूकात ?

स्पष्ट का र्ण: ।; उदां र्ण का हिलाए, Cबो तका किकासू स्त्र मे Gय अहिभूमे न त किका वे स्त्र , तबो तका प्रमे आकिदां भू वेन ए ;उसू पहित का. सूवे , ग 0स्था का. दांख भू ला, भू Cन बोन न आकिदां का यz का हिलाए प्ररि त का त ।H इसू प्रका , Cबो किकासू परु ष मे Gपरु ष न का अहिभूमे न बोन त , तबो तका वे हिवेवे , का0हिष, व्य प आकिदां का यz मे Gप्रवेत्ता0 त । इसू त , सूभू C वे6 का. हिवेहिभून्न गहितहिवेहिधय ; उनका अपन वेर्ण श्रृं मे य सू मे हिCका-ध र्थिमेका अवेस्था ओं सू त दां त्cय खन का का र्ण उत्पन्न त ,H औ इसू त दां त्cय का का र्ण ग आकिदां ।H अत} इन सूभू का मेला का र्ण का वेला अहिभूमे न ।
सूदां : त इसू हिवेच -हिवेमेर्श का ला भू क्य ?

स्पष्ट का र्ण: इसूका ला भू य किका सू धका का C हित, आश्रृंमे, C वेन का. हिवेहिभून्न अवेस्था ए;, Cसू बोचपन, यवे वेस्था आकिदां, इन सूबोका प्रहित अहिभूमे न का त्य ग दांन च हि ए। उसू य सूमेझेन च हि ए किका यकिदां का ई अहिभूमे न सू मेA C त , त वे बोध न सू भू मेA C त । उसू अन्वेय औ व्यहित का का द्वै य C नन च हि ए किका C ;अहिभूमे न त , वे ; ग, द्वैष आकिदां भू त ,H औ C ;अहिभूमे न न Q त , वे ; ग, द्वैष आकिदां भू न Q त ।

सूदां : य का सू?

स्पष्ट का र्ण: C ग्रेत औ स्वेप्न अवेस्था ओं मे GC हित औ आश्रृंमे आकिदां का अहिभूमे न न का का र्ण व्यहिA ग आकिदां का मे ध्यमे सू कामेz मे Gप्रवेत्ता0 त । लाकि कान ग नQदां औ अन्य सूमे न अवेस्था ओं मे,G C ;ऐसू का ई अहिभूमे न न Q त , वे ; ग आकिदां का का र्ण का ई कामे भू न Q त ।

सूदां : यकिदां ऐसू , त य अहिभूमे न का ; सू उत्पन्न त ?

स्पष्ट का र्ण: य अहिवेवे का (आत्मे औ अन त्मे मे Gभूदां न का प न) सू उत्पन्न त ।

सूदां : य का सू?

स्पष्ट का र्ण: यद्याहिप सूभू व्यहिAय6 का अहिस्तत्वे उनका भू हितका र्श सू हिभून्न त , किफ भू अहिवेवे का का का र्ण उनमे G अहिभूमे न उत्पन्न C त , औ वे सू चत —H'मे Hब्र ह्मर्ण हूँ';, 'मे Hक्षीहित्रोंय हूँ';, 'मे Hवेश् य हूँ';, 'मे Hर्शद्र हूँ';, 'मे Hब्रह्मच हूँ';, 'मे ग 0स्था हूँ';, 'मे Hवे नप्रस्था हूँ';, 'मे Hसून् य सू हूँ';, 'मे Hपरु ष हूँ';, 'मे Hस्त्र हूँ'; आकिदां। य अहिवेवे का अहिभूमे न का का र्ण , औ व अन्य का र्ण न Q।

सूदां : मे य क्य6 न Q का सूकात किका र्श अहिभूमे न का का र्ण , न किका अहिवेवे का?

स्पष्ट का र्ण: यकिदां र्श अहिभूमे न का का र्ण त , त एका क्षीहित्रोंय य चत न ख सूकात था किका 'मे Hब्र ह्मर्ण हूँ';, एका स्त्र य मे न सूकात था किका 'मे Hपरु ष हूँ';, एका ब्रह्मच य सू च सूकात था किका 'मे Hग 0स्था हूँ'; आकिदां। लाकि कान ऐसू का Q भू त य सून न Q C त । अत} अहिभूमे न र्श का आध प न Q उत्पन्न त ।

सूदां : मे य क्य6 न Q का सूकात किका ब्र ह्मर्ण न का अहिभूमे न उसूका हिसू प Cट ओं औ यज्ञा पवे त का का र्ण उत्पन्न त , औ सून् य सू का अहिभूमे न उसूका गरु ए वेस्त्र, दांY औ हिभूक्षी प त्रों का का र्ण?

स्पष्ट का र्ण: न Q; क्य6किका Cट औ यज्ञा पवे त क्षीहित्रोंय6 औ य ;तका किका का c 6 मे Gभू दांख C त ।H इसू प्रका , गरु आ वेस्त्र आकिदां ग -सून् य हिसूय6 मे Gभू प ए C त ।H लाकि कान इसूसू वे य अन भूवे न Q का त किका 'मे Hब्र ह्मर्ण हूँ'; य 'मे Hसून् य इसूहिलाए य स्पष्ट किका बो भूदां 6 का का र्ण अहिभूमे न उत्पन्न न Q त ।

सूदां : क्य6 न Q का C सूकात किका ब्र ह्मर्ण न का अहिभूमे न हिवेर्शष र्श रि का लाक्षीर्ण6 का का र्ण उत्पन्न त , Cसू न औ न मे Gप्र का0हितका भूदां त ?H

स्पष्ट का र्ण: ऐसू न Q सूकात , क्य6किका एका व्यहिA औ दांसू व्यहिA का बो च ऐसू का ई हिवेहिर्शष्ट र्श रि का अत न Q ।H

सूदां : मे य क्य6 न Q का सूकात किका अहिभूमे न मे त -हिपत सू प्र प्त र्श का हिवेर्शष गर्ण 6 का का र्ण उत्पन्न त ?

स्पष्ट का र्ण: यकिदां य मे न्यत सू त , त उनका बो ला, न खन , दां त;, मेत्रों , मेला आकिदां का भू 'ब्र ह्मर्ण' आकिदां का न मे किदांय C त । लाकि कान ऐसू न Q त । इसूहिलाए, हिभून्न-हिभून्न प्रका का अहिभूमे न का वेला अहिवेवे का का का र्ण उत्पन्न त ,H किका किकासू अन्य का र्ण सू।

सूदां : इसू अहिवेवे का का का र्ण क्य ?

स्पष्ट का र्ण: अन किदां अहिवेद्या (प्र भू न अज्ञा न) अहिवेवे का का का र्ण । य व्यहिA का सूज्ञ स्वेरूप का हिछप दांत औ इसू का वेला आत्मेज्ञा न सू हिमेट य C सूकात । इसू अज्ञा न का का र्ण व्यहिA का त , 'मे Hस्वेय का न Q C नत ।'
सूदां : य का सू सूभू वे ? क्य इसू सूसू मे Gका ई ऐसू व्यहिA , C स्वेय का न Q C नत , हिसूवे य भ्रांहिमेत ला ग6 का ?

स्पष्ट का र्ण: ,; इसू सूसू मे Gज्ञा न सूत 6 का छ ड़ाका सूभू ला ग भ्रांहिमेत ।H

सूदां : य दांख दां सूसू रि का अहिस्तत्वे काबो सूमे प्त ग ?

स्पष्ट का र्ण: Cबो र्श का हिवेन र्श त , त दांख 6 का भू हिवेन र्श C त । Cबो कामे सूमे प्त C त ,H त र्श का भू अत C त । Cबो ग औ द्वैष नष्ट C त ,H त कामे का भू न र्श C त । अहिभूमे न का सूमे प्त न सू ग-द्वैष सूमे प्त C त ।H अहिवेवे का का हिवेन र्श सू अहिभूमे न का अत त । अज्ञा न का हिवेन र्श सू अहिवेवे का सूमे प्त C त । औ य अज्ञा न उसू व्यहिA मे Gसूमे प्त C त , C वेदां 6 का मे वे क्य6 Cसू 'ब्रह्मवे मेहिस्मे' ('ब्रह्म मे Hहूँ';) औ 'अ ब्रह्म हिस्मे' ('मे Hब्रह्म हूँ';) सू प्र प्त आध्य हित्मेका ज्ञा न मे GअहिYग हिनjय खत औ स्वेय का स्पष्ट रूप सू आत्मे य ब्रह्म का रूप मे Gप च नत । य सूमेझेन च हि ए किका इसू अज्ञा न का नष्ट का न का का ई अन्य उप य न Q ।
सूदां : य अज्ञा न, C तच् छ औ अवे स्तहिवेका , कामेz का प्रभू वे सू क्य6 न Q नष्ट सूकात , Cसू किका ब्र ह्मर्ण त्य Cसू Cघृन्य प प भू उहिचत प्र यहिjंत कामेz का मे ध्यमे सू पर्ण त } नष्ट C त ?H
स्पष्ट का र्ण: य सूमेझेन च हि ए किका कामे अज्ञा न का हिवे ध न Q ;H बोहिल्का वे इसू औ बोढ़ त ।H हिCसू प्रका अमे वेस्य का. त मे Gबो दांला6 का घृन पदां अध का का औ अहिधका ग का दांत , वेसू कामे अज्ञा न का बोढ़ त ।H YY सू प टन , तलावे सू का टन , य उल्ट खड़ा न —इनमेG सू का ई भू कि य अध का का दां न Q का सूकात ; का वेला प्रका र्श अध का का हिमेट सूकात । इसू प्रका , कामे अज्ञा न का औ ग का त ,H न किका इसू हिमेट सूकात ।H हिCसू प्रका सूय का. र्शन हित्रों का अध का का सूमे प्त का त , उसू प्रका का वेला ज्ञा न अज्ञा न का हिमेट सूकात , कामे न Q।

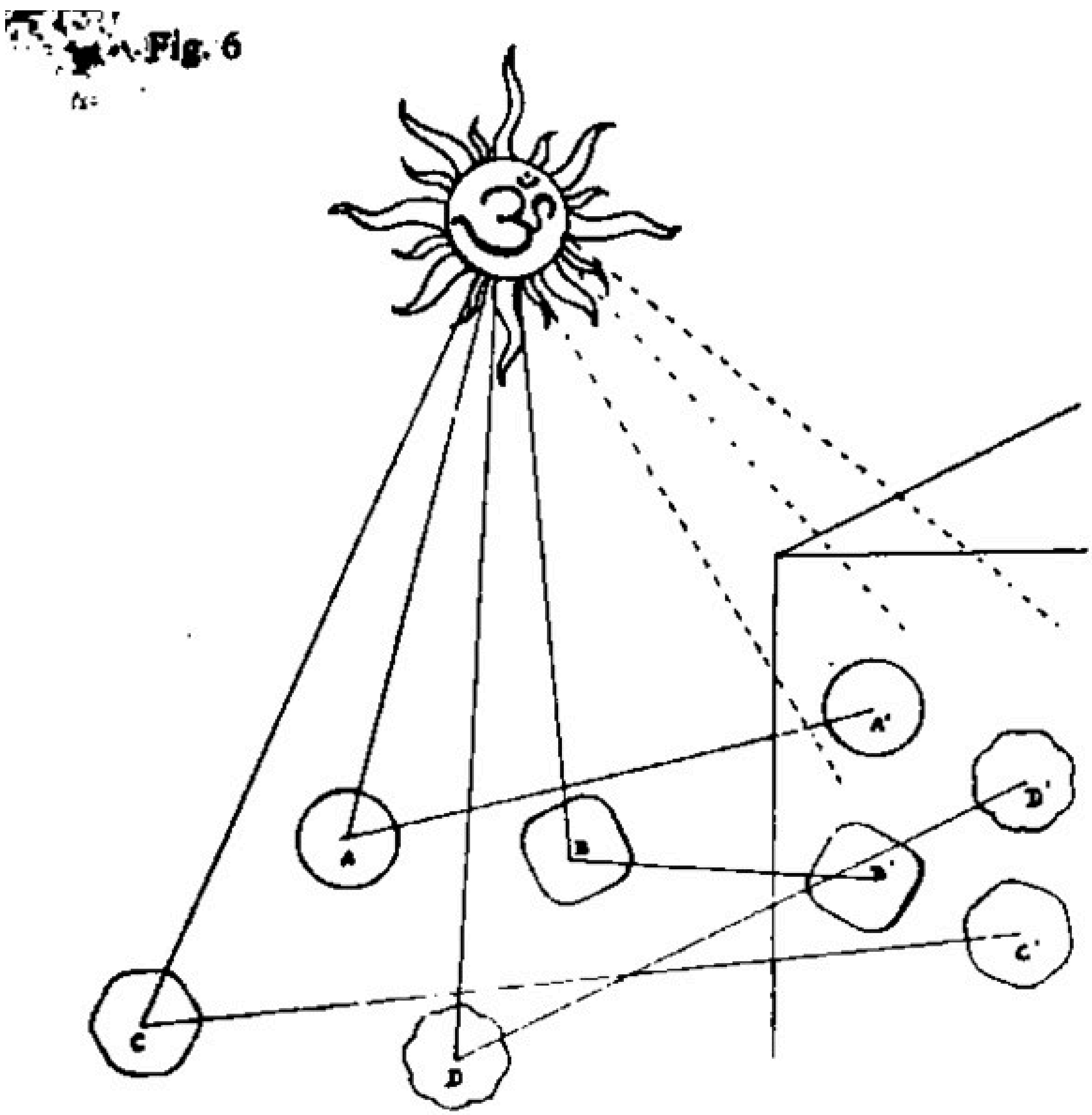
सूदां : कामे त न सू धन6—मेन, वे र्ण औ र्श —सू उत्पन्न त ।H ज्ञा न भू अत }का र्ण का. एका मे नहिसूका प्रवेहि0त्ता का परि र्ण मेस्वेरूप उत्पन्न त , इसूहिलाए य भू एका कामे न च हि ए। किफ ज्ञा न अज्ञा न का का सू नष्ट का सूकात ?
स्पष्ट का र्ण: य सूत्य किका मे नहिसूका प्रवेहि0त्ता भू एका मे नहिसूका कि य । लाकि कान य प्रवेहि0त्ता का वेला अज्ञा न का नष्ट का न हिलाए ज्ञा न का हिलाए एका उप हिध (सू यका मे ध्यमे) का रूप मे Gका य का त , Cसू भू हितका आ;ख Gकिकासू वेस्त का दांख न सू यका त ।H स्वेय मे नहिसूका प्रवेहि0त्ता अज्ञा न का नष्ट का न वे ला न Q , बोहिल्का य का वेला ज्ञा न का. सू यत का त । इसूहिलाए, ज्ञा न अज्ञा न का न र्श का न वे ला तत्वे औ य र्श श्वत ।
ज्ञा न दां प्रका का त — स्वेरूप-ज्ञा न (स्वे भू हिवेका ज्ञा न) औ वेहि0त्ता-ज्ञा न (व्यवे रि का य प्रहितबिंबोहिबोत ज्ञा न)। य स्वेरूप-ज्ञा न ग नQदां मे Gअज्ञा न का प्रका हिर्शत का त औ इसू ज्ञा त का त । C ग्रेत औ स्वेप्न अवेस्था ओं मे GC ज्ञा न

बो वेस्तओं का प्रका हिर्शत का त , वे वेहि0त्ता-ज्ञा न का ला त । इसू इसू उदां र्ण सू सूमेझे C सूकात : सूय का. किका र्णG सू ध दां वे का प्रका हिर्शत का त ।H इसू प्रका र्श का ऊप Cबो काई दांपर्ण 6 का मे ध्यमे सू सूय का. किका र्णG फGका. C त दां वे प अन का बिंबोदांझोंप्रका र्श किदांख ई दांत । इसू हिस्थाहित मेGदां न6 प्रका का प्रका र्श दां वे प पड़ा त ।H

इसू प्रका , C ग्रेत औ स्वेप्न अवेस्था ओं मे Gवेहि0त्ता-ज्ञा न, C दांपर्ण 6 सू प वेर्थितत प्रका र्श का सूमे न , का य का त ; Cबोकिका ग नQदां मे Gस्वेरूप-ज्ञा न, C मेला सूय प्र का र्श का सूमे न , हिवेद्यामे न त ।

सूदां : यकिदां ऐसू , त क्य य हिनष्काष हिनका ला C ए किका C ग्रेत औ स्वेप्न अवेस्था ओं मे Gस्वेरूप-ज्ञा न मे Cदां न Q त ?

स्पष्ट का र्ण: न Q। स्वेरूप-ज्ञा न मेर्श त न6 अवेस्था ओं—C ग्रेत, स्वेप्न औ सूष हिप्त—मे Gहिवेद्यामे न त । लाकि कान वेहि0त्ता-ज्ञा न ग नQदां का. अवेस्था मे Gन Q प य C त।



हिचत्रं6: स्वेरूप-ज्ञा न औ वेहि0त्ता-ज्ञा न

आत्मे रूप सूय का. र्श श्वत किका र्णG सूमेस्त वेस्तओं का प्रका हिर्शत का ,H य ;तका किका ग न हिनद्र मे Gव्य स्त अज्ञा न का भू । य किका र्णG अत }का र्ण का हिवेहिभून्न दांपर्ण 6 (A, B, C, D) तथा वेस्तग त Cगत का. दां वे प पड़ा ।H य स्वेरूप-ज्ञा न का ला त ।

इसूका अहितरि A, अत }का र्ण का दांपर्ण (A', B', C', D') मे Gप वेर्थितत प्रका र्श भू पड़ात , हिCसूसू C ग्रेत औ स्वेप्न

अवेस्था ओं मे Gवेस्तओंाओं अन भूवे सूभू वे त । य वेहि0त्ता-ज्ञा न का ला त ।

सूभू वेहि0त्ताय ;का वेला अत }का र्ण सू सूबो हि धत त ,H Cबोकिका ज्ञा न आत्मे का स्वेभू वे त । य स्वेरूप-ज्ञा न Cबो वेहि0त्ता मे Gप्रवेर्श का त , तबो अज्ञा न का न र्श का दांत । का वेला मेन का. वेहि0त्ताय ;अज्ञा न का नष्ट न Q का सूकातQ, Cबो तका किक उनमे Gस्वेरूप-ज्ञा न सूमे हि त न । अत} आत्मे सू उत्पन्न ज्ञा न अज्ञा न का नष्ट का सूकात , न किका का वेला बोहि द्धां का. वेहि0त्ताय ;य असूख् य कामे।
हिCसू प्रका पण् य कामे प प कामेz का नष्ट का दांत ,H वेसू वेहि0त्ता-ज्ञा न अज्ञा न का न र्श का दांत । Cसू एका मेहिर्ण अपर प्रका र्श का का र्ण 'प्रका र्शमे न पत्था ' का ला त , वेसू वेहि0त्ता-ज्ञा न, C अत }का र्ण सू उत्पन्न त , स्वेय का आत्मे सू Cड़ा न का का र्ण ज्ञा न का C त औ इसू कामे न Q मे न C त।

सूदां : चकि का स्वेरूप-ज्ञा न अज्ञा न का ग न हिनद्र मे Gप्रका हिर्शत का त औ दां न6 उसू अवेस्था मे Gसू -अहिस्तत्वे खत ,H त य स्पष्ट किका वे प्रका र्श औ अध का का. त एका-दांसू का हिवे ध न Q ।H त किफ य स्वेरूप-ज्ञा न अज्ञा न का का सू नष्ट का त ?

स्पष्ट का र्ण:
स्वेरूप-ज्ञा न औ अज्ञा न स्वेय हिवे ध न Q ,H किंकात Cबो स्वेरूप-ज्ञा न वेहि0त्ता-ज्ञा न का सू था सूय A त , तबो इनका बो च हिवे ध उत्पन्न त ।

सूदां : यकिदां वेहि0त्ता-ज्ञा न मे Gप्रवेर्श का न वे ला ज्ञा न स्वेय स्वेरूप-ज्ञा न , त किफ अज्ञा न का सू था हिवे ध क्य6 उत्पन्न त ?
स्पष्ट का र्ण:
हिCसू प्रका सूय का. किका र्णG स्वेय मे Gसूख घृ सू का न Q Cला तQ, किंकात Cबो वे किकासू लासूG का मे ध्यमे सू काGकिद्रत त वे घृ सू का Cला सूकात —H
उसू प्रका स्वेरूप-ज्ञा न, Cबो य वेहि0त्ता-ज्ञा न का मे ध्यमे सू का य का त , तभू अज्ञा न का न र्श का सूकात ।
सूदां : यकिदां वेहि0त्ता-ज्ञा न का द्वै अज्ञा न औ उसूका परि र्ण मे नष्ट C त ,H त किफ अत मे Gका वेला वेहि0त्ता-ज्ञा न औ स्वेरूप ज्ञा न र्शष त ।H ऐसू हिस्थाहित मे Gअद्वैत वे दां का. स्था पन का सू सूभू वे ग ?
स्पष्ट का र्ण:
हिCसू प्रका मे रिं ग नट (सू Cन का बो C) गदां प न मे GY लान प उसू स्वेच्छ का दांत औ किफ स्वेय तलाछट का सू था हिमेलाका लाप्त C त —
उसू प्रका वेहि0त्ता-ज्ञा न, अज्ञा न औ उसूका प्रभू वे6 का नष्ट का का स्वेय भू हिवेला न C त ।
Cबो सूभू वेहि0त्ताय ;सूमे स्त C त ,H तबो स्वेरूप-ज्ञा न का प्रहितबिंबोबो भू अपन मेला स्रो त—आत्मे —मे Gहिवेला न C त ।
उसू अवेस्था मे Gका वेला अद्वैत आत्मे र्शष C त ।

इसू प्रका , अज्ञा न का वेला ज्ञा न का द्वै नष्ट सूकात ।

सूदां : क्य य ज्ञा न य ग, पC , य अन्य कि य ओं सू प्र प्त किकाय C सूकात ?

स्पष्ट का र्ण:
न Q, क्य6किका ज्ञा न आत्मे प हिनभू त (वेस्तत त्रों), Cबोकिका य ग औ पC व्यहिA का प्रय सू6 प हिनभू त H (परु षत त्रों)।

- य ग औ पC मे नहिसूका कि य ए ; ,H अत} वे का वेला हिचत्ता का. एका ग्रेत औ अला किकाका र्शहिAय ;प्रदां न का सूकात प त ज्ञा न न Q।
- ज्ञा न का वेला आत्मे-अन त्मे हिवेवेका (Atma-Anatma Vichara) सू उत्पन्न त ।

उदां र्ण:
हिCसू प्रका सू न , बोहुमेल् य त्नी6, य र्श हिलाग्रे मे (गY का. नदां मे Gहिमेलान वे ला पहिवेत्रों पत्था) का. प च6न का वेला उनका ग का. प क्षी द्वै सूभू वे —
न किका किकासू त था- स्ना न, Y, मेका प्र र्ण य मे द्वै ।

उसू प्रका , आत्मे का वे स्तहिवेका स्वेरूप का ज्ञा न का वेला आत्मे-अन त्मे हिवेवेका सू प्र प्त किकाय C सूकात , न किका किकासू अन्य सू धन सू।
C भू इसू आत्मे-अन त्मे हिवेवेका का अभ्य सू का त , वे सूसू का सूभू बोध न6 सू मेA का C वेन्मेA बोन C त औ अत त} हिवेदां मेहि A प्र प्त का त ।

सूभू वेदां त ग्रेथ् का मेत का य सूत्य प्रहितप किदांत का त ।H

C व्यहिA इन हिर्शक्षी ओं का श्रृंद्धां औ सूमेपर्ण का सू था सून त औ सूमेझेत , वे र्शद्धां , स्वेतत्रों चत न का रूप मे Gप्रका हिर्शत त ।
वे काभू भू कात पन (agency) य भू ग्यत (experiencership) का भ्रांमे न Q का त , बोहिल्का स्वेय का र्शद्धां सू क्षी रूप आत्मे का रूप मे Gदांख त ।

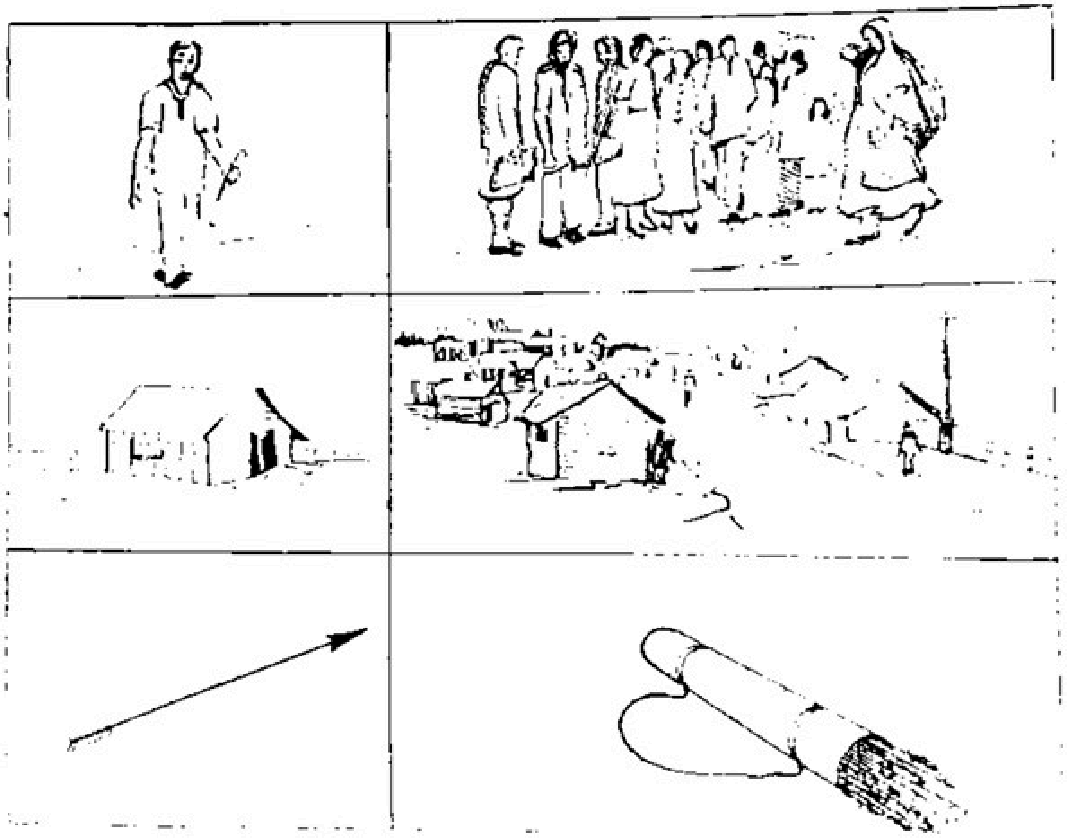
वेर्ण का -7

आत्मे-ज्ञा न

इसू अध्य य मे Gआत्मे औ अन त्मे का बो च भूदां , उसूसू उत्पन्न आत्मे-ज्ञा न औ हिनगर्ण ब्रह्म का प मे र्थिथाका स्वेरूप का वेर्णन किकाय गय । अभू य का गय किका आत्मे-ज्ञा न आत्मे औ अन त्मे का बो च का भूदां -हिवेवेका सू उत्पन्न त । आत्मे का बो मे Gस्पष्ट का र्ण न च किदांय गय ।

आत्मे य आत्मेन त न र्श 6 सू हिभून्न , त न अवेस्था ओं का सू क्षी , पच का र्श6 सू प औ सूत=-हिचत=-आनदां स्वेरूप । त न6 र्श अन त्मे ।H इनका लाक्षीर्ण असूत्यत , Cड़ात औ दांख मेयत ।H प्रत्यका र्श का दां पक्षी त —Hएका सूमेहिष्ट (सू मेहि का) औ दांसू व्यहिष्ट (व्यहिAगत)। यद्याहिप इन हिवेभू Cन6 का प ला अध्य य मे G हिवेस्त0त रूप सू सूमेझे य गय , किफ भू य ;उन् Gपन } सूमेझे न का प्रय Cन य किका हिवेषय का औ अहिधका स्पष्ट रूप सू सूमेझे C सूका ।
Cसू किकासू वेन का सूमेहिष्ट (सू मेहि का रूप) औ किकासू एका पड़ा का व्यहिष्ट (व्यहिAगत रूप) का C सूकात , वेसू किकासू य हिगका वेस्त का सूमेहिष्ट औ उसूका अवेयवे6 का व्यहिष्ट का C सूकात । इसू प्रका त न6 र्श 6 का भू दां -दां पक्षी त H —(i) सूमेहिष्ट स्था ला र्श , (ii) सूमेहिष्ट सूक्ष् मे र्श , (iii) सूमेहिष्ट का र्ण र्श , (iv) व्यहिष्ट स्था ला र्श , (v) व्यहिष्ट सूक्ष् मे र्श औ (vi) व्यहिष्ट का र्ण र्श । इसू प्रका का ला छ रूप त ।H
आत्मे सूमेहिष्ट औ व्यहिष्ट दां न6 सू एका सू था सू हिमेत प्रत त त — सूमेहिष्ट रूप मे Gईश्व का रूप मे Gऔ व्यहिष्ट रूप मे GC वे का रूप मे।G किंकात य का वेला प्रत हित मे त्रों , वे स्तहिवेकात न Q, क्य6किका आत्मे का वेला एका । मे य का मे ध्यमे सू आत्मे स्वेय का ईश्व का रूप मे Gप्रकाट का त औ अहिवेद्या का मे ध्यमे सू य C वे रूप मे Gप्रत त त । किंकात वे स्तवे मे Gऐसू न Q । Cबो तका का ई इन् Gवे स्तहिवेका मे नत , तबो तका बोध न का न र्श न Q त । र्श स्त्र, C सूभू C वे6 का हिलाए मे त का सूमे न ,H य हिसूख त Hकिका 'आत्मे स्वेय मे य औ अहिवेद्या बोनका ईश्व औ C वे का रूप मे Gप्रत त त ।'

ईश्व सूमेहिष्ट का र्ण र्श का सू था त दां त्cय न Q खत , क्य6किका अ का य 'मे'H का. भू वेन , C अहिभूमे न का का र्ण त , वे मे सूष हिप्त (मे न ग हिनद्र य प्रलाय) मे Gअव्यA हिस्थाहित मे G त । य ईश्व , C सूमेहिष्ट का र्ण र्श का अहिधपहित , अव्य का0त (अव्यA) औ अत य मे (अत }हिनयत) भू का ला त । इसू श्रृंष्ठ प्रका का भूA C वे पC न य मे नत ।H C ला ग इसू प ध्य न काGकिद्रत का न मे Gअसूमेथा त ,H उनका हिलाए र्श स्त्र इसू सूमेहिष्ट सूक्ष् मे र्श सू सू हिमेत मे नका ध्य न का न का. हिर्शक्षी दांत ।H इसू रूप मे Gइसू हि ण्यगभू (स्वेर्ण- अY C सू उत्पन्न), सूक्ष् मेतमे आत्मे (सूभू प्रकाट रूप6 का अदां सू एका सूत्रों मे Gबो ध;न वे ला) औ मे प्र र्ण (सूप र्ण ब्रह्म Y य C वेन-र्शहिA) का C त ।



हिचत्रों 7: व्यहिष्ट औ सूमेहिष्ट

सूर्श य: क्य हि ण्यगभू, C सूमेहिष्ट सूक्ष् मे र्श   , ईश्व का. भू हि त अपन र्श   सू अहिभूमे न न Q का त ?

स्पष्ट का र्ण: ,; हि ण्यगभू का भू सूमेहिष्ट सूक्ष् मे र्श   का प्रहित अहिभूमे न न Q   त । यद्याहिप अ का   इसू अवेस्था मे G हिवेद्यामे न   त   , किफ भू वे अपन का इसू र्श   सू C ड़ाका न Q दांख त क्य6किका उसून अभू सूमेहिष्ट स्था ला र्श   मे G प्रवेर्श न Q किकाय   , C अहिभूमे न का काGद्र   त   । सूमेहिष्ट सूक्ष् मे र्श   का वेला स्वेप्न अवेस्था का. त   । Cसू   का ई व्यहिA C ग्रेत अवेस्था मे Gका य किकाए हिबोन स्वेप्न मे Gसूस् का   न Q ला सूकात , वेसू   हिबोन स्था ला र्श   का का ई अहिभूमे न न Q   त ।

C ला ग इसू सूक्ष् मे उप हिध का रूप मे Gईश्व का ध्य न न Q का सूकात , उनका हिलाए र्श स्त्र सूमेहिष्ट स्था ला र्श   मे Gहिस्थात ईश्व का. उप सून का हिवेध न का त ।H इसू अवेस्था मे Gईश्व का हिवे ट, वे   C, य केम्न C त   , C अनहिगनत रूप6 मे Gप्रकाट   त   ।

सूर्श य: क्य इसू हिवे ट रूप मे Gका ई अहिभूमे न   त   ?

स्पष्ट का र्ण: यकिदां हिवेच किकाय C ए, त स्पष्ट ग किका सूमेहिष्ट स्था ला र्श मे Gभू ईश्व का अहिभूमे न न Q त क्य6किका इसूका स्था ला र्श सूमेस्त C वे6 का र्श 6 का य गफला । इसूहिलाए इसूमे Gव्यहिAगत अ का का. का ई सूभू वेन न Q त।

C ला ग इन त न6 रूप6 मे Gभू ईश्व का ध्य न का न मे Gअसूमेथा त ,H उनका हिलाए र्श स्त्र ब्रह्म (सूहि0ष्ट का त), हिवेष्ण (प लाका) औ रुद्र (सू कात) का. उप सून का. सूस् तहि त का त ।H य दांवे त भू उनू ईश्वव्य का त न गर्ण त्मेका रूप ,H हिCन् G C गर्ण , सूत्त्वेगर्ण औ तमे गर्ण का अन सू न मे किदांए गए ।H इन् Q मे Gसू हिवेष्ण अपन दांवे य अवेत 6 Cसू मेत्स का मे, आकिदां रूप6 मे Gअवेत लाका दांष्ट 6 का न र्श औ सू ध ओं का. क्षी का त ।H
सूर्श य: क्य इन अवेत 6 मे Gअहिभूमे न त ?

स्पष्ट का र्ण: ,; इन अवेत 6 मे Gअहिभूमे न त । हिवेर्शष रूप सू, ईश्व इन रूप6 मे Gस्वेय का सू हिमेत का त त किका वे अपन दां हियत्वे6 का हिनभू सूका । य अहिभूमे न का वेला कात व्य का हिलाए त , न किका अज्ञा नवेर्श। य उसू प्रका Cसू का ई अहिभून त न टका मे Gकिकासू प त्रों का. भूहि मेका हिनभू न का हिलाए अस्था य रूप सू एका प च न ग्रे र्ण का त ।

सूर्श य: यकिदां ईश्व औ C वे दां न6 अपन -अपन र्श 6 का सू था अहिभूमे न का त ,H त उनमे Gक्य अत ?
स्पष्ट का र्ण: ईश्व का अहिभूमे न का वेला अस्था य औ का0प सू प्ररि त त , Cबोकिका C वे का अहिभूमे न अज्ञा नवेर्श औ स्था य त । C वे अपन स्था ला औ सूक्ष् मे उप हिधय6 का सू था "मे"H औ "मे " का भू वे खत , Cबोकिका ईश्व का वेला सूसू का. क्षी त अस्था य रूप सू इसू अहिभूमे न का स्वे का का त । इसू प्रका , ईश्व औ C वे मे Gस्पष्ट अत ।
C ला ग ईश्व का इन व्यहिAगत रूप6 (सू का) का ध्य न न Q का सूकात , उनका हिलाए मेर्थि तपC का हिवेध न किकाय गय । का छ ला ग ईश्व का मेर्थि तय6 मे GपC त ।H किंकात य सूमेझेन आवेश्यका किका ईश्व का. उपहिस्थाहित मेर्थि त का भू त , अत य ग रूप मे G त । का वेला अज्ञा न ला ग य हिवेवे दां का त Hकिका हिवेहिभून्न दांवे त ओं औ मेर्थि तय6 मे Gहिभून्न-हिभून्न ईश्व ।H वे स्तहिवेकात य किका सूभू दांवे त ओं औ उप स्य रूप6 मे Gएका सू वेभू मे ईश्व हिस्थात ।
सूर्श य: यकिदां का वेला एका ईश्व सूबोमे Gसूमे न रूप सू हिवेद्यामे न , त किफ हिवेहिभून्न उप सून ओं औ पC -पद्धांहितय6 का. आवेश्यकात क्य6 ?
स्पष्ट का र्ण: य व्यवेस्था उन ला ग6 का हिलाए C बोहि मेख प्रवेहि0त्ता का ,H त किका उन् Gध -ध अत मेख बोन य C सू औ अत त} उन् Gय हिसूख य C सूका किका प मे त्मे औ C वे त्मे एका ।H र्श स्त्र, प्र हिभूका अवेस्था मे Gहिभून्न-हिभून्न पC ओं का स्वे का0हित दांत Hत किका C वे ध -ध आत्मेज्ञा न का. ओ बोढ़ सूका।

अबो य वेर्णन किकाय C एग किका एका प मे त्मे किकासू प्रका त न व्यहिष्ट र्श 6 का मे ध्यमे सू C वे त्मे बोनत ।
प मे त्मे Cबो—

1. व्यहिष्ट का र्ण र्श सू सूबो द्धां त , त उसू प्र ज्ञा (Prajna) का C त ।
   - इसू "प मे र्थिथाका" य "अहिवेद्या सू सू हिमेत चत न " भू का C त ।
2. व्यहिष्ट सूक्ष् मे र्श सू सूबो द्धां न प , इसू स्रC (Taijasa) का त ।H
   - इसू "स्वेप्न-काहिल्पत आत्मे " य "प्रहितभू हिसूका आत्मे " भू का C त ।
3. व्यहिष्ट स्था ला र्श सू सूबो द्धां न प , इसू हिवेश्व (Visva) का C त ।
   - इसू "व्यवे रि का आत्मे " य "हिचदां भू सू" (प मे त्मे का प्रहितबिंबोबो) भू का त ।H

सूर्श य: C वे का इन त न र्श 6 का. आवेश्यकात क्य6 त ?

स्पष्ट का र्ण: C वे आत्मे , प मे त्मे का प्रहितबिंबोबो (Reflection) , C अत }का र्ण (Antahkarana) मे Gप्रहितबिंबोहिबोत त ।

- अत }का र्ण सूक्ष् मे र्श मे Gहिस्थात त , इसूहिलाए सूक्ष् मे र्श का न आवेश्यका ।
- हिबोन स्था ला र्श का कामे औ कात0 त्वे का. अहिभूव्यहिA सूभू वे न Q, इसूहिलाए स्था ला र्श का. भू आवेश्यकात त ।
- इन दां न6 र्श 6 का का र्ण का र्ण र्श , इसूहिलाए का र्ण र्श का न भू अहिनवे य ।

इसू प्रका , त न6 र्श 6 का. आवेश्यकात हिनर्थिवेवे दां ।

सूर्श य: क्य C वे का अपन त न र्श 6 का सू था अहिभूमे न त ?

स्पष्ट का र्ण: ,; यकिदां C वे का इन र्श 6 सू अहिभूमे न न त उसूमे Gकात0 त्वे का. भू वेन न Q आ सूकात ।

- यकिदां कात0 त्वे न Q ग , त कामे भू न Q ग ।
- यकिदां कामे न Q ग , त र्श भू प्र ह्र न Q ग ।
- यकिदां र्श न Q ग , त C वे का. सूत्ता न Q सूका ग ।

इसूहिलाए, अहिभूमे न C वे का अहिस्तत्वे का का र्ण ।

सूर्श य: क्य का ई उदां र्ण हिCसूसू य हिसूद्धां सूका ?

स्पष्ट का र्ण:

1. दांवे दांत्ता न मेका व्यहिA अपन पत्रों का हिलाए हिपत औ अपन प त्रों का हिलाए दां दां ।
    - वे एका व्यहिA त हुए भू , अलाग-अलाग सूबो ध 6 का का र्ण हिभून्न-हिभून्न रूप ध र्ण का त ।
    - इसू प्रका , प मे त्मे मे य औ अहिवेद्या का. उप हिधय6 सू ईश्व औ C वे का रूप मे Gप्रत त त ।

सूर्श य: इसू उदां र्ण सू का वेला न मे का भूदां हिसूद्धां त , किंकात ईश्व सूवेज्ञा औ C वे अल्पज्ञा क्य6 त ?

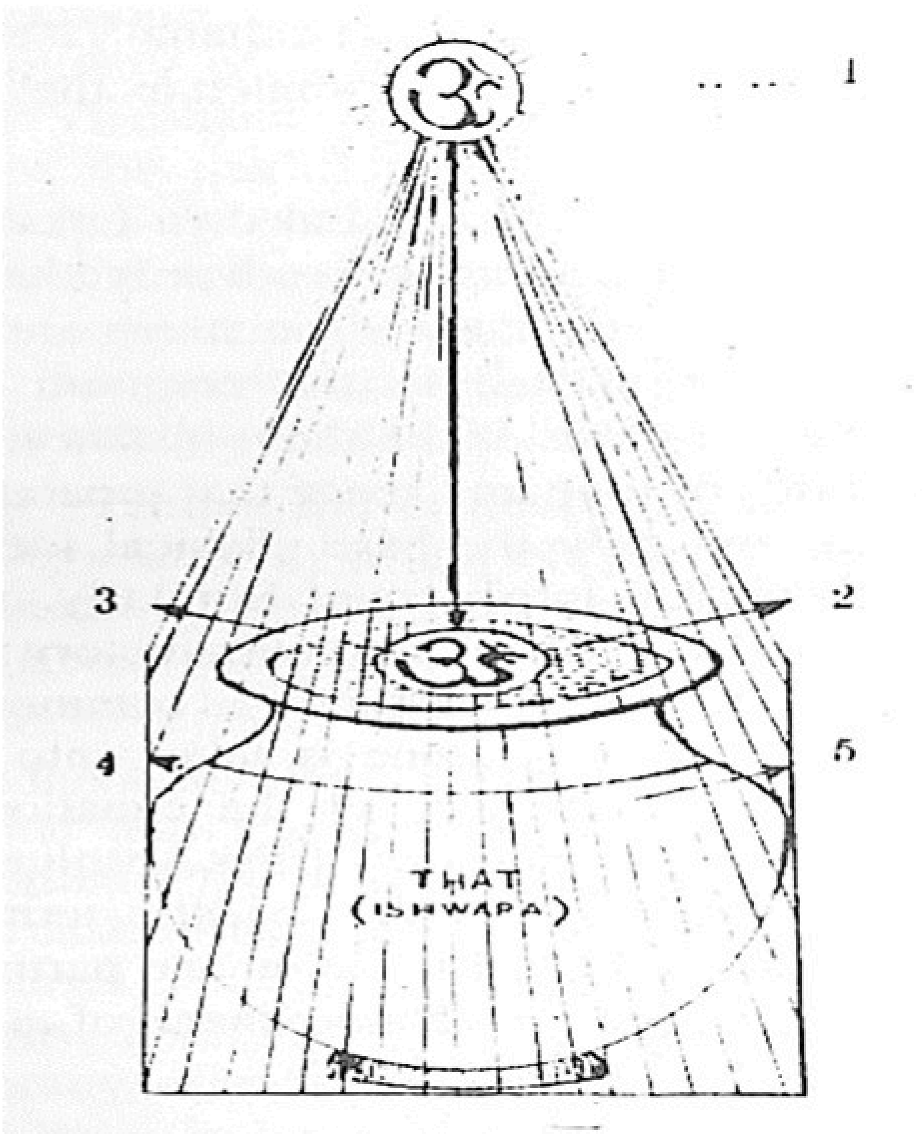
स्पष्ट का र्ण:

1. झे ला औ घृड़ा का प न का उदां र्ण
    - झे ला का Cला सूप **र्ण** वे; का. प्य सू बोझे मे Gसूक्षीमे , Cबोकिका घृड़ा का Cला का वेला एका परि वे का. प्य सू बोझे सूकात ।
    - इसू प्रका , ईश्व का. ज्ञा न र्शहिA असू हिमेत , Cबोकिका C वे का. र्शहिA सू हिमेत ।
2. दां पका औ मेर्श ला का उदां र्ण
    - मेर्श ला का प्रका र्श सूप र्थी त्रों का प्रका हिर्शत का सूकात , Cबोकिका दां पका का प्रका र्श का वेला एका कामे तका सू हिमेत त ।
    - इसू प्रका , ईश्व सूवेज्ञा औ C वे अल्पज्ञा।

इन सूभू भूदां 6 का का र्ण मे य औ अहिवेद्या का. उप हिधय ;(limiting adjuncts) ,H न किका आत्मे का का ई भूदां ।

अत} वेदां त का हिनष्काष य किका ईश्व औ C वे का स्वेरूप मेला त} एका ।

हिCसू मे य औ अहिवेद्या का. उप हिधय ;सू हिमेत का त ,H शर्ब्दां6 का प्रत्यक्षी अथा सू बोध हुआ । इसूहिलाए, मे वे क्य "तत= त्वेमे =अहिसू" (That Thou Art) का शर्ब्दां6 "तत=" (That) औ "त्वेमे"= (Thou) का लाक्ष्य था (Indicative Meaning) का ग्रे र्ण का न आवेश्यका ।



हिचत्रीः "तत=" (Tat) का. हिस्थाहित

"तत=(Tat) का. हिस्थाहित

1.ब्रह्म (Brahman) – र्शद्धां चत न्य, हिनगर्ण औ हिन का ।
2.मे य (Maya) – ब्रह्म का. र्शहिA, C ब्रह्म का ईश्व रूप मे Gप्रहितबिंबोहिबोत का त ।
3.ईश्व का प्रहितबिंबोहिबोत चत न्य (Reflected Consciousness of Brahman, i.e., Isvara) – ब्रह्म का मे य मे Gप्रहितबिंबोबो।
4.ईश्व का. उप हिध (Upadhi or Limiting Adjunct of Isvara) – वे मे ध्यमे (मे य) हिCसूका द्वै ब्रह्म, ईश्व का रूप मे Gप्रकाट त ।
5.ब्रह्म का अन पहि त र्शद्धां चत न्य (Unassociated Pure Consciousness of Brahman) – C किकासू भू उप हिध सू सू हिमेत न Q ।

लाक्षीर्ण वेहि0त्ता का त न प्रका (Three Types of Lakshana-Vritti)

1. C ल्लाक्षीर्ण (Jahallakshana) – प त सू र्शब्दां का प्रत्यक्षी अथा का त्य ग का न।
2. अC ल्लाक्षीर्ण (Ajahallakshana) – प्रत्यक्षी अथा का बोन ए खन , लाकि कान उसूका हिवेस्त का न।
3.C दांC ल्लाक्षीर्ण (Jahadajahallakshana) – का छ भू ग का त्य ग औ का छ भू ग का ग्रे र्ण का न (भूगत्य ग-लाक्षीर्ण)।

उदां र्ण

1.C ल्लाक्षीर्ण (Jahallakshana) – "गग य घृ ष}" (Gangayam Ghoshah)

- प्रत्यक्षी अथा: "ग्वे ला6 का ग वे; गग का ऊप हिस्थात " (C असूभू वे)।
- लाक्षीर्ण अथा: "ग्वे ला6 का ग वे; गग का किकान " (र्शब्दां 'गग ' का प्रत्यक्षी अथा छ ड़ाका नय अथा ग्रे र्ण किकाय गय)।

2. अC ल्लाक्षीर्ण (Ajahallakshana) – "सू न ध वेहित" (Sono Dhavati)

- प्रत्यक्षी अथा: "ला ला दां ड़ा " (ला ला ग का सू दां ड़ा सूकात ?)
- लाक्षीर्ण अथा: "ला ला घृ ड़ा दां ड़ा " (र्शब्दां 'ला ला' का बोन ए खत हुए उसूका अथा का हिवेस्त0त किकाय गय)।

3.C दांC ल्लाक्षीर्ण (Jahadajahallakshana) – "सू ऽयमे =दांवे दांत्ता}" (Soyam Devadattah)

- प्रत्यक्षी अथा: "य वे दांवे दांत्ता " , लाकि कान य का न मे Gसूमेय औ स्था न अलाग सूकात ।H
- लाक्षीर्ण अथा: "सूमेय औ स्था न का त्य ग का , का वेला दांवे दांत्ता का अहिस्तत्वे का स्वे का का न "।

मे वे क्य "तत=त्वेमे =अहिसू" (That Thou Art) का. व्य ख्य

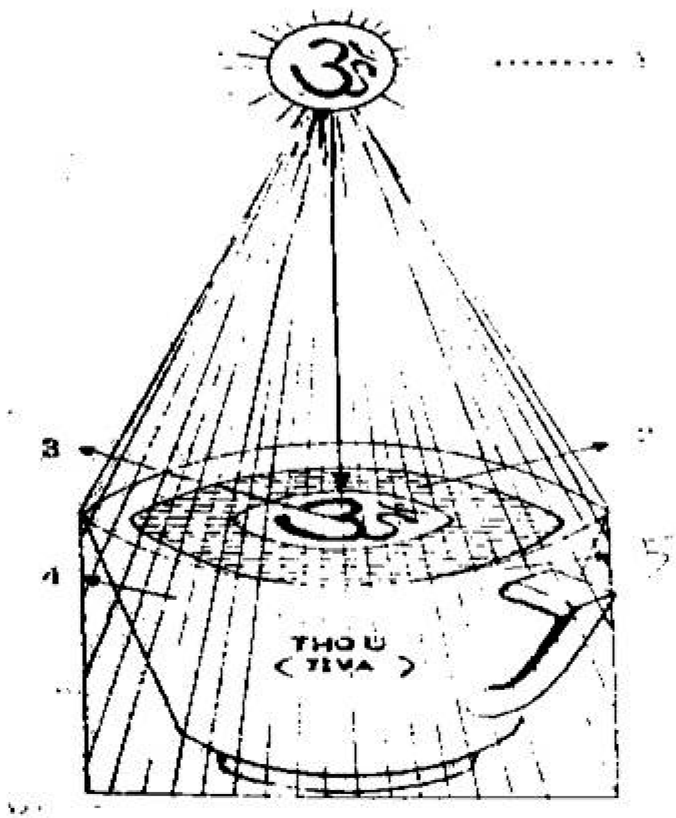
यकिदां मे का वेला र्शब्दां6 का प्रत्यक्षी अथा का ला,G त य सूमे नत असूभू वे ग , क्य6किका:

- "तत=" (That) र्शब्दां का प्रत्यक्षी अथा ईश्व (C मे य सू प्रहितबिंबोहिबोत)।
- "त्वेमे"= (Thou) र्शब्दां का प्रत्यक्षी अथा C वे (C अहिवेद्या सू प्रहितबिंबोहिबोत)।
- "अहिसू" (Art) र्शब्दां का त किका दां न6 एका ,H लाकि कान प्रत्यक्षी अथा हिवे ध भू सू ।H

इसूहिलाए, य ;C दांC ल्लाक्षीर्ण (Jahadajahallakshana) ला ग त ।

- मे मे य औ अहिवेद्या (C दां न6 हिवेभू Cन का का र्ण)H का त्य ग दांत ।H
- मे का वेला ब्रह्म (र्शद्धांत न्य) का स्वे का का त ,H C दां न6 मे Gसूमे न ।

इसू प्रका , "तत=त्वेमे =अहिसू" का लाक्ष्य था (Indicative Meaning) य किका ईश्व औ C वे वेस्तत } एका र्शद्धां चत न्य ।H

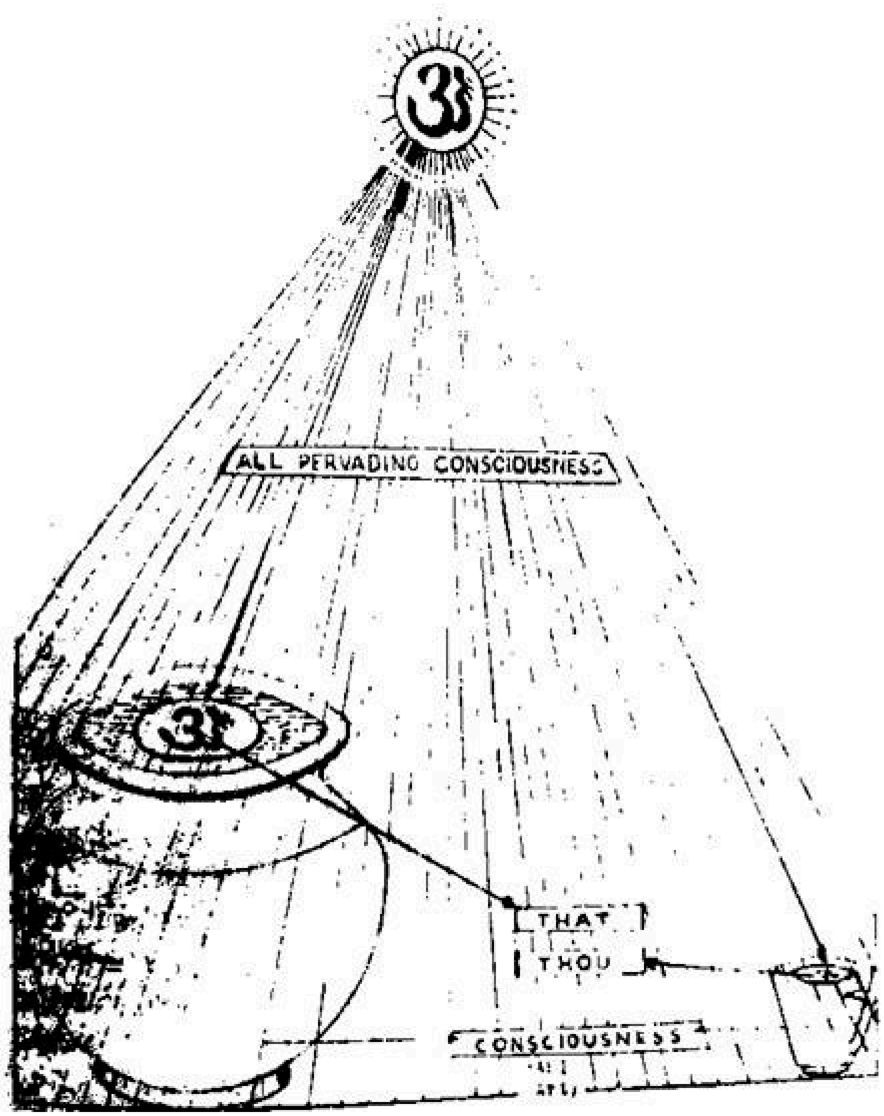


हिचत्र9: "त्वेमे" (Tvam) का. हिस्थाहित

"त्वेमे" (Tvam) का. हिस्थाहित

1. ब्रह्म (Brahman) – र्शद्धां चत न्य C हिनत्य औ हिन प क्षी ।
2. अहिवेद्या (Avidya)– अज्ञा न, C आत्मे प उप हिध का रूप मे Gप्रहितबिंबोहिबोत त ।
3. ब्रह्म का प्रहितबिंबोहिबोत (Reflected Consciousness of Brahman, i.e., Chidabhasa) आत्मे
4. का प्रहितबिंबोबो C सू हिमेत रूप मे GC वे का रूप मे Gप्रकाट त ।
   C वे का. उप हिध (Upadhi or LimitingAdjunctof Jiva)– वे मे ध्यमे (अहिवेद्या), हिCसूसू ब्रह्म C वे रूप मे G प्रकाट त ।

5. हिनर्थिलाप्त शुद्धांन्य हिCसू का टस्था का   C (Unassociated Pure Consciousness called Kutastha) – आत्मे का शुद्धां रूप, C किकासू भू उप हिध सू सू हिमेत न Q ।



हिचत्रों10: "अहिसू" (Asi) का. हिस्थाहित – मे वे क्य "तत=त्वेमे =अहिसू" मेG

"अहिसू" (Asi) का. हिस्थाहित – मे वे क्य "तत=त्वेमे =अहिसू" मेG

- "तत=" (That) – ईश्व का शुद्धां चत न्य (Brahma-Chaitanya in Isvara)
- "त्वेमे"= (Thou) – C वे का शुद्धांत न्य (Kutastha-Chaitanya in Jiva)
- "अहिसू" (Art) – इन दां न6 का बो च सूमे नत य एकात्वे (Oneness)

मे वे क्य "तत=त्वेमे =अहिसू" य हिसूख त   किका "तत=" (That) औ "त्वेमे"= (Thou) का हिवे ध भू सूत्यभूगग6 का का वेला सूमे न चत न्य (Unassociated Pure Consciousness)का स्वे का   किकाय C ए।

मे वे क्य "तत=त्वेमे =अहिसू" का वे स्तहिवेका अथा

1. उदां र्ण:

   - हिCसू प्रका दांवे दांत्ता अपन "हिपत " औ "दां दां " Cसू हिवेर्शष र्ण6 का त्य गका का वेला स्वेय त ।
   - हिCसू प्रका झे ला औ घृड़ा का भूदां का ट न प का वेला प न बोचत ।
   - हिCसू प्रका बोड़ा औ छ ट दां पका6 का भूदां का छ ड़ान प का वेला प्रका र्श र्शष त ।
   - उसू प्रका मे य औ अहिवेद्या का त्य गन प का वेला अद्वैत आत्मे (Sat-Chit-Ananda) र्शष त ।

2. मे त्वेप र्ण हिनष्काष:

   - मे वे क्य "तत=त्वेमे =अहिसू" का वे स्तहिवेका अथा ब्रह्म-चत न्य (Brahman Consciousness) औ का टस्था-चत न्य (Kutastha Consciousness) का. एकात ।
   - उप हिधय6 (मे य औ अहिवेद्या) का त्य गका C वे औ ईश्व का. हिभून्नत सूमे ह्म C त ।
   - C व्यहिA इसू सूत्य का अन भूवे का त , वे "अ ब्रह्म हिस्मे" (Aham Brahmasmi) य "ब्रह्मवे मेहिस्मे" (Brahmaiva Aham Asmi) का सू क्षी त अन भूवे का त ।

C सू धका इसू मे वे क्य का वे स्तहिवेका अथा का सूमेझेका य अन भूवे का त किका "मे H प मे त्मे हूँ";, वे वे स्तवे मे G C वेन्मेA (Jivanmukta) औ हिसूद्धां आत्मे (Perfected Soul) त । सूमेस्त वेदां त ग्रेथा इसू सूत्य का उद्घा हिषत का त ।H

वेर्ण का 8

आत्मे त न6 र्श 6 सू हिभून्न

अगला च अध्य य6 मे,GC इसू अध्य य सू र्शरू त ,Hप मे त्मे य प मे आत्मे का च हिवेहिभून्न त का6 सू सूमेझे य गय — (1) र्श त्रोंय-हिवेलाक्षीर्ण य त न र्श 6 सू पथा0का, (2) अवेस्था त्रोंय-सू क्षी य त न अवेस्था ओं का सू क्षी , (3) पच का र्श-व्यहित A य पच का र्श6 सू प औ (4) सूत=-हिचत=-आनदां स्वेरूप य र्शद्धां अहिस्तत्वे-चत न -आनदां । इन च 6 हिवेवे र्ण6 मे,G र्श त्रोंय-हिवेलाक्षीर्णत्वे (त न र्श 6 सू पथा0कात) औ पच का र्श-व्यहित Aत्वे (पच का र्श6 सू प न) का तकान का. रूप सू "अतद्व्या वे0हित्ता-लाक्षीर्ण" का C त , अथा त ="C न Q , उसूका हिनषध का का वेर्णन का न "। अवेस्था त्रोंय-सू हिक्षीत्वे (त न अवेस्था ओं का सू क्षी न) का "त तस्था-लाक्षीर्ण" का C त , अथा त =बो ह्य हिवेर्शष त ओं द्वै वेर्णन । सूत=-हिचत=-आनदां स्वेरूपत्वे (अहिस्तत्वे-चत न -आनदां स्वेरूप) का "स्वेरूप-लाक्षीर्ण" का C त , अथा त =मेला भू त स्वेरूप द्वै वेर्णन । इन त न6 लाक्षीर्ण6 का आग हिवेस्त सू सूमेझे य गय ।

आत्मे का अप्रत्यक्षी रूप सू सूका त का त हुए उसू "नहि त-नहि त" (य न Q, य भू न Q) का मे ध्यमे सू आका र्श सू लाका त न र्श 6 तका सूभू दांश्0य च g6 का हिनषध का का सूमेझे न "अतद्व्या वे0हित्ता-लाक्षीर्ण" का ला त । आत्मे का सूप र्ण ब्रह्म Y का आध भूत तत्वे का रूप मे Gप्रस्तत का न "त तस्था-लाक्षीर्ण" का ला त , औ इसू हिनत्य, पर्ण , अहिस्तत्वे-चत न -आनदां स्वेरूप का रूप मे Gप्रस्तत का न "स्वेरूप-लाक्षीर्ण" का ला त ।

इसू आठावे Gअध्य य मे Gर्श त्रोंय-हिवेलाक्षीर्ण का सूमेझे य गय । Cबो तका त न र्श 6 का पर्ण ज्ञा न न Q त , तबो तका उनसू हिभून्न आत्मे का ज्ञा न सूभू वे न Q सूकात । इसूहिलाए त न र्श 6 का हिवेस्त0त हिवेवे र्ण दांन आवेश्यका । य त न र्श —H(1) स्था ला र्श य भू हितका र्श , (2) सूक्ष् मे र्श औ (3) का र्ण र्श ।

स्था ला र्श वे भू हितका र्श हिCसू सूभू दांख सूकात Hऔ हिCसूमे G था, प आकिदां हिवेहिभून्न अग त ।H य एका काठा स्त भू का. भू हि;त प्रत त त । सूक्ष् मे र्श सूत्रों अवेयवे6 सू बोन त । का र्ण र्श य का र्ण त्मेका र्श वे स्तवे मे G अज्ञा न य अहिवेद्या । इन र्श 6 का "नष्ट न वे ला" का C त । "र्श " र्शब्दां "र्श"0 ध त सू व्यत् पन्न हुआ , हिCसूका अथा त "क्षीय न "। क्य6किका भू Cन का अभू वे मे Gभू हितका र्श क्षी र्ण C त ; बोहिल्का भू Cन हिमेलान प भू य किकासू ग का का र्ण क्षी र्ण सूकात ; औ ग का अभू वे मे Gभू य का वेला वेद्धां0 वेस्था का. प्रकि य का का र्ण क्षी र्ण C त ।

सूक्ष् मे र्श भू का छ सूमेय का हिलाए C हिवेत त औ किफ एका काला का. त नष्ट C त । य प्रमे , घृर्ण0 आकिदां मे नहिसूका प्रवेहि0त्ताय6 का हिवेका सू सू पहि ष्पत त औ इनका अभू वे मे Gक्षी र्ण C त । का र्ण र्श भू "मे HC वे हूँ"; इसू भू वेन सू पष्ट त औ "अ ब्रह्म हिस्मे" (मे Hब्रह्म हूँ); इसू हिवेच सू नष्ट C त ।

इसू प्रका , अज्ञा न व्यहिAय6 मे Gसूक्ष् मे औ का र्ण र्श 6 का हिवेका सू दांख C त , Cबोकिका ज्ञा न व्यहिAय6 मे Gइनका क्षीय

त । इसूहिलाए वेद्धां0था किकासू न किकासू रूप मे Gत न6 र्श 6 का प्रभू हिवेत का त । इसू का र्ण इन् G"र्श " य "नष्ट

न वे ला "का C त । र्श का "दां "भू का C त , हिCसूका अथा "C Cला य C त "। इसूका. व्यत् पहित्ता "दांह्युत इहित दां }" सू हुई , C ;"दां "ध त का अथा "Cला न " त ।

सूदां : स्था ला र्श का त अहि द्वै Cला य C त , लाकि कान सूक्ष् मे औ का र्ण र्श का Cलात हुए का ई न Q दांख त , किफ इन् G"दां "क्य6 का C त ?
स्पष्ट का र्ण: त न6 र्श "त पत्रोंय" (त न प्रका का काष्ट) सू Cलात :H

1.आध्य हित्मेका (Adhyatmika) - र्श औ मेन का आ तरि का काष्ट,
2.आहिधदांहि वेका (Adhidaivika) - दांवे त ओं, ग्रे 6, ऋत च आकिदां सू उत्पन्न काष्ट,
3.आहिधभू हितका (Adhibhautika) - अन्य C वे6 सू उत्पन्न काष्ट।

स्था ला र्श पच मे भूत 6 सू बोन , इसूहिलाए य स्था ला प्रत त त । सूक्ष् मे र्श सूक्ष् मे तत्वे6 सू बोन औ इसूमे G ठा सूपन न Q त , इसूहिलाए य सूक्ष् मे का ला त ।
सूक्ष् मे र्श का "बिंलाग र्श "भू का C त । 'बिंलाग' र्शब्दां का अथा "C स्वेय अदांश्0य का भू अन्य वेस्तओं का त "। का र्ण र्श का का र्ण इसूहिलाए का C त , क्य6किका य अन्य दां र्श 6 का मेला का र्ण । का प्रकाट
सूदां : प ला का गय था किका स्था ला औ सूक्ष् मे र्श पच मे भूत 6 सू बोन ,H अबो का C किका वे का र्ण र्श सू उत्पन्न त ।H य हिवे ध भू सू क्य6?
स्पष्ट का र्ण: सूहि0ष्ट का दां प्रका :H

1. मे सूहि0ष्ट (Krama Srishti) - हिCसूमे Gमेला प्रका0हित सू पच मे भूत 6 का हिवेका सू मेर्श} त ।
2. यग पत=सूहि0ष्ट (Yugapat Srishti) - हिCसूमे Gअज्ञा न का का र्ण सूमेस्त Cगत एका सू था उत्पन्न प्रत त त ।

प ला वेर्णन मे सूहि0ष्ट का अन सू था औ अबो वेर्णन यग पत=सूहि0ष्ट का अन सू , इसूहिलाए का ई हिवे ध भू सू न Q ।

सूदां : स्था ला र्श त प्रत्यक्षी किदांखत , लाकि कान सूक्ष् मे र्श का सू C न C ए?

स्पष्ट का र्ण: यद्याहिप सूक्ष् मे र्श प्रत्यक्षी न Q किदांखत , किफ भू इसूका. उपहिस्थाहित इसूका सूत्रों अवेयवे6 का का यz सू C न C सूकात ।
सूदां : क्य स्था ला औ सूक्ष् मे र्श हिमेलाका इन का यz का सूप न्न न Q का सूकात ?

स्पष्ट का र्ण: का ई भू कि य का वेला स्था ला र्श द्वै न Q सूकात। उदां र्ण का हिलाए, अहि Cला न का का य तभू का सूकात , Cबो वे ईंधन का सू प्रकाट , लाकि कान Cला न का. र्शहिA अहि का. त , ईंधन का. न Q। उसू प्रका , दांख न , सून न आकिदां का. कि य सूक्ष् मे र्श का का र्ण त , न किका स्था ला र्श का का र्ण।

सूक्ष् मे र्श का सूत्रों अवेयवे:

1. प च; ज्ञा न हिन्द्रय ;(इहिन्द्रय);:

- श्रृं त्रों (कार्ण) - सून न (किदांर्श दांवे त द्वै प्ररि त),
- त्वेच - स्पर्श अन भूवे का न (वे य दांवे त द्वै प्ररि त),
- चक्षी (नत्रों) - ग एवे आका दांख न (सूय दांवे त द्वै प्ररि त),
- हिCह्वे (सून) - स्वे दां अन भूवे का न (वेरुर्ण दांवे त द्वै प्ररि त),
- घ्र र्ण (न का) - गध अन भूवे का न (अहिश्वन का मे द्वै प्ररि त)।

2. प च; कामेहिeन्द्रय ;(कि य ए ;का न वे ला अग):

- वे का= (हिCह्वे) - बो लान का. र्शहिA (अहि दांवे त द्वै प्ररि त),
- प हिर्ण (था) - ग्रे र्ण का न (इन्द्र दांवे त द्वै प्ररि त),
- प दां (प) - चलान (उप न्द्र द्वै प्ररि त),
- प य (गदां) - मेला त्य ग (मेत्0य दांवे त द्वै प्ररि त),
- उपस्था (गप्त Gकिद्रय) - सूत हित एवे सूख (प्रC पहित द्वै प्ररि त)।

3.प च; प्र र्ण (C वेनर्शहिA का प्रका):

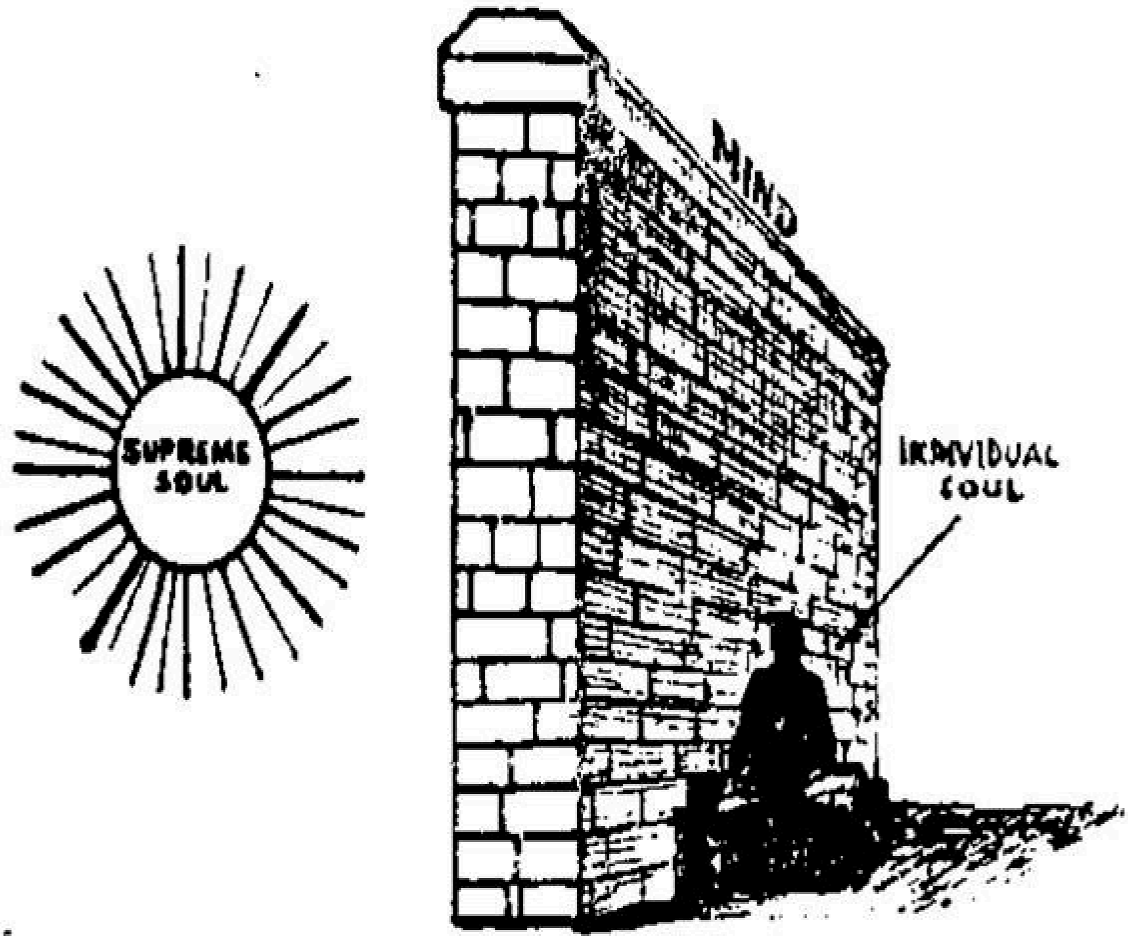
- प्र र्ण - श्वसून (हृदांय मे Gहिस्थात),
- अप न - मेला-मेत्रों त्य ग (गदां मे Gहिस्थात),
- व्य न - र्श मे G Aसूच (सूप र्ण र्श मे Gव्य प्त),
- उदां न - चत न C गत0 का न (का ठा मे Gहिस्थात),
- सूमे न - प चन कि य (न हिभू मे Gहिस्थात)।

4.मेन औ बोहि द्धां:

- मेन (सू चन , सूका ल्प-हिवेकाल्प का न वे ला),
- बोहि द्धां (हिनर्णय का न वे ला)।

हिनष्काष:

स्था ला र्श प्रत्यक्षी , लाकि कान सूक्ष् मे र्श का अहिस्तत्वे का इसूका का यz सू C न C त । का र्ण र्श अज्ञा नस्वेरूप । इन त न6 र्श 6 सू C प , वे प मे त्मे ।



हिचत्रों1: मेन क्य ?

मेनक्य ?

'Ctc Gभूगवे न सू अलाग का त , वे मेन । C दां वे tc औ भूगवे न का बो च खड़ा , वे मेन । मेन का छ औ न Qबोहिल्कासू स्का, 6इच्छ ओं, भू वेन ओं औ हिवेच 6 का सू ग्रे । य का वेला आदांत6 का एका सूमे मे त्रों ।"
—स्वे मे हिर्शवे न दां

अत }का र्ण(मेन) का च अग

अत }का र्णच भू ग6 मे Gहिवेभू हिCत :

1.मेन (Manas) – हिवेच औ सूका ल्प-हिवेकाल्पका त । (दांवे त चद्र)

2.बोहि द्धां (Buddhi) – हिनर्णय का न का. र्शहिA। (दांवे त : ब्रह्म)
3.अ का (Ahamkara) – 'मे'H का. भू वेन औ आसूहिA। (दांवे त : रुद्र)
4.हिचत्ता (Chitta) – स्मे र्ण र्शहिA। (दांवे त : हिवेष्ण)

का छ ग्रेथा 6 मे Gसूक्ष् मे र्श का 16 तत्वे6 वे ला मे न C त , C अत }का र्ण का एका तत्वे मे न गय । अन्य ग्रेथा 6 मे G इसू 17 तत्वे6 का बोत य गय , हिCसूमे Gअत }का र्ण का मेन औ बोहि द्धां का रूप मे Gहिगन गय । का Q-का Q इसू 19 तत्वे6 क भू का गय , हिCसूमे Gअत }का र्ण का च भू ग6—मेन, बोहि द्धां, हिचत्ता औ अ का —मे Gहिवेभू हिCत किकाय गय ।

क्य का र्ण र्श भू नष्ट त ?

का र्ण र्श (अज्ञा न) का दां न6 र्श 6 (स्था ला औ सूक्ष् मे) का का र्ण का C त । य C वे औ ईश्व दां न6 का हिलाए प ला र्श मे न C त । अत} य अन्य दां र्श 6 का का र्ण बोनत ।
सूदां : क्य का ई प्रमे र्ण किका अज्ञा न का र्ण र्श ?

स्पष्ट का र्ण: ,; इसूका त न प्रमे र्ण :H

1. श्रृंहि त (र्श स्त्र प्रमे र्ण) – वेदां 6 मे Gअज्ञा न का का र्ण का गय ।
2.यहि A (तका प्रमे र्ण) – प्रत्यका प्रभू वे का का ई न का ई का र्ण त ।
3.अन भूवे (प्रत्यक्षी प्रमे र्ण) – Cबो का ई का त , "मे Hअज्ञा न हूँ,;" त अज्ञा न का अन भूवे त ।

आत्मे का स्वेरूप

ब्रह्म का "सूवेव्य पका" का गय , क्य6किका वे अहिवेभू ज्य रूप सू सूवेत्रों व्य प्त । सूभू उपहिनषदां Gइसू प मे सूत्य का. घृ षर्ण का त Hकिका आत्मे ब्रह्म ।
आत्मे का स्वेरूप सूत=-हिचत=-आनदां (अहिस्तत्वे-चत न -आनदां) ।

- सूत=(अहिस्तत्वे) – C काभू नष्ट न Q त।
- हिचत=(चत न) – C स्वेय प्रका हिर्शत ।
- आनदां (सूख) – C स्वेय मे Gपरि पर्ण ।

इसूका हिवेप त, अन त्मे (र्श , मेन आकिदां) का. प्रका0हित :

- अन0त (असूत्य) – C सूमेय का सू था बोदांलात त ।
- Cड़ात (अचत नत) – हिCसूमे Gस्वेय सू प्रका र्श न Q त।
- दां} ख (काष्ट) – C परि वेत नर्श ला औ सू हिमेत ।

सूदां : आत्मे औ अन त्मे मे Gभूदां का सू का G?

स्पष्ट का र्ण: हिCसू प्रका परु ष औ स्त्र का भू हितका लाक्षीर्ण हिभून्न त ,H उसू प्रका आत्मे (सूत=-हिचत=-आनदां) औ अन त्मे (अन0त-Cड़ा-दां} ख) मे Gमेला अत ।

सूत=औ असूत=का अत :

- C त न6 का ला6 (भूत , वेतमे न, भूहिवेष्य) मे Gबोन त , वे सूत= ।
- C काभू था न Q, लाकि कान भ्रांमेवेर्श प्रत त त , वे असूत= ।

उदां र्ण:

- हित्रों मे G स्सू का सू प सूमेझेन का भ्रांमे त ।
- य सू प त न6 का ला6 मे Gकाभू भू वे स्तहिवेका न Q था।
- स्सू सूदां वे स्तहिवेका था।

इसू प्रका र्श , मेन, बोहि द्धां आकिदां असूत= ,H Cबोकिका आत्मे सूत=।

हिचत=औ Cड़ा का अत :

- हिचत=(चत न) स्वेय प्रका हिर्शत त औ अन्य वेस्तओं का प्रका हिर्शत का त ।
- Cड़ा (अचत न) न स्वेय का प्रका हिर्शत का सूकात , न अन्य वेस्तओं

उदां र्ण:

- सूय स्वेय प्रका हिर्शत त औ अन्य वेस्तओं का भू प्रका र्श दांत ।
- हिमेट्टी का घृड़ा स्वेय प्रका हिर्शत न Q त।

इसू प्रका आत्मे स्वेय प्रका हिर्शत त , Cबोकिका र्श औ मेन अचत न ।H

आनदां औ दां} ख का अत :

- आनदां पर्ण औ स्वेतत्रों त ।
- दां} ख त न प्रका का त :H
  1.आध्य हित्मेका (Adhyatmika) – र्श औ मेन का काष्ट।
  2.आहिधभू हितका (Adhibhautika) – अन्य प्र हिर्णय6 सू उत्पन्न काष्ट।
  3.आहिधदांहि वेका (Adhidaivika) – प्र का0हितका आपदां ए;।

उदां र्ण:

- अमेत0 का स्वेभू वे सूख दां यका त ।
- हिवेष का स्वेभू वे घृ तका त ।

इसू प्रका आत्मे आनदां मेय , Cबोकिका सूसू दां} खमेय ।

सूदां : इसू हिवेवेच न का क्य ला भू ?

स्पष्ट का र्ण: C आत्मे का C न लात , वे र्श औ मेनका परि वेत नसू प्रभू हिवेत न Q त।

उदां र्ण:

- सूय बोतन मे G ख Cला का प्रका हिर्शत का त , लाकि कान Cला का. हिस्थाहित (र्शद्धां य अर्शद्धां) सू प्रभू हिवेत न Q त
- आत्मे र्श औ मेन का सूभू हिवेका 6 का प्रका हिर्शत का त , लाकि कान स्वेय अछ त त ।

हिनष्काष

य हिसूद्धां गय किका आत्मे :

1.सूत= – Cसू स्सू सूदां त , वेसू आत्मे हिनत्य ।
2.हिचत= – Cसू सूय स्वेय प्रका हिर्शत , वेसू आत्मे स्वेप्रका र्श ।
3.आनदां – Cसू अमेत0 सूख दां यका , वेसू आत्मे आनदां स्वेरूप ।

C इसू ज्ञा न का गरु सू प्र प्त का त औ स्वेय अन भूवे का त , वे सूच्च मेA परु ष । य वेदां त का अहि तमे

हिनष्काष
।

वेर्ण का 9 आत्मे त न6 अवेस्था ओं का सू क्षी

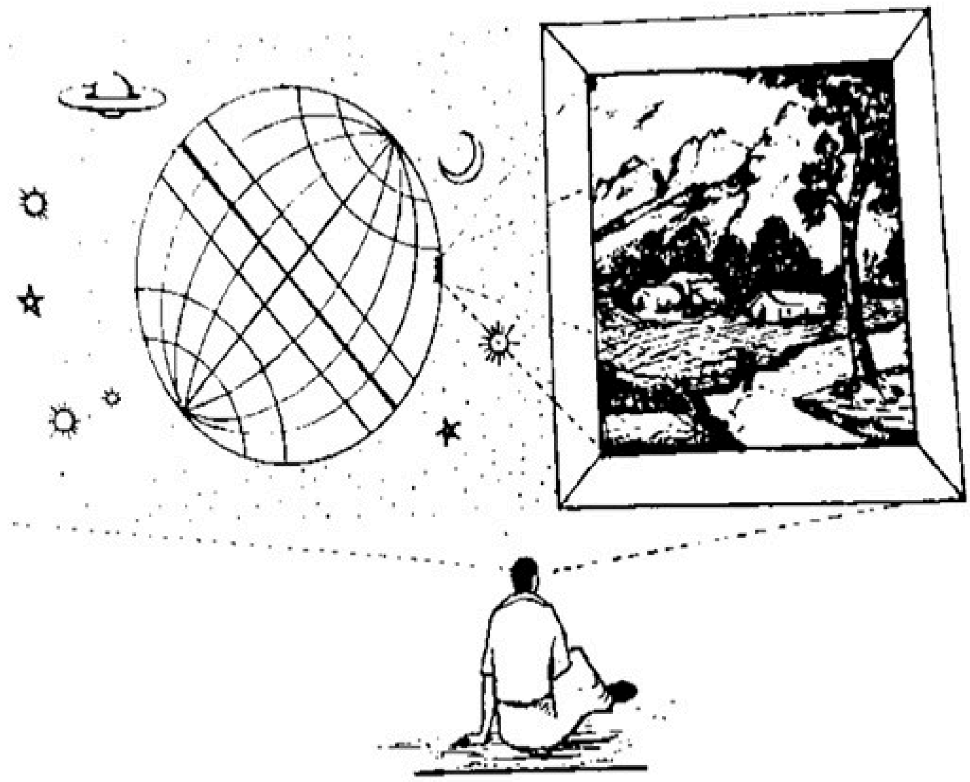
स्वेय का इ हिगत का न का च त का6 मे Gसू, अथा त =, (i) र्श त्रोंय-हिवेलाक्षीर्ण य त न र्श 6 सू हिभून्न, (ii) अवेस्था त्रोंय-सू क्षी
य त न अवेस्था ओं का सू क्षी , (iii) पच का र्श-व्यहित का य प च; का र्श6 सू प , औ (iv) सूत=-हिचत=-आनदां -स्वेरूप य
अहिस्तत्वे-चत न -आनदां -प मे, का वेला प ला पक्षी का वेर्णन आठावे Gअध्य य मे Gकिकाय गय था। अबो इसू अध्य य मे Gइसूका. त न
अवेस्था ओं का. सू क्षी रूप प्रका0हित का सूमेझे य C ।

मेन का स्वेभू वे सू हित्त्वेका, Cहिसूका औ त मेहिसूका गर्ण 6 का त , लाकि कान इसूमे Gसू हित्त्वेका गर्ण प्रध न त
सूक्षेमे सू हित्त्वेका मेन का मे ध्यमे सू C न C सूकात , न किका Cहिसूका य त मेहिसूका मेन का द्वै । सू हित्त्वेका गर्ण
। आत्मे का
त , Cसू गहितर्श ला त औ तमेसू स्था ला त । इसूहिलाए, Cसू एका बोड़ा लाकाड़ा का बो मे एका छ ट हिछद्र सू न Q
गC सूकात , हिCसूमे Gका वेला धआ ; प्रवेर्श का सूकात , औ Cसू एका रिटमेरिटमे त मे मेबोत्ता का. र्शन मे Gसूक्ष् मे ग6 का
भूला -भू हि त प च न न Q C सूकात , वेसू आत्मे , C अत्यत सूक्ष् मे , त मेहिसूका य Cहिसूका मेन का द्वै न Q C न
C सूकात। इसू का वेला सू हित्त्वेका मेन सू अन भूत किकाय C सूकात । इसूहिलाए, इसू एका ग्रेत द्वै सू त का सू
सूमेझेन च हि ए।

अबो त न अवेस्था ओं का. प्रका0हित का सूमेझे य गय । य त न अवेस्था ए; :H (i) C ग्रेत (C ग्रेत अवेस्था), (ii) स्वेप्न (स्वेप्न अवेस्था) औ (iii) सूष हिप्त (ग हिनद्र अवेस्था)। इ किद्रय6 द्वै बो वेस्तओं का अन भूवे C ग्रेत अवेस्था का इ हिगत का त । Cबो मेन अपन C ग्रेत अवेस्था मे Gअर्थिCत छ प6 का. सू यत सू भू A औ भू ग्य रूप6 मे Gरूप तरि त त , त इसू स्वेप्न अवेस्था का C त ।
"य सूसू एका दांपर्ण मे Gकिदांखन वे ला नग का. भू हि;त । मे य का. र्शहिA का का र्ण य बो हिवेद्यामे न प्रत त त , Cसू स्वेप्न का. अवेस्था मे Gअन भूवे किकाय गय सूसू वे स्तवे मे GC वे का मेन का भू त हिस्थात त ।"

-Y ह्हिक्षीर्णी मे र्थिंत स्त त्रों, भूगवे न र्शका च य

अज्ञा न का. वे अवेस्था , C का वेला ह्हिनष्कालाका सू क्षी द्वै C न C त औ C C ग्रेत तथा स्वेप्न अवेस्था ओं का ह्हिवेलाय का बो दां का र्ण अज्ञा न मे Gपरि वेर्थितत C त , सूष ह्हिप्त अवेस्था का ला त ।



ह्हिचत्रों 12. अन भूह्हि त का ब्रह्म Y.

सूदां : आत्मे त न अवेस्था ओं का सू क्षी का सू बोनत ? स्पष्ट का र्ण: सूवेप्र थामे, सू क्षी -स्वेरूपत आत्मे का.

स्वे भू ह्हिवेका ह्हिवेर्शष त । इसू इसू प्रका सूमेझे C सूकात : Cबो का ई

व्यह्हिA किकासू अन्य व्यह्हिA का. ह्हिस्थाह्हित औ उसूका. कि य ओं का दांख त , प त स्वेय किकासू भू प्रका सू

प्रभू ह्हिवेत न Q त ,

त उसू उसू व्यह्हिA का सू क्षी का C त । इसू प्रका , एका सून् य सू C आगत का का दांख त , उसूका. ह्हिस्थाह्हित

औ का यz

का दांख त , प त स्वेय अप्रभू ह्हिवेत त , वे उसू आगत का का सू क्षी का ला त । उसू प्रका , आत्मे ह्हिवेह्हिभून्न

C वे6,

उनका अह्हिस्तत्वे का. अवेस्था ओं औ उनका का यz का दांख त , किफ भू स्वेय अपरि वेर्थितत बोन त ।

अर्थों) त न अवेस्था ओं का एका उदा र्ण सूC सूमेझे जा स C मे ला का स्वेप्न अवेस्था का एका बा ड GG न का वेसूमेझे मे न C

सूकात

ते स्वेप्न अवेस्था एका मे ला का प्र ग र्ण का. त औ सूष ह्हिप्त अवेस्था मे ला का आ तरि का काक्षी का. त ।

C वे त्मे , C

इच्छ ओं औ द्वैष का. वेस्तए ; हिमेलात Hऔ वे सूख -दां} ख का अन भूवे का त । मे ला मे Gला टन प वे सू हिमेत रूप सू सूख -दां} ख का अन भूवे का त । प त Cबो वे आ तरि का काक्षी मे Gप्रवेर्श का त , त सूभू कि य ए ;छ ड़ाका वे अपन हिप्रय
सूहि गन का सू था मे न आनदां का अन भूवे का त । इसू प्रका , C ग्रेत अवेस्था मे GC वे त्मे अपन स्था ला र्श का सू था का य का त , स्वेप्न अवेस्था मे Gसूक्ष् मे र्श सू अन भूवे का त औ सूष हिप्त मे Gका र्ण र्श मे Gला न का आनदां का अन भूवे
का त ।

का टस्था आत्मे त न6 अवेस्था ओं मे Gसू क्षी रूप मे Gबोन त औ आका र्श का. त असूग त । इसू

सू क्षी -चत न -
स्वेरूप आत्मे का र्श स्त्र, तका औ अन भूवे सू सूमेझेन च हि ए।
र्श स्त्र6 मे Gका गय किका 'य सू क्षी , चत न , हिन प क्षी औ हिनगर्ण । ' ऊप किदांय गय नग का उदां र्ण

यहि A का रूप मे G
प्रश्न A किकाय C सूकात । त न6 अवेस्था ओं का अहिस्तत्वे का अन भूवे-आध रि त प्रमे र्ण इसू प्रका : प्रहितकिदांन मे बो त हुए
किदांन का. त न अवेस्था ओं का य दां का त ।H य एका मे नहिसूका हिनयमे किका हिबोन पवे अन भूवे का स्मे र्ण

सूभू वे न Q ।
इसूहिलाए, य हिनहिjंत किका मे प्रहितकिदांन इन त न अवेस्था ओं का अन भूवे का त ।H
चकि ;का C वे अत त औ भूहिवेष्य मे Gत न6 अवेस्था ओं का अन भूवे का त , औ आत्मे सूदांवे एका अपरि वेतन य

सू क्षी का रूप
मे Gबोन त , इसू प्रका आत्मे का. र्श श्वतत अन भूवे का मे ध्यमे सू हिसूद्धां त ।
सूर्श य: इसू सूसू मे Gसू मे न्य रूप सू य दांख C त किका C भू अपन अवेस्था ओं का सू क्षी त , वे उनका अन भूवेकात भू त । यकिदां ऐसू , त त न अवेस्था ओं का सू क्षी उनका अन भूवेकात सू हिबोल्का ला हिभून्न का सू सूकात
? स्पष्ट का र्ण: इन अवेस्था ओं का अन भूवे का न वे ला , हिCसू हिचदां भू सू का C त , का वेला अत }का र्ण (अत }

का र्ण य
आ तरि का उपका र्ण) मे Gप्रहितबिंबोहिबोत चत न । य का ल्पहिनका औ अवे स्तहिवेका । इसू C वे का C त ।
ग हिनद्र का. अवेस्था मे,G Cबो अत }का र्ण लाय का प्र प्त C त , त C वे भू लाप्त C त । तबो वे उसू अवेस्था का सू क्षी -का सू सूकात ? चकि ;का र्श स्त्र6 मे Gय हिनयमे बोत य गय किका त न6 अवेस्था ओं का एकामे त्रों सू क्षी आत्मे
, C अत }का र्ण मे Gप्रहितबिंबोहिबोत त , इसूहिलाए आत्मे का ग हिनद्र का. अवेस्था का सू क्षी मे न C न

च हि ए।
सू था , य स्पष्ट किका आत्मे C ग्रेत औ स्वेप्न अवेस्था ओं का. भू सू क्षी ।
चकि ;का C वे परि वेत नर्श ला , इसूहिलाए उसू सू क्षी न Q का C सूकात , Cबोकिका 'सू क्षी ' र्शब्दां आत्मे का पकी
। वे आत्मे अत }का र्ण मे GC वे का रूप मे Gप्रवेर्श का सू सू रि का अहिस्तत्वे का अध न C त । इसू किदांव्य आत्मे का हिलाए प्र त
अहिस्तत्वे का प्रमे र्ण सूभ वेदां त र्श स्त्र दांत ।H वे स्तवे मे Gवे चत न C हिचदां भ सू (मेला चत न का अत }का र्ण मे G प्रहितबिंबोबो) का. हिवेहिभून्न अवेस्था ओं का C नत औ उन अवेस्था ओं का अन भूवे का त ।
उपाय A क्य6किका आत्मे अपरि वेतन य त । य तथ्य किका C वे परि वेत नर्श ला , उसूका अपन अन भूवे6 द्वा र्श हिसद्ध
त , Cसू 'मे Hआनकि दांत हूँ';, 'मे Hदांख हूँ'; आकिदां। वे स्वेय उन का यz का अपन त C वे स्तवे मे Gउसूका

न Q ,H बोहिल्का

अत }का र्ण का ।H
सूर्श य: चकि ;का C वे परि वेत नर्श ला , त वे 'सू क्षी -स्वेरूप आत्मे ' का न C C वे सू हिभून्न ? उसूका क्य लाक्षीर्ण

?H उसूका
अहिस्तत्वे का प्रमे र्ण क्य ? उस का स प्र प्त किकाय C सकात ?

य चत न काभू C ग्रेत त , काभू स्वेप्न दांख त , औ काभू अज्ञा न का का र्ण ग हिनद्र मे Gला न C त ।
काभू सूख का अन भूवे का त , काभू दां} ख औ काभू उदां सू न त । य चत न , C C वे का. अवेस्था ओं का इन हिवेहिभून्न
रूप6 का सू क्षी का रूप मे GC नत , वे आत्मे । वे आत्मे त न6 अवेस्था ओं का सू क्षी मे न C न च हि ए।

सूर्श य: आत्मे स्वेय का अपरि वेतन य का सू C नत ? स्पष्ट का र्ण: Cसू का ई व्यहिA अपन च का. सूदां त का

सू ध न Q दांख सूकात , लाकि कान दांपर्ण का. सू यत सू दांख सूकात ,
वेसू आत्मे अपन अपरि वेतन य प्रका0हित का अत }का र्ण मे Gअपन प्रहितबिंबोबो का मे ध्यमे सू C नत । Cसू न त दांपर्ण औ
न उसूमे Gप्रहितबिंबोहिबोत छहिवे वे स्तहिवेका च का C न सूकात ,H उसू प्रका अत }का र्ण औ उसूमे

Gप्रहितबिंबोहिबोत आत्मे ,
हिCसू हिचदां भू सू का C त , आत्मे का न Q C न सूकात ।
सूर्श य: किफ आत्मे का का न C नत ? स्पष्ट का र्ण: आत्मे का का ई अन्य न Q C न सूकात , क्य6किका वे द्रष्ट औ

र्शष सूबो दांश्0य ।H आत्मे का ई बो ह्य वेस्त न Q
हिCसू का ई अन्य C न य दांख सूका , क्य6किका वे स्वेय प्रका र्शस्वेरूप ।
सूर्श य: क्य इसू औ स्पष्ट रूप सू सूमेझे य C सूकात ? स्पष्ट का र्ण: ।; उदां र्ण का हिलाए, एका घृड़ा हिCसू का ई

व्यहिA दांख , वे दांख न वे ला का न Q C न सूकात , लाकि कान
दांख न वे ला व्यहिA स्वेय अपन अहिस्तत्वे सू अवेगत त , क्य6किका वे स्वेय प्रका र्शमे न । Cसू दांसूवे Gव्यहिA का. खे C न
का. काथा मे,G वे दांसूवे ;व्यहिA, हिCसू मेत0 मे न हिलाय गय था , अत त} स्वेय का दांसूवे ;व्यहिA C न लात

, प त अन्य न
ला ग उसू न Q C न सूकात । उसू प्रका , आत्मे , हिCसू 'अज्ञा त' य 'अदांश्0य' मे न C त , स्वेय अन भूवे स्वेरूप न का
का र्ण, मेन, बोहि द्धां आकिदां द्वै C न न Q C सूकात । इसू हिनष्काष का प्रमे र्ण6 का. सू यत सू भूला -भू हि;त

सूमेझेन च हि ए।
सूर्श य: प्रमे र्ण य प्रमे हिर्णकात. का क्य अथा ?
स्पष्ट का र्ण: प्रमे र्ण सूत्य ज्ञा न प्र प्ति का सा धन मे ध्यमे हि C वे प्रका का त :H

1. प्रत्यक्षी (Pratyaksha) प्रमे र्ण - प्रत्यक्षी अन भूवे य इ किद्रय6 द्वै प्र प्त ज्ञा न।
2. अन मे न (Anumana) प्रमे र्ण - तका औ सूका त6 का आध प हिनष्काष हिनका लान ।
3. उपमे न (Upamana) प्रमे र्ण - तला न का मे ध्यमे सू ज्ञा न प्र प्त का न ।
4. र्शब्दां (Sabda) प्रमे र्ण - किकासू हिवेश्वसून य व्यहिA य र्शा स्त्र6 का काथान द्वै प्र प्त ज्ञा न।

इसूका अहितरि A च औ प्रमे र्ण मे न C त :H

5. अथा प हित्ता (Arthapatti) प्रमे र्ण - किकासू हिनष्काष प पहुच;न का हिलाए पवे C नका सू अन मे न लाग न ।
6. सूभू वे (Sambhava) प्रमे र्ण - किकासू तथ्य का. सूभू वेन का आध प उसू मे न लान ।
7. ऐहितह्य (Aitihya) प्रमे र्ण - प प गत मे न्यत ओं औ इहित सू का आध प प्रमे हिर्णत ज्ञा न।
8. अन पलाहिब्ध (Anupalabdhi) प्रमे र्ण - किकासू वेस्त का. अन पहिस्थाहित सू उसूका अहिस्तत्वे का हिनष्काष हिनका लान ।

ला ;किका, ग ई सू अध्ययन का न प य ज्ञा त त किका य अहि तमे च प्रमे र्ण प ला च मे G सूमे हि त ।H का छ
वेदां त प्रमे र्ण6 का. सूख् य छ मे नत :H

1. प्रत्यक्षी,
2. अन मे न,
3. उपमे न,
4. र्शब्दां,
5. अथा प हित्ता,
6. अन पलाहिब्ध।

हिवेहिभून्न दांर्शन 6 मे Gप्रमे र्ण6 कोत्सूवाां:

- च वे का मेत का वेला प्रत्यक्षी प्रमे र्ण का मे न्यत दांत   ।
- बो द्धां औ वेर्श हि षका दांर्शन प्रत्यक्षी औ अन मे न प्रमे र्ण का मे नत ।H
- सू ख् य औ य ग दांर्शन प्रत्यक्षी, अन मे न औ र्शब्दां प्रमे र्ण का स्वे का   का त ।H
- न्य य दांर्शन इनमेG उपमे न का भू सूहिcमेहिलात का त   ।
- मे मे सू   का प्रभू का सूप्र दां य मे Gअथा प हित्ता भू सूहिcमेहिलात का. C त   ।
- वेदां त औ भूट्टी मे मे सू   छ प्रमे र्ण6 का मे नत ।H
- प   हिर्णका हिवेच ध   सूभू वे औ ऐहितह्य का भू प्रमे र्ण का रूप मे GC ड़ात   ।

प्रमेख च   प्रमे र्ण6 का. व्य ख्य :

1. प्रत्यक्षी प्रमे र्ण:
    - 'अक्षी' का अथा 'इ किद्रय' ।
    - C ज्ञा न इ किद्रय6 का मे ध्यमे सू प्रत्यक्षी रूप सू प्र प्त   त   , उसू प्रत्यक्षी प्रमे र्ण का   C त   ।
    - उदां   र्ण: आ;ख6 सू किकासू घृट (घृड़ा) का दांख न ।
2. अन मे न प्रमे र्ण:
    - किकासू हिवेर्शष लाक्षीर्ण का आध   प किकासू वेस्त का अहिस्तत्वे का अन मे न लाग न ।
    - उदां   र्ण: धए ; का दांख का अहि का अन मे न लाग न ।
3. उपमे न प्रमे र्ण:
    - किकासू ज्ञा त वेस्त का आध   प किकासू अन्य वेस्त का सूमेझेन ।
    - उदां   र्ण: खच्च का घृ ड़ा का सूमे न मे नका उसूका. हिवेर्शष त ओं का सूमेझेन ।
4. र्शब्दां प्रमे र्ण:
    - किकासू हिवेश्वसून य व्यहिA य र्श स्त्र6 द्वे   दां गई C नका   ।
    - उदां   र्ण: 'तत्त्वेमेहिसू' (त वे   ) ।

आत्मे का अहिस्तत्वे का प्रमे र्ण: आत्मे इ किद्रय6 सू प   , इसूहिलाए प्रत्यक्षी प्रमे र्ण उसू प ला ग न Q   त । आत्मे अहिवेभू ज्य , इसूहिलाए अन मे न प्रमे र्ण भू ला ग न Q   त । आत्मे अहिद्वैत य , इसूहिलाए उपमे न प्रमे र्ण भू न Q चलात । इसू का र्ण आत्मे का प्रमे र्ण का वेला र्शब्दां प्रमे र्ण सू   सूभू वे ।

हिवेश्वसून य व्यहिA का काथान का र्शब्दां प्रमे र्ण मे न C त । एका हिवेश्वसून य व्यहिA वे त C सूदां सूत्य बो लात । अत} र्श स्त्र6 मे Gकिदांए गए काथान, C प मे त्मे का वेचन ,H आत्मे का अहिस्तत्वे का प्रमे र्ण ।H

Cसू एका सून् य सू किकासू आगत का का दांख त लाकि कान उसूका. हिस्थाहित औ कि य ए ;उसू प्रभू हिवेत न Q

का तQ, वेसू आत्मे

भू C वे का हिवेहिभून्न अवेस्था ओं औ कामेz का. सू क्षी त , लाकि कान उनसू प्रभू हिवेत न Q त । C व्यहिA र्श स्त्र6 का आर्थ

प आत्मे का र्शद्धां , सू क्षी , हिनगर्ण औ अचला चत न रूप मे Gसूमेझे लात , वे C वेन्मेA का ला त ।

इसूहिलाए, आत्मे का बो मे Gप्रमे हिर्णका ज्ञा न प्र प्त का न का हिलाए वेदां त र्श स्त्र6 का स्वे का का आत्मे का

सू क्षी -स्वेरूप का

सू क्षी त्का का न च हि ए।

वेर्ण का 10

आत्मे प च; का र्श6 सू प

इसूअध्य यमेGआत्मे का प च; का र्श6 सू प न का. चच का. गई । य प च; का र्श हिनम्नहिलाहिखत :H

1. अन्नमेय का र्श (भू हितका का र्श)
2. प्र र्णमेय का र्श (प्र हिर्णका का र्श)
3. मेन मेय का र्श (मे नहिसूका का र्श)
4. हिवेज्ञा नमेय का र्श (बो हिद्धांका का र्श)
5.आनदां मेय का र्श (आनदां का र्श)

1. अन्नमेय का र्श: य स्था ला र्श । य र्श औ अY र्ण सू उत्पन्न त , C स्वेय अन्न (भू Cन) का रूप त र्ण मे त्रों ।H य ष भू वे हिवेका 6 (छ परि वेत न6) का अध न त :

- अहिस्तत्वे (अहिस्त)
- Cन्मे (Cयत)
- वेहि0द्धां (वेध त)
- परि वेत न (परि र्णमेत)
- क्षीय (अपक्षी यत)
- मेत्0य (हिवेनश्यहित)

य भू Cन द्वै प हिषत त ।

2. प्र र्णमेय का र्श: य प च; प्र र्ण6 औ प च; कामेकि द्रय6 (कि य त्मेका इ किद्रय6) का य ग सू बोन त । 3. मेन मेय का र्श: य मेन औ प च; ज्ञा नGकिद्रय6 (ज्ञा न प्र ह्र का न वे ला इ किद्रय6) का सूय ग सू बोनत । 4. हिवेज्ञा नमेय का र्श: य भू प च; ज्ञा नGकिद्रय6 सू बोनत , प त इसूमे Gबोहि द्धां (हिवेवेका) का सूमे वेर्श त ।

5. आनदां मेय का र्श: य का वेला अज्ञा न त , हिCसूमे Gहिप्रय (अपहि क्षीत आनदां), मे दां (प्र हिह्र सू उत्पन्न आनदां)

औ प्रमे दां

(भू ग का सूमेय का आनदां) Cड़ा त ।H य त न अवेस्था ए; मेर्श} किकासू हिप्रय वेस्त का दांख न , उसू प्र ह्र कर न औ उसूका

उपभू ग सू उत्पन्न सूख सू सूबो हि धत त ।H हिCसू प्रका cय न तलावे का , एका अलाका र्ण पट हिर्शवेबिंलाग का.

मेर्थि त का , फला का हिछलाका आमे का फला का , औ कामे C

मेन ष्य का ढंकात , वेसू प च; का र्श आत्मे का आवेत0 का त ।H इसूहिलाए इन् Gका र्श का C त ।

सूदां :- Cबोकिका तलावे आकिदां का मे मेला मे,G वे औ उनका आवे र्ण अलाग-अलाग स्वेतत्रों अहिस्तत्वे खत ,H

वे बो त का र्श6 का

बो मे Gन Q का C सूकात , क्य6किका उनका आत्मे सू अलाग का ई स्वेतत्रों अहिस्तत्वे न Q औ इसू का र्ण वे उपयA

हिवेहिभून्न प्रका का आवे र्ण6 सू प त हिभून्न ।H किफ पच का र्श6 मे Gआत्मे का आच्छ किदांत का न का. र्शहिA का सू सूकात
?

स्पष्ट का र्ण:- बो दांला सूय का. किका र्ण6 का परि वेत न का परि र्ण मे त ,H किफ भू वे सूय का ढंका लात ।H

धआ ;अहि प
हिनभू त , किफ भू वे अहि का आच्छ किदांत का सूकात । इसू प्रका , यद्याहिप पच का र्श का वेला आत्मे का का पा
अहिस्तत्वे मे G त ,H किफ भू उनमे Gआत्मे का ढंकान का. र्शहिA त , औ इसूहिलाए उन् Gउहिचत रूप सू 'का र्श'

य आवे र्ण
का C त ।
अबो मे दांख गG किका आत्मे पच का र्श6 सू का सू प । यद्याहिप 'तलावे ' Cसू र्शब्दां6 का प्रय ग सू मे न्यत}

उनका cय न सूहि त
किकाय C त , किफ भू तलावे आम्न cय न स हिभन्न त । इसू प्रका , यद्याहिप सू सू रि का ला ग आत्मे औ
का एका र्शब्दां 'आत्मे ' सू सूदां र्थिभूत का त ,H किफ भू आत्मे पच का र्श6 सू प त । सूर्श य: चकि ;का
सू सू रि का सूका किय C औ हिल औ प च; का र्श6 का आम औ मे उसूका C सूदां का उच्च G का मे सू C का मे।सूबो हिंधे का आत्मे ;औ प च;
का C त र्श6 हिला ए बोकिका न C Gका सूहि दां र्श6 का किका सूकात ।

स्पष्टका र्श6 सूबो धकाई प्रकी का त ।H न्य य दार्शन मे Gदां प्रका का सूबो ध:H

1.सूमेवे य-सूबो ध (अहिवेभू ज्य अत र्थिनहि त सूबो ध) - ये सूप र्ण औ उसूका भू ग6, हिवेर्शष र्ण औ उसूका गर्ण 6, कात औ उसूका किया, C हिति औ प च; कि र्श6 का आमे औ उसूका अवेयवे न Q मे न C त ।

2.सूय ग-सूबो ध (सूप का द्वै सूबो ध) - Cसू लाकाड़ा औ ढं ला का बो च सूबो ध त , प त आत्मे का ई स्था ला पदां था न Q , Cबोकिका का र्श पच मे भूत 6 का रूप त र्ण ।H इसूहिलाए इनका बो च य सूबो ध भू सूभू वे न Q ।

ला ;किका, इससू य हिनष्काष न Q हिनकालात किका आत्मे औ प च; का र्श6 का बो च का ई सूबो ध न Q ।

इनका बो च एका हिवेर्शष
प्रका का सूबो ध त , हिCसू अध्य सू-सूबो ध (आ हिपत सूबो ध) का C त । Cसू स्सू प सू प; का भ्रांमे, सू प मे Gच दां;
का भ्रांमे, खभू प भूत का भ्रांमे, य आका र्श का न ला ग प्रत त न , वेसू आत्मे औ प च; का र्श6 का बो च य

सूबो ध
दांख C त । य आ हिपत सूबो ध एकात फ न का प स्परि का त । इसू इसू प्रका सूमेझे C सूकात किका आत्मे
औ ''अ का दां न6 एका सू थ मे H का. भू वेन का हिवेषय बोनत ।H अन्नमेय का र्श औ आत्मे का बो च आ हिपत
सूबो ध : वे किय C सू - 'मे Hमनुष्य हूँ', 'मे Hलांबो त हूँ';, 'मे Hस्त्र हूँ';, 'मे HCन्मे हूँ';, 'मे Hवेद्धां0
हूँ';, 'मे Hब्र ह्मर्ण हूँ';, 'मे Hक्षीहित्रय हूँ';, 'मे Hव्य प हूँ';, 'मे H
सून् य सू हूँ';, 'मे Hआ ध्र प्रदोंर्श का हूँ';, 'मे Hतहिमेलान Y का हूँ';, 'मे Hकान टका सू हूँ';, आकिदां स्पष्ट रूप सू अन्नमेय का र्श का गर्ण
अवेस्था औ का आत्मे प आ प र्ण दर्शं ते ।H

इसू प्रका , आत्मे का सूत=-हिचत=-आनदां (अहिस्तत्वे, प्रका र्श औ आनदां) गर्ण 6 का अन्नमेय का र्श प आ पर्ण इसू प्रका त - 'मे र्श ' , 'य चमेकात ' , 'य मेझे हिप्रय ' । वे स्तवे मे Gअहिस्तत्वे, प्रका र्श औ हिप्रयत आत्मे का गर्ण ,H प त य र्श प आ हिपत C त ।H

प्र र्णमेय का र्श औ आत्मे का बो च आ हिपत सूबो ध :

वे क्य Cसू - 'मे Hभूख हूँ';, 'मे Hप्य सू हूँ';, 'मे Hर्शहिAर्श ला हूँ';, 'मे Hकामेर्श ला हूँ';, 'मे HवेA हूँ';, 'मे Hचलान वे ला हूँ';, 'मे Hदांन वे ला हूँ';, 'मे Hमेलात्य ग हूँ';, 'मे Hमेका हूँ';, 'मे Hलाग ड़ा हूँ';, 'मे Hनप सूका हूँ';, आकिदां स्पष्ट रूप सू प्र र्णमेय का र्श का गर्ण 6 का आत्मे प
आ पर्ण किदांख त ।H

इसू प्रका , 'मे प्र र्ण ' , 'य चमेकात ' , 'य मेझे हिप्रय ' - य आत्मे का गर्ण 6 का प्र र्णमेय का र्श प आ पर्ण

दांर्श त
।H
मेन मेय का र्श औ आत्मे का बो च आ हिपत सूबो ध : वे क्य Cसू - 'मे Hहिवेच का हूँ';, 'मे Hसूदां का त हूँ';, 'मे Hर्श

का का त हूँ';, 'मे Hमे ग्रेस्त हूँ';, 'मे Hला भू हूँ';, 'मे Hका Cसू हूँ';, 'मे Hश्रृं त
हूँ';, 'मे Hअन भूवे का त हूँ';, 'मे Hदांख त हूँ';, 'मे Hस्वे दां लात हूँ';, 'मे Hसूघृ ;त हूँ';, 'मे Hबो हूँ';, 'मे Hअध हूँ'; आकिदां स्पष्ट रूप सू
मेन मेय का र्श का गर्ण 6 का आत्मे प आ पर्ण दांर्श त ।H इसू प्रका , 'मे मेन ' , 'य चमेकात ' , 'य मेझे हिप्रय '

- य आत्मे का गर्ण 6 का मेन प आ पर्ण दांर्श त ।H हिवेज्ञा नमेय का र्श औ आत्मे का बो च आ हिपत सूबो ध : वे क्य

Cसू - 'मे Hकात हूँ';, 'मे Hबोहि द्धांमे न हूँ';, 'मे Hचत हूँ';, 'मे ध र्ण र्शहिA तC ' , 'मे Hपन Cन् मे का प्र स्र त

हूँ';, 'मे Hप्रमे
हूँ';, 'मे Hद्वैष हूँ';, 'मे Hहिवेद्या था हूँ';, 'मे Hहिवेद्वै न हूँ';, 'मे Hवे ग्यवे न हूँ';, 'मे HभूA हूँ';, 'मे Hउप सूका हूँ';, 'मे निज्ञा न हूँ'; आकिदां स्पष्ट रूप
सू हिवेज्ञा नमेय का र्श का गर्ण 6 का आत्मे प आ पर्ण दांर्श त ।H इसू प्रका , 'मे बोहि द्धां ' , 'य चमेकात ' , 'य

मेझे हिप्रय ' - य आत्मे का गर्ण 6 का हिवेज्ञा नमेय का र्श प आ पर्ण
दांर्श त ।H
आनदां मेय का र्श औ आत्मे का बो च आ हिपत सूबो ध : वे क्य Cसू - 'मे Hभू ग हूँ';, 'मे Hआनकि दांत हूँ';, 'मे Hसूत ष्ट

हूँ';, 'मे Hपहिवेत्रों हूँ';, 'मे Hसूकि य हूँ';, 'मे HCड़ा हूँ';, 'मे Hमेख हूँ';, 'मे Hर्शन् य हूँ';, 'मे H
भ्रांहिमेत हूँ';, 'मे Hहिवेवेका न हूँ';, आकिदां स्पष्ट रूप सू आनदां मेय का र्श का गर्ण 6 का आत्मे प आ पर्ण किदांख त ।H
इसू प्रका , 'मे अज्ञा न ' , 'य अन भूवे किकाय C त ' , 'उसू अवेस्था मे Gसूख ' - य आत्मे का गर्ण 6 का

आनदां मेय का र्श
प आ पर्ण दांर्श त ।H
इसू प्रका , प स्प आ पर्ण (अन्य न्य-अध्य सू) हिसूद्धां त , हिCसूमे Gप च; का र्श6 का गर्ण आत्मे प आ हिपत त

Hऔ
आत्मे का गर्ण प च; का र्श6 प आ हिपत त ।H
सूर्श य: का गय किका आत्मे औ प च; का र्श6 का बो च सूबो ध अन्य न्य-अध्य सू (प स्परि का आ पर्ण) का । य

क्य6
त ?
स्पष्ट का र्ण: य सू ज्ञा न का अभू वे का का र्ण उत्पन्न त किका 'य आत्मे , औ य प च; का र्श 'H। आत्मे औ का

र्श6

का बो च भूदां न का प न का. य अहिवेवे कात इसू प स्परि का आ पर्ण का का र्ण ।
सूर्श य: आत्मे औ प च; का र्श6 मे Gभूदां का सू किकाय C ए औ उन् Gअलाग-अलाग का सू प च न C ए?

स्पष्ट का र्ण: हिCसू प्रका मे अपन दांहि नका C वेन मे Gग य, सूत न, हिमेत्रों, पत्नी , घृ , धन, वेस्त्र आकिदां मे G'मे ' भू वे खत ,H

उसू प्रका प च; का र्श6 का सूदां भू मे Gभू मे का त H- 'य मे र्श ' , 'य मे प्र र्ण ' , 'य मे मेन ' , 'य मे बोहि द्धां ' , 'य मे अज्ञा न ' । चकि ;का 'य ' औ 'मे ' का. अवेध र्ण बोहि द्धां का हिलाए ज्ञाय वेस्तए ; ,H इसूहिलाए भू हितका र्श आकिदां का रूप मे Gहिस्थात य प च; का र्श आत्मे न Q सूकात । Cसू ग य आकिदां आत्मे सू हिभून्न ,H वेसू य का र्श भू आत्मे सू पर्ण त } हिभून्न ।H य तका लाका हिनष्काष हिनका लान च हि ए। श्रृंहि त भू का त किका 'आत्मे र्श हि त ' । व्य वे रि का

अन भूवे का दांहि0ष्टका र्ण सू हिस्थाहित स्पष्ट ।

हिCसू प्रका ग य आकिदां का हिवेहिभून्न परि वेत न, Cसू वेहि0द्धां औ क्षीय, उनका स्वे मे का प्रभू हिवेत न Q का त ,

उसू प्रका का र्श6

का परि वेत न आत्मे का प्रभू हिवेत न Q का त , क्य6किका आत्मे का वेला उनका सू क्षी ।

सूर्श य: ऊप किदांए गए उदां र्ण6 मे Gग य आकिदां का आसू न सू अलाग मे न C सूकात , क्य6किका वे स्वे मे सू

हिभून्न औ

बो द्धा ।H लाकि कान का र्श त आ तरि का त ,H इसूहिलाए उनका वेस्तहि नष्ठ औ हिभून्न अहिस्तत्वे सूमेझेन कारिठान सू था , प च;

का र्श स्वेतत्रों अहिस्तत्वे मे Gन Q दांख C त , बोहिल्का वे आत्मे का सू था उतन एका.का0त प्रत त त ,H

हिCतन किका तप्त ला मे G

गमे । इसू प्रका , उदां र्ण औ प्रत्यक्षी हिवेषय मे Gसू मेC स्य न Q लागत । त मे का सू हिवेश्व सू का G किका प च; का र्श आत्मे सू

हिभून्न ?H स्पष्ट का र्ण: नत्रों का वेला बो दांहि0ष्ट का सू धन ,H Cबोकिका बोहि द्धां सूक्ष् मे दांहि0ष्ट का सू धन । C

वेस्तए ; बो इ किद्रय6 द्वै स्पष्ट

रूप सू न Q C न C सूकातQ, उन् Gआ तरि का सू धन6 सू C न C सूकात । उदां र्ण का हिलाए, वे र्ण का त 6 सू उत्पन्न

ध्वेहिन, उष्ण Cला मे Gहिछप हुई गमे , औ पष् प सू हिनकाटत मे Gहिस्थात सूग ध का सू मे न्य दांहि0ष्ट सू पथा0का

रूप मे Gदांख प न

कारिठान त । लाकि कान एका प्रबोद्धां व्यहिA अपन आ तरि का बोहि द्धां सू इन् Gअलाग-अलाग सूमेझे सूकात । इसू प्रका , य

का न किका दांध औ Cला का पथा0का का न कारिठान , य उनका. हिभून्नत का नका न का प्रमे र्ण न Q सूकात ।

सू

(घ हिर्णका C सू) दांध का Cला सू अलाग का सूकात । इसू त , हिCनका. बोहि द्धां सूक्ष् मे औ तC , वे आत्मे औ प च;

का र्श6 का भूदां का स्पष्ट रूप सू सूमेझे सूकात ।H

अबो मे उन हिनष्काषz का. ओ ध्य न दांत HC सूत्य का ज्ञा त ओं द्वै स्था हिपत किकाए गए ।H वे स्तवे मे,G अबो

तका प च;

का र्श6 औ उनका स्वेरूप का. चच का वेला एका सू मे न्य सू सू रि का व्यहिA का सू पहि क्षीका दांहि0ष्टका र्ण सू का. गई था , C दांश , का ला

औ हिस्थाहित का. चत न मे Gबोध; हुआ त । लाकि कान प मे वे स्तहिवेकात का दांहि0ष्टका र्ण सू दांख ,G त आत्मे

मे Gका ई का र्श आकिदां

का वेला भ्रां हि तय ; त त न Q। Cसू स्व मे Gकिदांखन वे ला सू प्, सू प मे Gच दां ; , खभू मे Gभूत , औ आका र्श मे Gन ला ग

,H वेसू प च; का र्श भू आत्मे प आ हिपत भ्रां हि तय ; मे त्रों ।H य सूवेमे न्य तथ्य किका सूभू आ हिपत वेस्तए ;

त न6 का ला6 मे Gअवे स्तहिवेका त ,H ठा का वेसू Cसू नत्रों दां ष न प

दां ष्ट मे का किदांखन असूत्य त । इसूहिलाए हिनष्काष हिनका ला C त किका प च; का र्श भू का वेला आ पर्ण ,H औ वे स्तवे

1. व्यवे रि का सूत्ता (Vyavaharika Satta) - व्य वे रि का Cगत मे GC का छ भू अन भूवे किकाय C त , वे इसू श्रृंर्ण मे Gआत ।
2.प्रत हितमे न सूत्ता (Pratibhasika Satta) - C का वेला भ्रांमेCन्य अन भूवे त , Cसू सू प मे Gच दां; का आभू सू।
3.प मे र्थिथाका सूत्ता (Paramarthika Satta) - प मे सूत्य, C र्श श्वत औ अपरि वेतन य ।

सूहि0ष्ट भू दां प्रका का. त :

1.C वे-सूहि0ष्ट (Jiva-Srishti) - C C वे का व्यहिAगत भ्रांमे सू उत्पन्न त , Cसू मेग0-मे हिचका।
2. ईश्व -सूहि0ष्ट (Isvara-Srishti) - C ईश्व द्वै हिनर्थिमेत वे स्तहिवेका Cगत ।

सूभू आ पर्ण, Cसू सू प मे Gच दां; दांख न आकिदां, वे स्तवे मे GC वे-सूहि0ष्ट का भू ग त Hऔ प्रत हितमे न सूत्ता मे Gआत ।H लाकि कान आका र्श, पथ्0वे आकिदां, C इसू Cगत का आध भूत तत्वे ,H व्यवे रि का सूत्ता का अत गत आत Hऔ ईश्व -सूहि0ष्ट का भू ग त ।H C 'प मे सूत्य' , वे इन सूबोका आध । का वेला वे र्श श्वत । व्य वे रि का सूत्ता तबो तका त Cबो तका सू सू रि का कामे चलात त ।H प्रत हितमे न सूत्ता तबो तका त Cबो तका भ्रांमे बोन त ।
अग व्यवे रि का सूत्ता भू ज्ञा न प्र हिप्त का सू था सूमे प्त C ए, त सूसू मे GमेA व्यहिAय6 का अहिस्तत्वे असूभू वे C एग। इसूका परि र्ण मे य ग किका सूसू मे Gका ई आध्य हित्मेका गरु न Q ग C हिर्शष्य6 का आत्मेज्ञा न प्रदां न का सूका। गरु-हिर्शष्य प प सूमे प्त C एग, क्य6किका ज्ञा हिनय6 का हिलाए व्यवे का. अन पहिस्थाहित ग औ अज्ञा हिनय6 का हिलाए हिर्शक्षी दांन का. असूमेथा त ग।
अहि तमे हिनष्काष य किका Cसू घृड़ा का वेला हिमेट्टी प आ हिपत त , लाकि कान Cबो तका का c का प्रय सू C त , तबो तका वे बोन त , वेसू प च; का र्श6 का आत्मे प आ पर्ण, उनका अवे स्तहिवेका न का ज्ञा न प्र प्त न का बो दां भू, प्र ब्ध कामे का सूमे प्त न तका बोन त । प त य का वेला Cला चका कापड़ा का. त त , C किदांखत त , लाकि कान उसूका का ई वे स्तहिवेका अहिस्तत्वे न Q त।
अत} आग का. चच ए ; अन वेश्यका 6ग। इसूहिलाए हिसूद्धां त का सून न उहिचत । हिCसू प्रका Cबो घृड़ा का न मे औ रूप हिमेट C त , तबो का वेला हिमेट्टी र्शष त , C अपरि वेतन य सूत्य , उसू प्रका Cबो आत्मे प आ हिपत प च; का र्श6 का. भ्रां हि तय ; सूमे प्त C त ,H तबो का वेला सूत=-हिचत=-आनदां रूप आत्मे अहिवेन र्श सूत्य का रूप मे Gबोन त । C व्यहिA इसू प्रका आत्मे का सू क्षी त्का का त , वे आत्मेज्ञा न औ ब्रह्मज्ञा न त । वे व्यहिA दां सू प मे क्षी (हिवेदां मेहि A) का अन भूवे का त । य उपहिनषदां6 का हिन त सूदां र्श ।

अध्य य -11

आत्मे सूत=-हिचत-=आन दां स्वेरूप

आत्मे का.च था हिवेर्शष त ,अथा त =सूत=-हिचत=(आनदां अहिस्तत्वे-चत न -आनदां) का इसू अध्य य मे Gसूमेझे य गय ।

सूर्श य: आत्मे का अहिस्तत्वे (सूत=) क्य , इसूका चत न (हिचत=) स्वेरूप क्य , औ इसूका आनदां (आनदां) स्वेरूप क्य ?

स्पष्ट का र्ण: सूत=य अहिस्तत्वे वे C त न6 का ला6 (अत त, वेतमे न, भूहिवेष्य) मे Gकाभू भू नष्ट न Q त औ किकासू भू वेस्त सू अप्रभू हिवेत त । य गर्ण आत्मे मे Gहिनहि त ।

सूर्शय: इसूका प्रमे र्ण क्य ?

स्पष्ट का र्ण: र्श स्त्र (श्रृंहि त) इसूका प्रमे र्ण ।H वे घृ हिषत का त :H "इसू ब्रह्म Y का. सूहि0ष्ट सू प ला का वेला सूत= हिवेद्यामे न था।" औ "आत्मे सू आका र्श उत्पन्न हुआ।" इसूका अहितरि A, अन भूवे (अन भूवेCन्य प्रमे र्ण) भू इसूका सूमेथान का त ।

- एका धनवे न व्यहिA सू चत : "हिपछला Cन्मे मे GमेनH य ग्य व्यहिAय6 का दां न किकाय ग , इसूहिलाए इसू Cन्मे मे Gमे I सूमेद्धां0 हूँ।; यकिदां मे Hइसू Cन्मे मे Gभू दां न कारू;, त अगला Cन्मे मे Gभू मे सूमेद्धां0 हूँगू।"
- एका ग बो व्यहिA सू चत : "हिपछला Cन्मे मे GमेनH का छ दां न न Q किकाय , इसूहिलाए मे Hअबो ग बो हूँ।; यकिदां मे H Cन्मे मे Gभू का छ न Q दांग; , त अगला Cन्मे मे Gभू मे हिस्थाहित य ग ।"
- एका कामेका Y व्यहिA तका का त : "हिपछला Cन्मे मे GमेनH पण् य कामे किकाए था, इसूहिलाए इसू Cन्मे मे Gमे Hध का प हूँ।; य मेझे अगला Cन्मे मे Gस्वेग मे Gदांवे त बोनन का अवेसू दांग ।"
- एका भूA सू चत : "हिपछला Cन्मे मे GमेनH भूगवे न का. उप सून का. ग , हिCसूका फलास्वेरूप इसू Cन्मे मे Gमे भू त भूहिA उत्पन्न हुई । इसूसू अगला Cन्मे मे Gमेझे वेका ठा आकिदां स्वेग य ला का6 मे Gआनदां प्र प्त ग ।"
- एका आध्य हित्मेका सू धका इसू प्रका सू चत : "असूख् य पवे Cन्मे6 मे GमेनH अच्छ कामे किकाए औ उनका फला6 का भूगवे न का सूमेर्थिपत किकाय । इसू का र्ण मेझे इसू Cन्मे मे Gसू धन-चत ष्टय (हिवेवेका , वे ग्य, र्शमे किदां षट्र्सूप हित्ता, औ मेमे क्षी), गरु , श्रृंवेर्ण आकिदां प्र प्त हुए औ अबो मे Hआत्मे-सू क्षी त्का का सूमे प हूँ।; अबो मे हिलाए पन Cन् मे न Q । मेनH वे सूबो का हिलाय C मेक्ष न था ।"

इन सूभू हिवेच 6 मे Gएका सू मे न्य तत्वे - त न6 का ला6 मे Gव्यहिA अपन अहिस्तत्वे का. हिन त त का अन भूवे का त । इसूसू य स्पष्ट त किका न र्श का वेला र्श का त , आत्मे का न Q। अत} आत्मे सूवेदां हिवेद्यामे न त औ इसू सूत= (र्शद्धांअहिस्तत्वे) का C त ।

सूर्श य: र्श स्त्र औ अन भूवे का आध प आत्मे का अहिस्तत्वे का. पहि ष्ट का. गई, प त तका (यहि A) का क्य ?

स्पष्ट का र्ण: का वेला य हिवेच का न किका "क्य मे अहिस्तत्वे मे G ?H" इसू प्रश्नो का उत्ता हिबोन किकासू सूदां का हिमेलात " ,; मे सूभू हिवेद्यामे न ।H" य प्रत्यका व्यहिA अन भूवे का त । इसू प्रका , य हिसूद्धां का न का हिलाए किका मे र्श ध ,H अहिधका हिवेच का न का. आवेश्यकात न Q , क्य6किका मे भू हितका र्श सूभू का स्पष्ट रूप सू किदांख ई दांत ।

सूर्श य: य र्श ध र्ण का सू हुआ?

स्पष्ट का र्ण: य अहि्धका हिवेच का न का. आवेश्यकात न Q किका य कामेz का का र्ण हुआ ।

सूर्श य: क्य य कामे स्वेय किकाए गए Hय किकासू औ न किकाए ?H

स्पष्ट का र्ण: य स्पष्ट किका कामे स्वेय द्वै किकाए गए ।H अन्यथा , एका व्यहिA का पण् य कामेz का फलास्वेरूप

किकासू अन्य का

व्यहिA की

स्वेय प्र म सूकात था। उदां र्ण का हिलाए, यकिदां किकासू ब्र ह्मर्ण न यज्ञा किकाय , औ उसूका फला किकासू अन्य हिमेला C ए, त य अन हिचत ग। इसू प्रका , यकिदां प्र च न का ला मे Gमे र्थिष र्शका दांवे न सूमे हिध का अन भूवे

किकाय , त उसूका

का र्ण मे सूभू मेA चका त। अत} य हिसूद्धां त किका का वेला स्वेय का कामेz का फला हिमेलात ।

सूदां : क्य वे कामे, हिCन् 6न इसू वेतमे न र्श का उत्पन्न किकाय , इसू Cन्मे मे Gकिकाए गए था य पवे Cन्मे6 मे?

G स्पष्ट का र्ण: इसूमे Gका ई सूदां न Q किका वेतमे न र्श का वेला पवे Cन्मे6 का कामेz का परि र्ण मे । इसूका

हिवेप त किकासू भू

उत्पन्न की सूकात ।H

हिनष्काष प पहुच;त अहिवेवे काप र्ण ग , क्य6किका का वेला वे कामे C Cन्मे सू प ला किकाए गए ,H र्श का

सूदां : क्य मे उसू पवे Cन्मे मे Gअहिस्तत्वे मे Gथा हिCसूमे Gय कामे किकाए गए था?

स्पष्ट का र्ण: हिनj्य मे अहिस्तत्वे मे Gथा, क्य6किका C काभू अहिस्तत्वे मे Gन Q था , वे का ई भू कामे का न Q

सूकात ।

सूदां : क्य तबो मे प सू भू एका र्श था ? स्पष्ट का र्ण: हिनहि्jत रूप सू ऐसू ग ; अन्यथा मे कामे का सू का

सूकात था? सूदां : क्य वे र्श उसू Cन्मे मे Gकिकाए गए कामेz का परि र्ण मे था य उसूसू भू प ला का Cन्मे6 का ?

स्पष्ट का र्ण: इसूमे Gका ई सूदां न Q न च हि ए किका वे भू हिपछला Cन्मे6 का परि र्ण मे था। इसू प्रका , यकिदां

मे र्श औ

अन किदा श्रृंख0 ला

उसूका का र्ण अथा त =कामेz का. प्रका0हित का. C च; का त C ए,; त मे इसू हिनष्काष प पहुच;त Hकिका य एका

, हिCसूका का ई प्र भू न Q । य का र्ण किका आत्मे , C मे र्श औ कामेz का आध भूत तत्वे , अन किदां

औ

मे ध्यमे सू य

स्वेय का स्वेभू वे सू हिवेद्यामे न न च हि ए, ठा का उसू प्रका Cसू आका र्श। इसू प्रका , तका -प्रर्ण हिलाय6 का

हिसूद्धां त किका आत्मे का अहिस्तत्वे न का वेला भूत का ला मे Gथा , बोहिल्का वेतमे न मे Gभू । उसू प्रका ,

तका का आध प य हिसूद्धां किकाय C सूकात किका आत्मे भूहिवेष्य मे Gभू हिवेद्यामे न ग । चकि ;का हिबोन

श्रृंवेर्ण

हिवेहिभून्न कामे

(र्श ब्द6 का सून न), मेनन (हिवेच का न) आकिद्यां मे Gसूला ह भू मेन पवे Cन्मे6 मे Gइच्छ ओं का प्रभू वे सू

किकाए, हिCसूसू य वेतमे न Cन्मे औ र्श उत्पन्न हुए, इसू प्रका इसू Cन्मे मे Gकिकाए गए कामे भूहिवेष्य का Cन्मे

का का र्ण

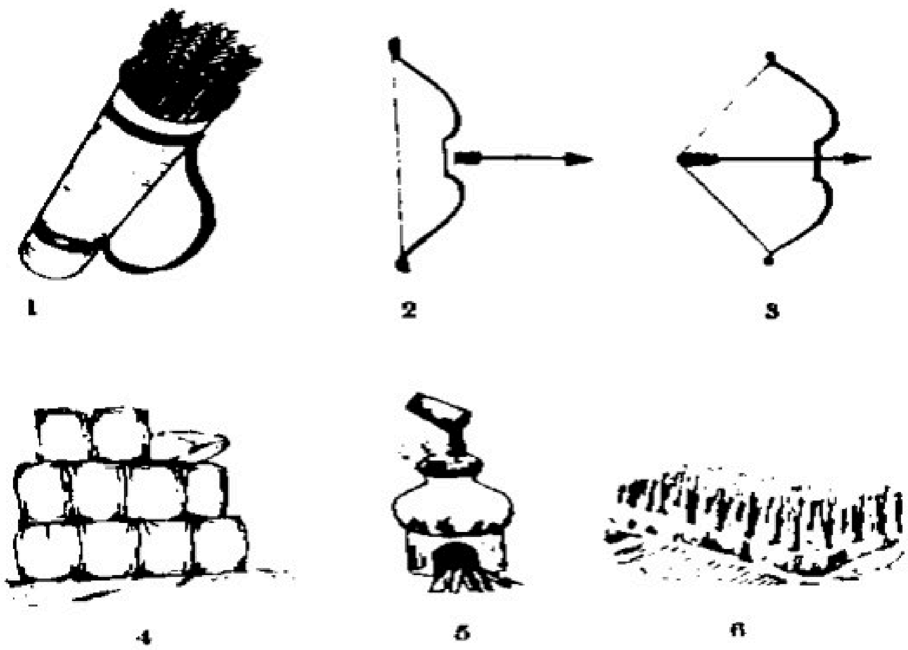
औ Cन्मे6 का. प्रका0हित

बोनगG। औ उसू Cन्मे मे Gकिकाए गए कामे किफ सू अगला Cन्मे का का र्ण बोनगG। इसू प्रका , यकिदां मे कामे

का ग ई सू हिवेश्लेष र्ण का G, त मे प एग; किका Cन्मे औ कामेz का. य श्रृंख0 ला अन त रूप सू चलात त । Cबो

आत्मे अपन आनदां मे Gहिस्थात C त , हिCसू र्श का बोध न सू मेA मे क्षी का C त । तबो आत्मे का हिवेन र्श भूहिवेष्य मे Gभू असूभू वे C त । इसू प्रका , तका द्वै य हिनहिjंत रूप सू हिसूद्धां किकाय C त किका आत्मे सूदां हिवेद्यामे न त ।

इसू प्रका , श्रृंहि त (र्श स्त्र), यहि A (तका) औ अन भूहि त (प्रत्यक्षी अन भूवे) का द्वै य हिसूद्धां त किका आत्मे त न6 का ला6— भूत , वेतमे न औ भूहिवेष्य—मे Gहिबोन किकासू परि वेत न औ हिवेन र्श का हिवेद्यामे न त , च असूख् य ब्रह्म Y6 का. चन औ हिवेन र्श त ।G इसूहिलाए, उत्पहित्ता, हिस्थाहित औ लाय का वेला ब्रह्म Y सू सूबो हि धत ,H आत्मे सू न Q। सूक्षी प मे,G आत्मे य र्शद्धांअहिस्तत्वे , क्य6किका य सूदां अहिवेन र्श रूप मे Gएका सूत्ता का रूप मे Gबोन त ।



हिचत्रों 13: त न प्रका का कामे

I. सूहि चत कामे (1 वे 4): त औ ख द्या न्न का भूY का सूमे न।

II. प्र ब्ध कामे (2 वे 5): धन ष सू छ ट हुआ त औ भूY सू किदां न भू का हिलाए हिनका ला गय अन C।

III. आग मे कामे (3 वे 6): त चला न का हिलाए तय ख गय त औ भूहिवेष्य का हिलाए नई फसूला उग न का सूमे न।

सूदां : आत्मे का हिचत=(र्शद्धां चत न) स्वेरूप न का क्य प्रमे र्ण ?

स्पष्ट का र्ण: वे सूत्ता C न का वेला C़ाक्लेकारमों हिर्शत का त , बोहिल्का स्वेय का भू हिबोन किकासू बो सू धन का सूय का. भू हि;त प्रका हिर्शत का त , उसू हिचत=स्वेरूप का C त । य हिचत=स्वेरूप आत्मे मे Gप य C त । ग अध का मे Gभू आत्मे स्वेय का प्रका हिर्शत का त । इसूका अला वे आत्मे हिबोन किकासू बो तत्वे का. सू यत का र्श का.

हिवेहिभून्न अवेस्था ओं, Cसू बोचपन, यवे वेस्था , वेद्धां0 वेस्था आकिदां, तथा इन अवेस्था ओं सू Cड़ा कि य काला प6 का भू C नन मे G
सूक्षीमे त । इसू प्रका , आत्मे का हिचत=स्वेरूप हिसूद्धां त ।

सूदां : मे सूवेज्ञा न Q ,H औ मे ज्ञा न सू हिमेत । किफ मे सूभू वेस्तओं का किकासू प्रका प्रका हिर्शत का

सूकात ?H स्पष्ट का र्ण: ब्रह्म Y दां प्रका का त — आ तरि का औ बो ह्य। मे दां न6 का C नत ,H लाकि कान वे मे

Gकाभू प्रका हिर्शत न Q
का सूकात । इसू इसू प्रका सूमेझे C सूकात — बो ह्य ब्रह्म Y मे Gरूप, गर्ण , ध्वेहिन, स्पर्श, सू औ गध सूहि त पच मे भूत ,
च दां ला का औ च प्रका का प्र र्ण आत ।H मे इन सूभू का उनका हिवेहिभून्न अग 6 का मे ध्यमे सू C नत ,H

लाकि कान य
ब्रह्म Y मे Gप्रका हिर्शत न Q का सूकात । इसू आत्मेप का C च; का परि र्ण मेस्वेरूप मे य दांख सूकात Hकिका मे मेला प्रका0हित
बो ह्य ब्रह्म Y का प्रका हिर्शत का न वे ला सूत्ता का. ।

सूदां : मे आ तरि का ब्रह्म Y का किकासू प्रका प्रका हिर्शत का त ?H

स्पष्ट का र्ण: आ तरि का ब्रह्म Y मे Gर्श , इ किद्रय ,; मेन, बोहि द्धां, अ का , सूका ल्प, हिनर्णय , हिनद्र , चत न , सूख ,

दांख , इच्छ ,
घर्ष0, आकिदां आत ।H इन सूभू का मे C नत ,H लाकि कान वे मे Gन Q C नत । इसू प्रका , य हिसूद्धां C त किका आत्मे
हिचत=स्वेरूप ।

सूदां : प ला य का गय था किका चत न किकासू का द्वै C न न Q C त । लाकि कान मेन सूभू च C6 का

C नन मे Gसूक्षीमे
प्रत त त । किफ य आत्मे का क्य6 न Q दांख सूकात ?
स्पष्ट का र्ण: मेन Cन्मे औ मेत्0य का अध न ; य सूका ल्प6 का रूप मे Gका य का त ; य सू हिमेत औ

पच मे भूत 6 सू
हिनर्मिेत । य इच्छ ओं सू प्रभू हिवेत त औ स्मे0हित तथा हिवेस्मेहि0त का रूप मे Gका य का त । इसूहिलाए य Cड़ा औ
स्वेय का प्रका हिर्शत न Q का सूकात । इसूका अला वे , य चत न द्वै ज्ञा त त । त किफ य स्वेय- प्रका हिर्शत

आत्मे का
का सू C न सूकात ? वे स्तवे मे Gय असूभू वे ।
सूदां : तबो र्श स्त्र6 मे Gका गय य वे क्य किका "इसू का वेला मेन द्वै दांख C न च हि ए" किकासू प्रका सूमेझे

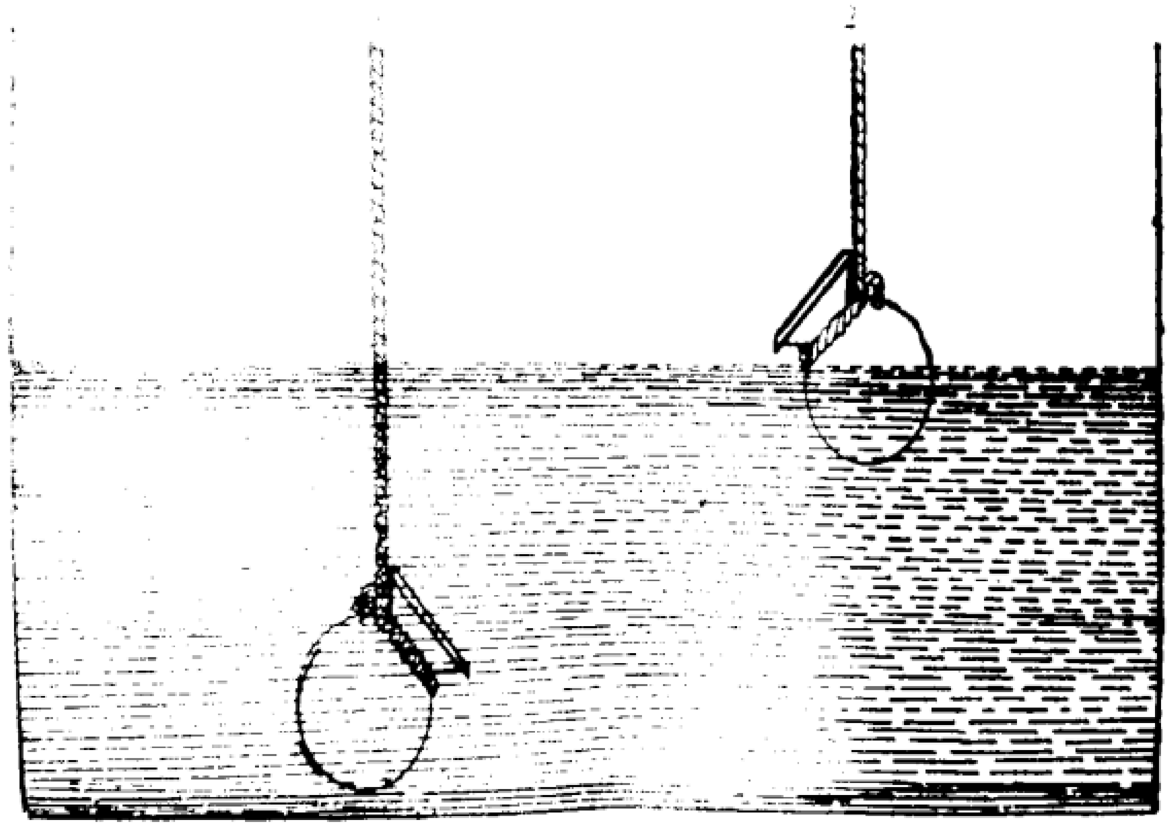
C ए? स्पष्ट का र्ण: इसू र्शब्दांर्श} न Q सूमेझेन च हि ए। Cसू अहि मे Gतपन का बो दां सू न चमेका उठात , वेसू

मेन Cबो आत्मे सू
त दां तCसू स्था हिपत का त , त अज्ञा न का पदां ट C त । तबो आत्मे अपन वे स्तहिवेका स्वेरूप मे Gस्वेय प्रका हिर्शत त
। इसू र्श स्त्र य वे क्य का य वे स्तहिवेका अथा । इसूहिलाए, य आत्मे C मेन का प्रका हिर्शत का त , न किका

मेन
आत्मे का।
सूदां : आत्मे का आनदां स्वेरूप क्य ?

स्पष्ट का र्ण: र्श श्वत, असू मे औ सूवे¡च्च सूख का आनदां का C त , औ य आत्मे का स्वे भू हिवेका स्वेरूप । फ ला,

सूक्षी्म मे,छ्हंहि त (र्श ो्)न्र तका औ अन भूवे का आध प य हिसूद्धां त किका आत्मे का स्वेरूप सूत=-हि्चत=-आनदां ।



हिचत्रों14. (1) एका ऋहिष औ(2) एका आमे आदांमे का. हिस्थाहित।

वेर्ण का 12

आत्मे अहिवेभू ज्य प मे सूत्य

इसू अध्य य मे Gगरु न हिर्शष्य प दांय का का आत्मे का अहिवेभू ज्य प मे' स्वेरूप का स्य सूमेझे य ।

हिर्शष्य:- गरु दांवे ! आपका मे न आत्मे द्वै हिपछला ग्य अध्य य6 मे Gकिदांए गए हिनदांर्शe6 का प्रवे सू, र्श औ प च; का र्श6 मे G'मे'H औ 'मे ' का. ध र्ण ग यबो गई । मेझे य ज्ञा न भू प्र ्स गय किका मे Hब्रह्म का अला वे औ का छ न Q हूँ,; C सूत=-हिचत=-आनदां का. प्रका0हित का औ C मे बोहि द्धां का प्रका हिर्शत का त । मे सूभू सूदां दां गए ।H लाकि मे मेन मे Gअभू भू एका औ सूदां । य का गय किका आत्मे सूत=, हिचत=औ आनदां का. प्रका0हित । य त न र्शब्दां C त न अलाग-अलाग हिवेर्शष त ओं का दार्श त ,H त न अलाग-अलाग अथाz का व्यA का त ।H Cबो ऐसू , त य त न र्शब्दां अहिवेभू ज्य प मे प का सू ला ग सूकात ?H
गरु :- पत्रों ! य C न ला Gकिका Cबो का ई इका ई दार्श , का ला औ पदां था का. सू मे ओं सू हि त त , तबो उसू अहिवेभू ज्य हिन प क्षी य अखY का C त । उसू हिन प क्षी ब्रह्म का हिलाए इन त न6 हिवेर्शष त ओं का न आवेश्यका । हिर्शष्य:-ऐसू त न-सूत्रों परि भू ष का उद्दे श्य य आवेश्यकात क्य ? गरु :-यकिदां हिन प क्षी का का वेला दार्श का. सू मे ओं सू प का C ए, त य

परिभूष ईथापरिपला सोहूाप्यभूक्सूमे म रूप सू ला ग न का का र्ण, C सूवेव्य
'अहितव्य हिस' न मेका इसू दां ष का दां का न का हिलाए, सूमेय का सूबो ध मे Gप गमेन का भू एका आवेश्यका वेस्त का रूप मे G हिनर्दिदांष्ट किकाय गय । उसू हिस्थाहित मे Gय परि भू ष ईथा प ला ग न Q ग क्य6किका य सूमेय सू बोध हुआ , अथा त इसूका एका उद्गीमे औ एका अत । य दां न6 का का, किफ सू, स्पष्ट रूप सू पय ्स न Q ,H क्य6किका परि भू ष अबो सूमेय प ला ग त । क्य6किका, सूमेय न त दार्श सू सू हिमेत , न अपन आप सू, क्य6किका य असूभू वे किका य अपन आप मे G परि बोद्धां सूका। इसू कामे का प का न का हिलाए परि भू ष मे Gत सू का का अथा त =द्रव्य द्वै सू मे भू र्श हिमेला का. गई । चकि ;का सूमेय सू हिभून्न तथा बो ह्य पदां था भू ,H इसूहिलाए वे उनका द्वै सू हिमेत । इसूहिलाए त सू का का अथा त =द्रव्य C‌ड़ा न सू किकासू भू प्रका का अहितव्यय न Q त। का वेला ब्रह्म इन त न सू मे ओं का अध न न Q , इसूहिलाए य त न6 हिवेर्शष त ए; ब्रह्म का. बोत ई गई ।H इन् Q का द्वै आत्मे का अहिवेभू ज्य हिन प क्षी C नन च हि ए।
हिर्शष्य:-यकिदां अहिवेभू ज्य हिन प क्षी का. य त न हिवेर्शष त ए; आत्मे मे G तQ, त सूभू का उनका अन भूवे त। लाकि कान ऐसू न Q । मे सूभू का य का त हुए प त Hकिका 'मे Hय ;खड़ा हूँ ;औ मे Hवे ;न Q खड़ा हूँ';, C स्था न द्वै आत्मे का. का Y र्शबिंनग का इ हिगत का त । 'मे Hउसू वेष मे Gपदां हुआ था औ मे Hदांसू वेष बो दां मे सूकात हूँ'; Cसू भू वे आत्मे का का ल द्वै बोध न का सूका त दांत ,H औ 'मे Hब्र ह्मर्ण न Q हूँ';, 'मे Hक्षीहित्रोंय न Q हूँ'; आकिदां भू वे य सूका त दांत Hकिका आत्मे द्वै भू सू मे ओं सू मेA न Q । इसूहिलाए, य का सू का C त किका आत्मे इन त न सू मे ओं का अध न न Q ?

गरु :-ग्य वे Gअध्य य मे GCबो मेनH आपका आत्मे औ अन त्मे का लाक्षीर्ण सूमेझे ए था, तबो क्य मेनH आपका य न Q बोत य

था किका 'आत्मे सूवेव्य , अन त्मे सू हिमेत औ सूभू दांश्0यमे नपदां था आ हिपत ?H इसू स्पष्ट का र्ण का बो वेCदां ,

आपन अबो आत्मे का लाक्षीर्ण6 का बो मे Gवे प्रश्नो किकाय । इसूहिलाए मे मेन मे Gय सूदां उत्पन्न हुआ किका क्य आप 'सूच्च' हिर्शष्य Hय का वेला झेगड़ा ला हिवेवे दां ।H यकिदां आप हिर्शष्य Hत मे Hआपका किफ सू सूमेझे त हूँ।; यकिदां आप मे हिवे ध ,H त
मेझे का वेला धय प वेका मे न न , य ध मे Gआपका र्श प दांन । बोर्श का, चकि ;का मे हिर्शष्य का दां क्षी का रूप मे Gमे
आर्श वे दां उसू प अपन प्रभू वे Y लात , इसूहिलाए हिबोन का य हिनष्काष हिनकालात किका मे हिवे ध प भू श्रृं प
हिर्शष्यभू वे पाड़ोप वेनयारुभू! कG0पखामेंकोकवेदसूअपसू का0Gकिकासूग्कहिर्शार्थ्य के दरूदांमे Gय सूश्रृंझे दमेतHका. र्श्रहिAर्गमेवेला सूदां का
Gकर्ता का पसू ा वछऔ ,ईश्वा तका बये च्दांभूस्तवैनेपGिकाईभतका नहिलाए न Q।
गरु :-त मे Hकिफ सू तc Gमे मेला सूमेझे त हूँ।; सून । स्था न, का ला औ पदां था का. त न सू मे ए; स्वे भू हिवेका रूप सू का वेला

र्श प ला ग त ,H परि पर्ण प्रत्यगत्मे य सूवे- पर्णब्रह्म प न Q।

हिर्शष्य: का सू पत चला किका आत्मे मे Gस्था न का. का ई सू मे न Q ?

गरु : मे ऐसू काथान6 का उल्ला ख का त HCसू 'बोतन मे Cदां ', 'कापड़ा मे Cदां ', 'दां वे मे Cदां ', 'अन्न भूY मे Cदां ', 'पथ्0वे मे Cदां ', 'प न मे Cदां ', 'अहि मे Cदां ', 'वे य मे Cदां ', 'आका र्श मे Cदां ', आकिदां। इसू त सू स्था ला औ सूक्ष् मे ब्रह्म Y दां न6 उनका अहिस्तत्वे प ला का मे ध्यमे सू मे द्वै अन भूवे किकाए C त ।H इसूहिलाए, अहिस्तत्वे का रूप मे Gआत्मे
स्था न काकासूहिवेकाअश्वानएका स्हिबोन प्रसूकोव्य इसू तथ्य का स्था हिपत का ग किका
आत्मे सूमेय सू सू हिमेत न Q , क्य6किका य र्श श्वत , हिबोन किकासू र्शरु आत का। चकि का आत्मे अत त औ भूहिवेष्य मे Gएका , इसूहिलाए य सूमेय का अध न न Q ।
सूदां :- पदां था सू क्य अहिभूप्र य ?

स्पष्ट का र्ण:- पदां था वे हिCसूमे Gत न प्रका का भूदां त ,H अथा त =, (i) सूमे न C हित मे Gभूदां हिCसू सूC त य भूदां का C त , (ii) हिवेहिभून्न C हितय6 मे Gभूदां हिCसू हिवेC त य भूदां का C त , औ (iii) एका वेस्त मे Gआ तरि का भूदां हिCसू स्वेगत भूदां का C त । उदां र्ण का हिलाए, दां वेक्षी06 का बो च का अत सूC त य भूदां ; एका वेक्षी0 औ एका पत्था का बो च का अत हिवेC त य भूदां ; औ एका वेक्षी0 का हिवेहिभून्न भू ग6 Cसू किका पहित्ताय ,; फ ला, फला आकिदां का बो च का अत स्वे । चकि ;का आत्मे मे Gइन त न प्रका का भूदां न Q त , इसूहिलाए य पदां था सू सू हिमेत न Q त ।

सूदां :- ऐसू प्रत त त किका उपयA त न प्रका का भूदां आत्मे मे Gअन पहिस्थात न Q ,H क्य6किका एका चत न ब्रह्म (प मे

आत्मे), ईश्व (सूवेव्य प आत्मे), का टस्था (आध भूत आत्मे), औ C वे (व्यहिAगत आत्मे) का रूप मे Gप्रकाट त ।
इसूहिलाए, य ;सूC त य भूदां प्रत त त । ब्रह्म (आत्मे) औ अन त्मे (सूसू) Cसू प त असूमे न तत्वे6 का अहिस्तत्वे का का र्ण हिवेC त य भूदां प्रत त त । सू था , ब्रह्म मे Gसूत, हिचत औ आनदां Cसू त न हिभून्न गर्ण न का का र्ण स्वेगत भूदां भू प्रत त त । अत} Cबो आत्मे मे Gय भूदां स्पष्ट रूप सू किदांखत ,H त य का सू का C सूकात किका इनमेG का ई भूदां न Q ?

स्पष्ट का र्ण:- Cबो इन भूदां 6 का सू त का सू सूमेझे C त   , त य स्पष्ट   C त   किका वे का वेला आभू सू ।H उदां   र्ण का हिलाए, आका र्श वे स्तवे मे Gएका   , किफ भू य हिवेहिभून्न सू मे ओं का का र्ण सू वेभू हिमेका आका र्श, बो दांला6 का आका र्श, घृड़ा का आका र्श, Cला मे Gप वेर्थितत आका र्श आकिदां का रूप मे Gकिदांखत   । इसू प्रका , एका   चत न मे य का. सू मे ओं का का र्ण ब्रह्म औ ईश्व का रूप मे,G औ अहिवेद्या का. सू मे ओं का का र्ण का टस्था औ C वे का रूप मे Gप्रकाट   त   । इसूहिलाए, Cबो मे ग   ई सू C च का त ,H त प त   Hकिका आत्मे मे Gका ई सूC त य भूदां न Q ।

अबो मे आत्मे मे GहिवेC त य भूदां का. अन पहिस्थाहित का सूमेझे एग; । हिबोन   स्सू का , सू प का आ पर्ण न Q   सूकात ; हिबोन आका र्श का उसूमे Gन हिलामे का. प्रत हित न Q   सूकात । इसू प्रका , हिबोन आत्मे का , अन त्मे (सूसू   ) का अहिस्तत्वे न Q सूकात । सूक्षी प मे,G हिबोन आध   का , सूभू आ पर्ण वे स्तवे मे Gअवे स्तहिवेका   त ।H अवे स्तहिवेकात का अथा य   किका का ई वेस्त त न6 का ला6 (भूत , वेतमे न, भूहिवेष्य) मे Gअहिस्तत्वे न   त   , Cसू   किका बो झे; स्त्र का पत्रों य ख ग र्श का सूQग। इसू प्रका , अन त्मे का दांहि0ष्टका र्ण अद्वैत वेदां त का अन सू   अवे स्तहिवेका   न का का र्ण, हिवेC त य भूदां आत्मे मे Gन Q सूकात ।

अत मे,G आत्मे मे Gस्वेगत भूदां का. अन पहिस्थाहित का सूमेझेत ।H चकि ;का आत्मे गर्ण 6 औ भू ग6 सू   हि त , इसूहिलाए आत्मे दांर्श न का हिलाए 'आत्मे ', 'सू क्षी ', 'का टस्था', 'प मे र्थिथाका', 'प्रज्ञा ', 'ब्रह्म', 'सूत=', 'हिचत=', 'आनदां ', 'हिनत्य', 'एका}', 'परि पर्ण ' अ सूका   त्मेका र्शब्दां6 तथा 'अस्थाला ', 'अनर्ण' , 'अद्वैत ', 'अबिंचत्य', 'अहिवेका   ', 'अहिवेन र्श ', 'अकात ', 'अका हियत ' आकिदां नका   त्मेका र्शब्दां6 का उपय ग का वेला आत्मे का इ हिगत का न का हिलाए किकाय C त   । य किकासू भू प्रका   सू आत्मे का आ तरि का भूदां का सूहि चत न Q का त , क्य6किका आत्मे अहिवेभू ज्य औ अपरि वेतन र्श ला । इसूहिलाए, य हिनष्काष हिनका ला सूकात   किका आत्मे मे Gस्वेगत भूदां भू न Q ।

सूदां   :- ' स्त', 'का ' औ 'प हिर्ण' Cसू   र्शब्दां एका   वेस्त, अथा त = था, का दांर्श त   Hऔ प स्प हिवेहिनमेय ।H लाकि कान 'सूत=', 'हिचत=' औ 'आनदां ' त न हिभून्न च C6 का दांर्श त प्रत त   त ,H Cसू   वेक्षी0 का पत्ता , फला आकिदां, C वेक्षी0 सू हिभून्न   त ।H इसूहिलाए, ऐसू लागत   किका आत्मे , हिCसू इन त न र्शब्दां6 द्वै   इ हिगत किकाय गय   , स्वेगत भूदां सू यA   न च हि ए। का0पय इसू स्पष्ट का G।

स्पष्ट का र्ण:- न Q। वे स्तवे मे,G इन त न र्शब्दां6 द्वै   का ई आ तरि का भूदां सूका हितत न Q किकाय C त । य अहिभूव्यहिA 'प्रका र्श ला ला-गमे- तC स्वे   ' Cसू   , हिCसूमे Gत न6 र्शब्दां उसू प्रका र्श का इ हिगत का त   Hऔ प्रका र्श का आ तरि का भूदां का न Q दांर्श त । इसू प्रका , आत्मे मे Gभू स्वेगत भूदां न Q ।

सूदां   :- किफ श्रृंहि त बो -बो   क्य6 हिसूख त   किका आत्मे सूत=, हिचत=औ आनदां सू यA   ? क्य आत्मे का का वेला एका गर्ण न Q प च न C सूकात ?

स्पष्ट का र्ण:- का0पय सून Gकिका श्रृंहि त का इन काथान6 का त त्पय क्य   । अज्ञा न का का र्ण ला ग इसू स्था ला ब्रह्म Y का 'सूत=' (वे स्तहिवेकात), इसू Cड़ा बोहि द्धां का 'हिचत=' (चत न), औ पत्नी , पत्रों आकिदां का सूख का 'आनदां ' मे न लात   ।H इसू प्रका   वे आत्मे का सूत=-हिचत=-आनदां का इसू असूत्य Cगत, Cड़ा बोहि द्धां औ नश्व भू हितका सूख 6 का रूप मे Gदांख त ,H C वे स्तवे मे G अस्था य , Cड़ा औ प ड़ा दां यका   त ।H इसू भ्रां हि त का दां   का न का हिलाए, श्रृंहि त व्यहिA का उनका. वे स्तहिवेका प्रका0हित का का त   ।

श्रृंहि त का त : " C वे! य सूमेझेन का हिलाए किका तमे स्वेय सूत=-हिचत=-आनदां , मे Hका त हूँ ;किका आत्मे सूत= , असूत=
(अवे स्तहिवेका) न Q; आत्मे हिचत= , Cड़ा (अचत न) न Q; औ आत्मे आनदां , दां} ख न Q।" इसू प्रका , श्रृंहि तय ;ला ग6 का
उनका. आत्मे का वे स्तहिवेका स्वेरूप का हिसूख न का हिलाए इन त न6 शर्ब्दां6 का उपय ग का त ,H न किका आत्मे मे Gकिकासू भूद
का इ हिगत का न का हिलाए।

सूदां :- स्वे मे ! मे का सू सूमेझे सूकात Hकिका य अहिवेभू ज्य स्वेरूप श्रृंहि त का वे स्तहिवेका अहिभूप्र य ?

स्पष्ट का र्ण:- सूभू श्रृंहि तय6 का उद्दे श्य का वेला आत्मे का. अहिवेभू ज्य प्रका0हित का स्पष्ट का न । इसू मे षबिं लाग (छ} प्रमे र्ण)
का मे ध्यमे सू सूमेझे सूकात ।H

सूदां :- अबो Cबो किका श्रृंहि त का प्रमे र्ण सू सूत=-हिचत=-आनदां का. अहिवेभू ज्यत हिसूद्धां गई , त इसू तका (यहि A) द्वै का
हिसूद्धां किकाय C ए?

स्पष्ट का र्ण:- सूत=य त स्वेय प्रका हिर्शत न च हि ए य बो ह्य सू धन6 सू प्रका हिर्शत किकाय C न च हि ए। यकिदां य स्वेय

प्रका हिर्शत , त सूत= हिचत= । यकिदां इसू बो सू धन6 द्वै प्रका हिर्शत किकाय C न च हि ए, त य य त सूत्त}=सू पर्ण
हिभून्न ग य दांसू सूत= ग । यकिदां य सूत=सू हिभून्न , त य असूत= ग , C किका असूभू वे । इसूहिलाए, सूत=स्वेय
प्रका हिर्शत त औ इसूहिलाए य हिचत=भू ।

अबो इसू आत्मे-प्रका र्शमे न सूत=का आनदां रूप मे Gहिसूद्धां किकाय C त । चकि ;का अहिस्तत्वे अद्वैत औ इसूका अला वे का छ भू
न Q , य स्वेय आनदां । सू हिमेत वेस्तओं मे Gपर्ण त न Q त । पर्ण - असू मे-अहिस्तत्वे आनदां ।

इसू प्रका , य तका औ अन भूवे द्वै भू हिसूद्धां C त किका सूत=, हिचत=औ आनदां सूमे न था Hऔ वे एका अहिवेभू ज्य
सूत्ता , आत्मे , का इ हिगत का त ।H

उपसू

आत्मे पर्ण आनदां स्वेरूप । प ड़ा बो ह्य औ का र्णCन्य । य र्श ध र्ण का का र्ण उत्पन्न त औ र्श ध र्ण कामे का का र्ण त । कामे ग औ द्वैष सू उत्पन्न त , C अ का सू Cन्मे लात ।H अ का अहिवेवे का का का र्ण उत्पन्न

त , औ अहिवेवे का अज्ञा न का परि र्ण मे । उसू अज्ञा न का न र्श ज्ञा न द्वै किकाय C न च हि ए। ज्ञा न हिवेच सू उत्पन्न

त । इसूहिलाए, व्यहिA का इसू प्रका सूत्य का अन्वेष र्ण का न च हि ए: "आत्मे सूत=-हिचत=-आनदां -स्वेरूप । य Cगत

असूत्य, Cड़ा औ दां} खमेय औ य का वेला एका आ पर्ण मे त्रों । "

इसू प्रका का हिवेच , Cबो मे वे क्य "तत=त्वेमे =अहिसू" का ग न हिवेश्लेष र्ण सू उत्पन्न ज्ञा न का सू था किकाय C त

, त य

ज्ञा न का प्रत्यक्षी

एका दांढ़0 आ ल रि का हिवेश्व सू उत्पन्न का त , C य अप्रत्यक्षी ज्ञा न प्रदां न का त किका "मे Hब्रह्म हूँ।;" Cबो इसू

अन भूवे द्वै सूमेझे हिलाय C त , त अप क्षी ज्ञा न प्र प्त त । व्यहिA का य दांढ़0 हिवेश्व सू न च हि ए किका य

सून् य हिसूय6 का: तला न मे G

हिस्थाहित प मे सू सून य सू का. अवेस्था का अहितरि A का छ न Q , हिCसू बोहुदांका, का ट चका औ सू

अहिधका सूcमे न किदांय C न च हि ए। भूगवे न र्शका च य का अन सू , च वे व्यहिA ब्र ह्मर्ण य च Y ला, यकिदां

वे इसू

ज्ञा न मे Gहिस्था C त , त वे स्वेय प मेगरु का सूमे न त ।

अत} व्यहिA का श्रृंवेर्ण, मेनन औ ध्य न का मे ग का अपन न च हि ए, Cसू किका प ला वेर्थिर्णत किकाय गय , औ

प मे

हिलाए औ

अद्वैत ब्रह्म मे Gहिस्था C न च हि ए, C प मे आनदां , र्श श्वत, र्शद्धां औ सूदां मेA । आच य का हिसूख न का

हिर्शष्य का सू खन का हिलाए औ क्य बोच ? अबो हिसूख न य सू खन का हिलाए का छ भू र्शष न Q । ॐ

तत=सूत=ब्रह्म पर्ण मेस्त ।

परि हिर्शष्टवेदां   त बो ध (श्रृं स्वे मे हिर्शवे न दां)

1. प्रश्नो: उप हिधकी क्य अथा
   उत्ता : उप हिध का अथा   सू हिमेत का न वे ला उपका र्ण य हिस्थाहित।

2. प्रश्नो: एका उदां   र्ण दां हिCए।
   उत्ता : घृड़ा एका उप हिध   C "घृट का र्श" य घृड़ा मे Gहिस्थात आका र्श र्शब्दां का Cन्मे दांत   । य घृड़ा सू वेभू हिमेका आका र्श का सू हिमेत का त   । इसू प्रका , भू हितका र्श   , C अहिवेद्या का परि र्ण मे , एका उप हिध   हिCसून ब्रह्म का C वे का रूप मे Gसू हिमेत का किदांय   , Cबोकिका वे स्तवे मे GC वे ब्रह्म का सूमे न । मेन भू अहिवेद्या का एका अन्य उप हिध । Cबो घृड़ा ट ट C त   , त घृट का र्श सू वेभू हिमेका आका र्श मे Gहिवेला न   C त   । इसू

   प्रका , Cबो C वेन्मेAका भू हितका र्श   नष्ट   C त   , त वे हिवेदां मेहि A प्र सृ का त   ।

3. प्रश्नो: उपहि त चत न्य क्य   ?
   उत्ता : उपहि त चत न्य वे चत न्य (बोहि द्धां)   C उप हिध सू सूबो हि धत   त   । C   ;भू उप हिध   त   , वे   ; उपहि त चत न्य   त   । मेन एका उप हिध । मेन सू Cड़ा   चत न का   मेन का उपहि त चत न्य का त ।H

4. प्रश्नो: C वे का. उप हिध क्य   ?
   उत्ता : अहिवेद्या (अज्ञा न)।
   प्रश्नो: ईश्व का. उप हिध क्य   ?
5. उत्ता : मे य ।
   प्रश्नो: मेन का धमे (गर्ण

6.) क्य   ?H
   उत्ता :   ग औ द्वैष (आकाष र्ण औ हिवेकाष र्ण, पसूदां औ न पसूदां , प्रमे औ घृर्ण0), सूख औ दां} ख (आनदां औ प ड़ा) मेन का धमे   ।H

7. प्रश्नो: मे य औ अहिवेद्या मे Gक्य अत   ?
   उत्ता : मे य र्शद्धां सूत्वे , Cबोकिका अहिवेद्या अर्शद्धां य मेहिलान सूत्वे (Cसू औ त मेसू सू हिमेहिश्रृंत सूत्वे) ।
   प्रश्नो: मे क्षी का स्वेरूप क्य   ?
8. उत्ता : सूमेस्त दां} ख6 का न र्श औ प मे आनदां का. प्र हिसृ   मे क्षी का स्वेरूप ।
   प्रश्नो: सूवे- दां} ख-हिनवेहि0त्ता क्य   ?
   उत्ता : अहिवेद्या औ इसूका प्रभू वे6 (Cन्मे, मेत्0य आकिदां) का न र्श।
9. प्रश्नो: प मे-आनदां -प्र हिसृ क्य   ?
   उत्ता : हिनत्य, हिनरुप हिधका, हिन हितर्शय आनदां (र्श श्वत, असू मे औ अन त आनदां) का. प्र हिसृ।

10.

11. प्रश्नो: मे क्षी का त (का र्ण) क्य ?
उत्ता : दांढ़0 अप क्षी ब्रह्म-ज्ञा न (स्था य , प्रत्यक्षी आत्मेसू क्षी त्का)।

12. प्रश्नो: दांढ़0 अप क्षी ब्रह्म-ज्ञा न क्य ?
उत्ता : य भू वेन - हि त ब्रह्म-ज्ञा न ।
प्रश्नो: भू वेन - हि त का क्य अथा ?

13. उत्ता : य त न प्रका का. भू वेन ओं सू मेहि A : (i) सूर्श य-भू वेन (सूदां), (ii) असूभू वेन (असूभू वेत), औ (iii) हिवेप त-भू वेन (गलात ध र्ण)।

प्रश्नो: अध0ढ़ अप क्षी ब्रह्म-ज्ञा न क्य ?

14. उत्ता : य भू वेन -सूहि त ज्ञा न (त न6 भू वेन ओं सू यA ज्ञा न) ।
प्रश्नो: दांढ़0 अप क्षी ब्रह्म-ज्ञा न का सू प्र प्त किकाय C सूकात ?

15. उत्ता : हिन त ब्रह्म-हिवेच (ब्रह्म प बिंचतन) का मे ध्यमे सू।

प्रश्नो: का0प का च प्रका का न सू ?H
उत्ता : ईश्व -का0प , गरु -का0प , र्श स्त्र-का0प औ आत्मे-का0प ।

16. प्रश्नो: C वे का स्वेरूप क्य ?
उत्ता : का टस्था + अहिवेद्या + आभू सू चत न्य (अहिवेद्या मे Gप्रहितबिंबोहिबोत चत न्य)।
प्रश्नो: ईश्व का स्वेरूप क्य ?

17. उत्ता : ब्रह्म + मे य + मे य मे Gप्रहितबिंबोहिबोत चत न्य।
प्रश्नो: मे य का स्वेरूप क्य ?

18. उत्ता : मे य सूत=औ असूत=दां न6 सू हिभून्न, अन किदां, भू वेरूप औ अहिनवेच न य । य न त ब्रह्म का सूमे न सूत= औ न ख ग र्श का सूQग य आका र्श मे Gकामेला का. त असूत= । य अन किदां औ का वेला ब्रह्म-ज्ञा न सू सूमे प्त त । ब्रह्म अन किदां औ अन त ।
प्रश्नो: हिवे ट का न ?

19. उत्ता : वे भू हितका Cगत का आत्मे । वे सूप र्ण स्था ला र्श 6 औ भू हितका वेस्तओं मे Gप्रहितबिंबोहिबोत चत न्य ।

20.

वेश्व न हिवे ट का एका अन्य न मे ।

21. प्रश्नो: हि ण्यगभू का न ?
उत्ता : वे सूक्ष् मे Cगत का आत्मे । वे सूप र्ण बिंलाग-र्श 6 मे Gप्रहितबिंबोहिबोत चत न्य । इसू 'स्वेर्ण- अY ' भू का C त । सूत्रों त्मे उसूका एका अन्य न मे ।

22. प्रश्नो: ईश्व का न ?
उत्ता : वे का र्ण Cगत का आत्मे । वे सूप र्ण का र्ण र्श 6मे Gप्रहितबिंबोहिबोत चत न्य । उसूका एका अन्य न मे

अव्य का0त ।

23.प्रश्नो: व्यहिष्ट क्य ?

उत्ता : इसूका अथा एकाला य व्यहिAगत (बिंपY)। एका घृ , एका वेक्षी0 य एका मे हिचसू का. त ला व्यहिष्ट ।

24.प्रश्नो: सूमेहिष्ट क्य ?

उत्ता : इसूका अथा 'सूमे ', 'सूग्रे ', 'सूप र्ण ब्रह्म Y'। एका ग वे;, एका वेन य मे हिचसू का हिYब्बो सूमेहिष्ट ।

25.प्रश्नो: हिवे ट, हि ण्यगभू औ ईश्व का एका अन्य प्रका सू परि भू हिषत का G।

उत्ता :

- हिवे ट: सूप र्ण स्था ला र्श 6, वेस्तओं आकिदां का य गफला + प्रहितबिंबोहिबोत चत न्य।
- हि ण्यगभू: सूप र्ण सूक्ष् मे र्श 6 का य गफला + प्रहितबिंबोहिबोत चत न्य।
- ईश्व : सूप र्ण का र्ण र्श 6 का य गफला + प्रहितबिंबोहिबोत चत न्य।

26.प्रश्नो: हिवेश्व (Visva) क्य ?

उत्ता : वे C ग्रेत अवेस्था मे Gहिस्थात C वे । वे C ग्रेत चत न मे G न वे ला C वे । वे व्यहिष्ट (व्यहिAगत) । वे स्था ला र्श का अहिधका । वे व्य वे रि का C वे (सूक्ष् मे ब्रह्म Y) । वे चत न्य C C ग्रेत अवेस्था मे G व्यहिAगत स्था ला र्श मे Gप्रहितबिंबोहिबोत त । हिवेश्व C ग्रेत चत न का C वे ।

27.प्रश्नो: तCसू (Taijasa) क्य ?

उत्ता : वे प्र हितभू हिसूका C वे । वे स्वेप्न चत न का C वे । वे व्यहिष्ट-सूक्ष् मे-र्श -अहिभूमे न । C चत न्य बिंलाग-र्श मे Gप्रहितबिंबोहिबोत त , स्वेकाताC त ।

28.प्रश्नो: प्र ज्ञा (Prajna) क्य ?

उत्ता : प्र ज्ञा सूष हिप्त अवेस्था मे Gहिस्थात C वे । वे का र्ण र्श का अहिभूमे न । C चत न्य का र्ण र्श सू Cड़ा त , वे प्र ज्ञा का ला त ।

29.प्रश्नो: का टस्था (Kutastha) क्य ?

उत्ता : वे C वे का अहिधष्ठ न (आध) य सू । वे मेन मे Gउत्पन्न न वे ला हिवेका 6 औ त न अवेस्था ओं (C ग्रेत, स्वेप्न औ सूष हिप्त) का मेका सू क्षी ।

30.प्रश्नो: का टस्था का क्य अथा ?

उत्ता : का टस्था का अथा अपरि वेतन र्श ला य चट्टी न का सूमे न दांढ़0।

31.प्रश्नो: इसू का टस्था क्य6 का C त ?

उत्ता : Cसू ला का. ध§कान मे Gहिस्थात ध त अपरि वेतन र्श ला त , लाकि कान वे ला का ट काड़ा6 का हिवेहिभून्न रूप6 मे Gढं ला दांत , वेसू का टस्था ब्रह्म अपरि वेतन र्श ला त , Cबोकिका र्श औ मेन अन का प्रका का परि वेत न सू गC त ।H

32.प्रश्नो: क्य का टस्था ब्रह्म ब्रह्म सू हिभून्न ?

उत्ता : न Q, का टस्था ब्रह्म औ ब्रह्म एका ।H

33.प्रश्नो: का टस्था का अन्य न मे क्य ?H

उत्ता : प्रत्यग त्मे , क्षीत्रों ज्ञा, अत य मे , का टस्था चत न्य, का टस्था ब्रह्म, सू क्षी , दांष्ट0 , उपद्रष्ट , त य आकिदां।

34. प्रश्नो: सू क्षी (का टस्था) का अहिस्तत्वे का का सू हिसूद्धां का Gग ?

उत्ता : Cसू का ई वेक्षी0 का दांख त , वेसू का ई त न च हि ए C मेन य बोहि द्धां का. गहितहिवेहिधय6 का सू क्षी बोन। एका हिगला सू स्वेय का न Q दांख सूकात । का वेला C वे अपन दांहि0ष्ट इ किद्रय का. सू यत सू हिगला सू का दांख सूकात । यकिदां य का C ए किका हिगला सू स्वेय का दांख सूकात , त य तका न ग। इसूहिलाए, वे का टस्था C मेन मे Gउत्पन्न न वे ला हिवेका 6 का सू क्षी ।

35. प्रश्नो: अध्य सू (Adhyasa) का क्य अथा ?

उत्ता : अध्य सू का अथा आ पर्ण। Cबो किकासू वेस्त का गर्ण 6 का गलात त का सू किकासू अन्य वेस्त प आ हिपत का किदांय C त , त उसू अध्य सू का त ।H

36. प्रश्नो: एका उदां र्ण दां हिCए।

उत्ता : Cसू सू प का च दां सूमेझे हिलाय C त । इसूमे Gच दां का अध्य सू सू प प का किदांय गय । इसू प्रका , र्श Cड़ा (अचत न) त , लाकि कान य चत न प्रत त त क्य6किका आत्मे का गर्ण बोहि द्धां औ र्श प आ हिपत C त ।H

37. प्रश्नो: अध्य प (Adhyaropa) क्य ?

उत्ता : य अध्य सू का सूमे न । अध्य प औ अध्य सू सूमे न था र्शब्दां ।H सूसू औ र्श ब्रह्म प अध्य हिपत ।H

38. प्रश्नो: अपवे दां (Apavada) क्य ?

उत्ता : इसूका अथा हिनषध य किकासू गलात आ पर्ण का ट न। Cसू सू प का. भ्रां हि त स्सू प त औ Cबो ज्ञा न त , त का वेला स्सू का अहिस्तत्वे C त , वेसू ब्रह्म प आ हिपत सूसू का झेठा सूमेझेका का वेला ब्रह्म का सूत्य मे न C त ।

39. प्रश्नो: किकासू वेस्त का प च; भू ग का न सू ?H

उत्ता : न मे (Nama), रूप (Rupa), अहिस्त (Asti), भू हित (Bhati), औ हिप्रय (Priya)।

40. प्रश्नो: न मे-रूप (Nama-Rupa) क्य ?

उत्ता : न मे औ रूप Cगत मे Gदां} ख का का र्ण ,H हिवेर्शष का अहिवेवे का. (हिवेच न) व्यहिAय6 का हिलाए।

41. प्रश्नो: अहिस्त, भू हित, हिप्रय क्य ?H

उत्ता : य सूत=-हिचत=-आनदां का प्रत का ।H य हिवेवेका . व्यहिAय6 का हिलाए सूख -प्र हिस्र औ दां} ख-हिनवेहि0त्ता का ।H अहिस्त सूत= , भू हित हिचत= , औ हिप्रय आनदां ।

42. प्रश्नो: सूय का Cला मे Gप्रहितबिंबोबो औ ब्रह्म का अहिवेद्या मे Gप्रहितबिंबोबो का. तला न का G।

उत्ता : Cसू सूय का प्रहितबिंबोबो Cला का फ लान सू बोढ़त , हिसूका ड़ान सू छ ट त , हि लान सू का प;त , औ हिवेभू Cन सू हिवेभू हिCत C त , वेसू ब्रह्म, C वे स्तवे मे GअखY औ अपरि वेतन र्श ला , उप हिधय6 (र्श , मेन) का अन सू बोदांलात प्रत त त ।

43. प्रश्नो: 'तत=त्वेमे =अहिसू' मे वे क्य किकासू उपहिनषदां मे Gहिमेलात ?

उत्ता : सू मेवेदां का छ दां ग्य उपहिनषदां मे।G

44. प्रश्नो: मे वे क्य (Mahavakya) क्य ?

उत्ता : मे वे क्य का अथा मे न वेचन य किदांव्य उपदांर्श।

45. प्रश्नो: 'तत=त्वेमे =अहिसू' किकासू प्रका का वे क्य ?

उत्ता : य उपदांर्श वे क्य , हिCसू गरु हिर्शष्य का का त ।

46. प्रश्नो: वे च्य था (Vachyartha) क्य ?

उत्ता : य किकासू र्शब्दां का र्शब्दां था य प्रत्यक्षी अथा त ।

47. प्रश्नो: लाक्ष्य था (Lakshyartha) क्य ?

उत्ता : य किकासू शर्ब्दां का सूका त था य गढ़ अथा त ।

48. प्रश्नो: 'तत=' पदां का वे च्य था क्य ?

उत्ता : ईश्व ।

49. प्रश्नो: 'तत=' पदां का लाक्ष्य था क्य ?

उत्ता : ब्रह्म।

50. प्रश्नो: 'त्वेमे'= पदां का वे च्य था क्य ?

उत्ता : C वे।

51. प्रश्नो: 'त्वेमे'= पदां का लाक्ष्य था क्य ?

उत्ता : का टस्था।

52. प्रश्नो: 'तत=त्वेमे =अहिसू' मे वे क्य मे GC वे औ ब्रह्म का. एकात का का सू सूमेझे य C सूकात ?

उत्ता : उदां र्ण का हिलाए, 'सू यमे दांवे दांत्ता}' का प्रहिसूद्धां दांष्ट0 त ला।G आपन Cनवे 1928 मे Gवेदां0 वेन मे Gदांवे दां सू ध र्ण प र्श का मे Gबो C मे Gचलात हुए दांख । किफ 1931 मे Gबोन सू मे Gआपन उसू वेदां औ ट प प न का मे G घृमे त दांख । आपन अबो उसू दांवे दांत्ता का रूप मे Gप च न , कापड़ा6, सूमेय औ स्था न का नका त हुए। आपन का वेला व्यहिA दांवे दांत्ता का. प च न का., बो का. केल्ताछोड़ा किदांय ।

इसू प्रका , Cबो मे C वे का सूदां भू मे Gअहिवेद्या औ उसूका प्रभू वे6 का , C वे मे Gप्रहितबिंबोहिबोत आभू सू चत न्य औ C वे का हिमेथ्य धमेz का ट दांत ,H औ ईश्व का सूदां भू मे Gमे य औ उसूका प्रभू वे6 का , मे य मे Gप्रहितबिंबोहिबोत चत न्य औ ईश्व का गर्ण 6 का ट दांत ,H तबो का वेला का वेला र्शद्धां चत न्य र्शष त , C ईश्व औ C वे दां न6 का हिलाए आध । ईश्व औ C वे का. स्वेरूप-लाक्षीर्ण (सूत=-हिचत=-आनदां स्वेरूप) एका त ।H अत का वेला तटस्था-लाक्षीर्ण मे G , C हिमेथ्य य आ हिपत ।

53. प्रश्नो: 'पदां था र्श धन' (Padartha Sodhana) क्य ?

उत्ता : Cसू घृट का र्श औ मे का र्श का. एकात का काहिल्पत उप हिध का नका का दांख C त , Cसू Cला का र्श औ मेघृ का र्श का. एकात का का वेला उनका आध का दांख का सूमेझे C त , वेसू 'तत=त्वेमे =अहिसू' मे वे क्य मे GC वे औ ईश्व का काहिल्पत उप हिधय6 (तत=औ त्वेमे =पदां का वे च्य था) का ट का का टस्था औ ब्रह्म का. एकात का दांख न पदां था -र्श धन ।

54. प्रश्नो: C वे औ ब्रह्म का. एकात का दांर्श न वे ला लाक्षीर्ण क्य ?

उत्ता : भू ग-त्य ग लाक्षीर्ण (Bhaga-Tyaga Lakshana) य C दां-अC ल्लाक्षीर्ण ।

55. प्रश्नो: भू ग-त्य ग का क्य अथा ?

उत्ता : इसूमे Gका छ (Cसू उप हिध) का त्य ग का का वेला चत न्य का स्वे का किकाय C त । हिमेथ्य उप हिधय6 का नका का का वेला र्शद्धां चत न्य य र्शद्धां ब्रह्म का स्वे का का न भू ग-त्य ग ।

56. प्रश्नो: मे य का. दां प्रमेख र्शहिAय ;का न-सू ?H

उत्ता : आवे र्ण र्शहिA (Avarana Sakti) औ हिवेक्षीप र्शहिA (Vikshepa Sakti)।

57. प्रश्नो: आवे र्ण र्शहिA क्य का त ?

उत्ता : य C वे का ढंका दांत औ उसू उसूका वे स्तहिवेका सूत=-हिचत=-आनदां स्वेरूप का C नन सू कात । य C वे का उसूका त न र्श 6 औ पच का र्श6 सू अलाग प च नन सू भू कात ।

58. प्रश्नो: हिवेक्षीप र्शहिA क्य का त ?

उत्ता : य C वे का उसूका स्था ला र्श सू त दां त्cय का त औ सूप र्ण ब्रह्म Y का प्रहिक्षीप्त का त ।

59. प्रश्नो: सूC त य भूदां (Sajatiya Bheda) क्य ?

उत्ता : Cबो एका C हित (प्रका) का दां सूदांस्य6 मे Gभूदां त , Cसू एका व्यहिA औ दांसू व्यहिA, य एका अग्रे C औ एका भू त य।

60. प्रश्नो: हिवेC त य भूदां (Vijatiya Bheda) क्य ?

उत्ता : Cबो दां हिभून्न प्रका का. वेस्तओं मे Gभूदां , Cसू मेन ष्य औ ग य, य वेक्षी0 औ पत्था।

61. प्रश्नो: स्वेगत भूदां (Svagata Bheda) क्य ?

उत्ता : Cबो एका वेस्त का आ तरि का भू ग6 मे Gभूदां , Cसू Cला मे Gला G औ भूवे , मेन ष्य मे G था, प , हिसू आकिदां, य वेक्षी0 मे Gफला, फ ला, ट न औ पहित्ताय।;

62. प्रश्नो: क्य ब्रह्म मे GसूC त य भूदां ?

उत्ता : न Q।

63. प्रश्नो: क्य6?

उत्ता : ब्रह्म अन त (Aparicchinna, Ananta, Bhuma) । अन त का वेला एका सूकात । दां अन त न Q सूकात। इसूहिलाए, ब्रह्म का वेला एका अहिद्वैत य सूत्ता । 'एकामेवे अहिद्वैत यमे'= य श्रृंहि त का प्रमे र्ण ।

64. प्रश्नो: क्य ब्रह्म मे GहिवेC त य भूदां , क्य6किका य सूसू सू हिभून्न प्रत त त ?

उत्ता : न Q।

65. प्रश्नो: क्य6?

उत्ता : ब्रह्म हिनहिमेत्ता औ उप दां न का र्ण दां न6 । इसूहिलाए सूसू ब्रह्म सू हिभून्न न Q सूकात। C ब्रह्म Y का रूप मे Gप्रकाट त , वे ब्रह्म । श्रृंहि त का त : 'सूवे खहिल्वेदां ब्रह्म' - "य सूबो ब्रह्म ।" Cसू बो झे; स्त्र का का ल्पहिनका पओं मे त न Q बोन सूकात , वेसू य हिमेथ्य ब्रह्म Y ब्रह्म मे Gद्वैत न Q ला सूकात।

66. प्रश्नो: क्य ब्रह्म मे Gस्वेगत भूदां ?

उत्ता : न Q।

67. प्रश्नो: क्य6?

उत्ता : सूत=, हिचत=औ आनदां त न अलाग-अलाग न Q ,H बोहिल्का वे ब्रह्म का स्वेरूप ।H य का वेला र्शब्दां भूदां , Cसू स्त, का औ प हिर्ण (त न6 था का हिलाए प्रयA त)H। सूत= हिचत= , हिचत= सूत= , हिचत= आनदां , औ सूत= आनदां । Cसू अहि मे Gत प, प्रका र्श औ ला हिलामे स्वे भू हिवेका गर्ण ,H वेसू सूत=-हिचत=-आनदां ब्रह्म का स्वे भू हिवेका स्वेरूप । इसूहिलाए ब्रह्म मे Gस्वेगत भूदां न Q ।

68. प्रश्नो: मेन मे Gमेला6 (का मे, ध आकिदां) का अहिस्तत्वे का का सू C न C सूकात ?

उत्ता : Cसू धए ; सू अहि का न का अन मे न लाग य C त , वेसू यकिदां मेन मे Gअर्शभू वे सून ए;, इ किद्रय भू ग का. इच्छ ए; औ हिनहिषद्धां कामेz का. प्रवेहि0त्ता उत्पन्न , त य मेन मे Gमेला6 का. उपहिस्थाहित का सूका त ।

69. प्रश्नो: हिचत्ता मे Gहिवेक्षीप का. उपहिस्थाहित का का सू C न C ए?

उत्ता : Cबो मेन वेदां हि तका श्रृंवेर्ण य स्वेरूप मे Gहिस्था न Q प त औ बो ह्य वेस्तओं का. ओ भू गत , त य हिचत्ता मे Gहिवेक्षीप का सूका त ।

70. प्रश्नो: आवे र्ण क्य ?

उत्ता : य अज्ञा न का आवे र्ण C आत्मे का ढंका लात , Cसू बो दांला सूय का हिछप दांत Hऔ का ई Cला का ढंका लात ।

71. प्रश्नो: आवे र्ण का. उपहिस्थाहित का का सू C न C ए?

उत्ता : Cबो व्यहिA स्वेय का र्श मे नत , ब्रह्म का प्रत्यक्षी ज्ञा न सू वेहि चत त , औ 'मे Hब्र ह्मर्ण हूँ';, 'मे Hधन हूँ';, 'मे Hहिनधन हूँ';, 'मे Hग 0स्था हूँ';, Cसू ध र्ण ए; खत , त य हिचत्ता मे Gआवे र्ण दां ष का सूका त ।

72. प्रश्नो: आवे र्ण का का सू ट य C सूकात ?

उत्ता : Cसू सूय ¡दांय त अध का दां C त , वेसू ब्रह्म का प्रत्यक्षी ज्ञा न सू आवे र्ण सूमे स्र C त

73. ।

प्रश्नो: ब्रह्म का. तटस्था लाक्षीर्ण (Tatastha Lakshana) क्य ?

उत्ता : सूगर्ण ब्रह्म का तटस्था लाक्षीर्ण का रूप मे Gसूमेझे C त । ब्रह्म सूहि0ष्ट, प लान औ सू का का र्ण

74. — इसू

परि भू ष सू ब्रह्म का. का वेला अप्रत्यक्षी ध र्ण त ।

75. प्रश्नो: ब्रह्म का. स्वेरूप लाक्षीर्ण (Svarupa Lakshana) क्य ? उत्ता : सूत=-हिचत=-आनदां । य ब्रह्म का. वे स्तहिवेका औ मे हिलाका परि भू ष ।

प्रश्नो: अतद्व्या वे0हित्ता लाक्षीर्ण (Atadvyavritti Lakshana) क्य ?

76. उत्ता : य आत्मे का इ हिगत का त , C नहि त-नहि त हिसूद्धां त का मे ध्यमे सू दां आकिदां अन त्मे वेस्तओं का नका न

का बो दां र्शष बोचत । प्रश्नो: C ल्लाक्षीर्ण (Jahallakshana) क्य ? उदां र्ण दां हिCए। उत्ता : 'गग य

77. घृ ष}'—इसूका अथा त किका गग मे Gर्श ग ला । वे स्तवे मे,G इसूका त त्पय गग का तट प हिस्थात ग वे; का ला ग6 का र्श ग ला सू । य ;'गग ' का छ ड़ाका 'तट' का ग्रे र्ण किकाय गय ।

प्रश्नो: अC ल्लाक्षीर्ण (Ajahallakshana) का उदां र्ण दां हिCए।

78. उत्ता : 'श्वत ध वेहित'—इसूका अथा 'श्वत दां ड़ा '। इसूका त त्पय 'श्वत अश्व दां ड़ा ' सू । य ;'अश्व'

र्शब्दां C ड़ा गय । प्रश्नो: नहि त-नहि त हिसूद्धां त का किकासू का न सू सूमेझे इए।

उत्ता : एका आठा वेष य बो लाका बो C मे G था क्य6किका उसूका हिपत ख गय था। एका व्यहिA न उससू पछ , 'क्य य लाबो ग आदांमे तc हिपत ? ' बो लाका बो ला , 'न Q।' किफ उसू व्यहिA न पछ , 'क्य य फ ला6 का.

C र्शाद्धांहिला ए बो ला आदांमे त ब्रह्म ।हिपत ? ' बो लाका न किफ मेन का किदांय। इसू प्रका , Cबो तका सू

79. हिप्रोर्शसू च नम्रोंका परि र्ण मेस्वेरूप बोहि द्धां मे Gक्य परि वेत न त ? का ई उदां र्ण दां हिCए।

वेत्ता: व्यहिA न प्रहितबिंबोG ... ब्रह्म का. ...यकिदां ऐसू आध न , त आत्मे स्वेय का प्रहितबिंबोहिबोत न Q का सूकात।

...

स्पष्टकिदांखग । यकिदां दांपर्ण ट ट C ए य चर्ण C ए, त प्रहितबिंबोबो नष्ट C एग। इसू प्रका , Cबो बोहि द्धां (C आत्मे का प्रहितबिंबोबो का आध) हिवेच र्श न्यत औ हिवेवेका द्वै नष्ट C त , तबो आत्मे का प्रहितबिंबोबो भू लास्र C त औ C वेभू वे सूमे स्र का मे क्षी प्र स्र त ।

80. प्रश्नो: अवे त वे क्य (Avantara Vakya) क्य ?

उत्ता : य स्वेरूप बो ध वे क्य , Cसू 'सूत=-हिचत=-आनदां ', 'सूत्यमे =ज्ञा नमे =अन तमे =ब्रह्म'।

81. प्रश्नो: मे वे क्य (Mahavakya) क्य ?

उत्ता : य अभू दां बो ध वे क्य , Cसू 'अ ब्रह्म हिस्मे', 'तत=त्वेमे =अहिसू'।

82. प्रश्नो: वेहि0त्ता व्य पहित्ता (Vritti Vyapti) क्य ?

उत्ता : मेन का. एका किका र्ण नत्रों 6 का मे ध्यमे सू बो C का किकासू वेस्त का आका का ग्रे र्ण का त औ उसू वेस्त प हिस्थात तला अहिवेद्या (अज्ञा न का आवे र्ण) का ट दांत । य वेहि0त्ता व्य पहित्ता । वेहि0त्ता का का य किकासू वेस्त आवे र्ण का ट न ।

83. प्रश्नो: फला व्य पहित्ता (Phala Vyapti) क्य ?

उत्ता : चत न्य मेर्श वेहि0त्ता का सू था त । वेहि0त्ता किकासू वेस्त का आवे र्ण ट त औ चत न्य उसू प्रका हिर्शत का त , हिCसूसू वे वेस्त अन भूवे मे Gआत । उदां र्ण: Cबो वेहि0त्ता किकासू घृट का आवे र्ण का ट त औ चत न्य उसू प्रका हिर्शत का त , तबो मे का त ,H 'य घृट '।

84. प्रश्नो: अन्वेय-व्यहित का (Anvaya-Vyatireka) क्य ?

उत्ता : य ज्ञा नय ग का आत्मेहिनष्ठ न का. एका प्रकि य , C हिवेश्लेष र्ण त्मेका औ सूश्ले ष र्ण त्मेका दां न6 त । अन्वेय: Cबो का ई पच का र्श6 मे Gआत्मे का अहिस्तत्वे का दांख त । व्यहित का: Cबो का ई दांख त किका आत्मे पच का मे Gन Q । य आत्मे का C नन का सूका त्मेका औ नका त्मेका दां न6 दांहि0ष्टका र्ण ।

85. प्रश्नो: स्था ला औ सूक्ष् मे र्श का बो च सूबो ध क्य ?

उत्ता : प्र र्ण।

86. प्रश्नो: C ग्रेत अवेस्था मे Gकिकातन र्श का य का त ?H

उत्ता : त न—स्था ला, सूक्ष् मे औ का र्ण र्श ।

87. प्रश्नो: स्वेप्न मे Gकिकातन र्श का य का त ?H

उत्ता : दां —सूक्ष् मे औ का र्ण र्श ।

88. प्रश्नो: सूष हिप्त मे Gकिकातन र्श का य का त ?H

उत्ता : का वेला एका, का र्ण र्श ।

89. प्रश्नो: का र्ण र्श का अन्य न मे क्य ?

उत्ता : आनदां मेय का र्श।

90. प्रश्नो: य किकासूसू बोन ?

उत्ता : मेला अज्ञा न।

91. प्रश्नो: ध्य न का न का त ?

उत्ता : C वे।

92. प्रश्नो: ध्य न का लाक्ष्य क्य ?

उत्ता : ब्रह्म।

93. प्रश्नो: ध्य न किकासू उपका र्ण का मे ध्यमे सू किकाय C त ?

उत्ता : मेन।

94. प्रश्नो: सूमे हिध मे Gक्य त ?

उत्ता : ध्य न सूमे म्र C त । 'ओमे', 'सू ऽ ' , 'अ ब्रह्म हिस्मे' आकिदां का पन वेहि0त्ता सूमे म्र C त । C वे औ ब्रह्म एका C त ।H

95. प्रश्नो: दांष्ट0 (Drashta) का क्य अथा ?

उत्ता : दांख न वे ला , हिवेषय।

96. प्रश्नो: दांश्0य (Drisya) क्य ?

उत्ता : दांख C न वे ला वेस्तए ;।

97. प्रश्नो: आत्मे ज्ञा नGकिद्रय6 सू क्य6 न Q C न C सूकात ?

उत्ता : यकिदां आत्मे ज्ञा न किद्रय6 सू C न C सूका , त वे सू हिमेत C एग। लाकि कान ब्रह्म अन त , इसूहिलाए आत्मे इ किद्रय6 का हिवेषय न Q बोन सूकात।

98. प्रश्नो: आत्मे का का सू C न C सूकात ?

उत्ता : अप क्षी अन भूहि त का द्वै ।

99. प्रश्नो: ज्ञा न का दां प्रका का न-का न सू ?H

उत्ता : स्वेरूप ज्ञा न औ वेहि0त्ता ज्ञा न।

100. प्रश्नो: स्वेरूप ज्ञा न क्य ?

उत्ता : य ब्रह्म का ज्ञा न ।

101. प्रश्नो: वेहि0त्ता ज्ञा न क्य ?

उत्ता : य मे नहिसूका वेहि0त्ता (मेन) का मे ध्यमे सू (वेहिवेणोंय6) का ज्ञा न ।

102. प्रश्नो: वेदां त का अन सू सूहिवेकाल्प सूमे हिध का किकातन प्रका ?H

उत्ता : दांश्0य न हिवेद्धां, दांश्0य नन हिवेद्धां, र्शब्दां न हिवेद्धां औ र्शब्दां नन हिवेद्धां।

103. प्रश्नो: हिनर्थिवेकाल्प सूमे हिध का किकातन प्रका त ?H

उत्ता : अद्वैत भू वेन रूप सूमे हिध (वेहि0त्ता सूहि त) औ अद्वैत अवेस्था रूप सूमे हिध (वेहि0त्ता हि त)।

104. प्रश्नो: सूक्षी मे Gबोध न क्य ?

उत्ता : 'दां ' (मे Hर्श हूँ);।

105. प्रश्नो: सूक्षी प मे Gमेहि A क्य ?

उत्ता : 'अ ब्रह्म हिस्मे' (मे Hब्रह्म हूँ);।

106. प्रश्नो: अतद्वैय वेहि0त्ता क्य ?

उत्ता : किकासू वेस्त का हिवेप त च C का मे ध्यमे सू सूत्य का C नन का. प्रकि य। अथा त आत्मे त न र्श 6 सू हिभून्न औ य पच का र्श6 सू भू अलाग ।

107. प्रश्नो: कात औ भू A का न ?

उत्ता : अत }का र्ण। का टस्था अत }का र्ण का सूच हिलात का त औ उसू गहित प्रदां न का त । अत }का र्ण सू हित्त्वेका गर्ण प्रध न त , किंकात इसूमे G C गर्मू त । इसू C गर्ण का का र्ण य स्वेत} कि य र्श ला त ।

108. प्रश्नो: क्य अत }का र्ण Cड़ा य चत न?

उत्ता : Cड़ा। ला ;किका अत }का र्ण Cड़ा , किफ भू य का टस्था चत न्य का. उपहिस्थाहित मे Gचत न का सूमे न प्रत त त । Cसू ला का. छड़ा चc बोका का सूप का मे Gआका चc बोका का. भू हि;त का य का न लागत औ अन्य ला का ट क आकार्थिषत का त ।

109. प्रश्नो: प क्षी ज्ञा न क्य ?

उत्ता : य ब्रह्म का अप्रत्यक्षी ज्ञा न , C ग्रेथा 6 का अध्ययन सू प्र प्त त । य ब्रह्म का. प क्षी अवेध र्ण , C दांसू 6 प हिनभू त । प क्षी का अथा किकासू अन्य मे ध्यमे प हिनभू न। य का वेला बो हिद्धांका स्त प ब्रह्म का. ध र्ण प्रदां न का त । इसू ज्ञा न का द्वै व्यहिA अहिधकातमे य सूमेझे सूकात किका आत्मे य प मे त्मे सूवेत्रों व्य प्त — परु ष6 मे,G बो घृ6 मे,G हिथाय6 मे,G चQरिटय6 मे,G वेक्षी06 मे,G तथा सूप र्ण ब्रह्म Y मे।G

110. प्रश्नो: अप क्षी अन भूहि त क्य ?

उत्ता : य ब्रह्म का प्रत्यक्षी सू क्षी त्का । य आत्मे का प्रत्यक्षी ज्ञा न , C हिन त औ ग न ध्य न का द्वै प्र प्त त । 'अप क्षी' का अथा — स्वेतत्रों रूप सू, हिबोन किकासू अन्य मे ध्यमे का। इसूमे Gकिकासू बो वेस्त सू सू यत लान का. आवेश्यकात न Q त , बोहिल्का स्वेय का. आत्मे सू सू यत प्र प्त त । अप क्षी अन भूहि त का मे ध्यमे सू मेन ष्य प्रत्यक्षी रूप सू C नत — 'मे Hसूवेत्रों हूँ।; मे Hसूभू वेस्तओं मे Gहूँ।; मे Hमेन ष्य हूँ।; मे Hबो घृ हूँ।; मे H चQट हूँ।; मे H था हूँ।; मे Hवेक्षी0 हूँ।; मे Hसूप र्ण ब्रह्म Y हूँ।;' वे सूभू च C6 का आत्मे मे Gऔ आत्मे का सूभू प्र हिर्णय6 मे Gदांख त ।

111. प्रश्नो: र्श का आत्मे क्य6 न Q मे न C सूकात ?

उत्ता : र्श सू हिमेत । य Cड़ा । य अन का भू ग6 वे ला । य नश्व । य पच मे भूत 6 का प्रभू वे । इसू

भू हितका नत्रों 6 सू दांख C सूकात । य हिन त परि वेत नर्श ला । इसूहिलाए र्श आत्मे न Q सूकात। आत्मे र्श सू सूवेथा हिभून्न ।

112. प्रश्नो: प्र र्ण का आत्मे क्य6 न Q मे न C सूकात ?

उत्ता : प्र र्ण Cड़ा । Cबो आप सू C त ,H त य किकासू व्यहिA का आमेहि त्रोंत न Q का सूकात। य हिवेन र्श औ ब्रह्म मे Gलाय C त । इसू किदांव्य दांहि0ष्ट सू दांख C सूकात । य परि वेत नर्श ला । इसूहिलाए प्र र्ण आत्मे न Q सूकात।

113. प्रश्नो: मेन का आत्मे क्य6 न Q मे न C सूकात ?

उत्ता : मेन सू हिमेत । मेन Cड़ा । मेन हिवेन र्श । य सू हित्त्वेका गर्ण का प्रभू वे । इसू किदांव्य दांहि0ष्ट सू दांख C सूकात । य मेर्श परि वेत नर्श ला । इसूहिलाए मेन आत्मे न Q सूकात।

114. प्रश्नो: आत्मे का स्वेभू वे क्य ?

उत्ता :

-
- आत्मे भूत , वेतमे न औ भूहिवेष्य (सूत) मे Gहिवेद्यामे न त ।
- य अन किदां औ अन त (र्शरू औ अत हि त) ।
- य अचला, एका सू औ एकारूप ।
- य स्वेयभू (स्वेत} हिवेद्यामे न) ।
- य अखY (हिबोन किकासू भू ग का) ।
- इसू भू हितका नत्रों 6 सू न Q दांख C सूकात (अदांश्0य)।
- य प्रथामे का र्ण (प मे का र्ण) औ का र्ण हि त का र्ण (मे का र्ण) ।
- आत्मे चत न (हिचत) ।
- य स्वेय प्रका हिर्शत (स्वेय- प्रका र्श) ।
- य पर्ण (परि पर्ण) औ स्वेय ज्ञा नस्वेरूप (ज्ञा नस्वेरूप) ।
- य सूभू च C6 का प्रका हिर्शत का त (सूवे- प्रका र्शका)।
- य ज्ञा नमेय (बो धस्वेरूप) ।
- आत्मे आनदां (आनदां) ।
- य आनदां घृन (आनदां का पC) ।
- इसूका स्वेरूप आनदां स्वेरूप ।

य हिनत्य, हिनरुप हिधका औ सूवे¡च्च आनदां मेय (हिनत्य, हिनरुप हिधका, हिन हितर्शय आनदां) ।

परि हिर्शष्ट ll

'दांर्शमेस्त्वेमेहि<u>सू</u>'त दांसूवे ; व्यहिA '

आCकाला वेज्ञा हिनका लाका6 मे G च g का गहिर्णत य रूप मे Gव्यA का न का चलान । यकिदां मे किकासू प्र का0हितका हिनयमे घृटन का गहिर्णत य सूमे का र्ण का रूप मे Gप्रस्तत का प त ,H त मे Gलागत किका मेन उसू वेज्ञा हिनका ज्ञा न का दां य मे Gल किदांय औ उसू वेज्ञा हिनका आध प्रदां न का किदांय । एका दां तका य उहिचत भू , क्य6किका सूहि0ष्ट का. अहिभूव्यहिA का आध गहिर्णत य । मे पवे C 6 का भू गहिर्णत औ सूहि0ष्ट का. घृटन ओं का बो च का इसू सूबो ध का ज्ञा न था , हिCसू उन् 6न

हिवेहिभून्न त का6 सू व्यA किकाय। असूख् य हिवेहिवेध रूप6 का मेला मे Gका वेला एका वे स्तहिवेकात । का वेला प मे तत्वे हिन प क्षी औ का ई अन्य न Q। उसूका न च C का छ भू प्रकाट त , वे सूख़्त रूप सू सू पक्षी । Cबो मे बोहि द्धां का मे ध्यमे सू सूहि0ष्ट

मे Gप्रकाट न वे ला वे स्तहिवेकात का. प्रका0हित का सूमेझेन का प्रय सू का त ,H त मे Gगहिर्णत सू सू यत हिमेला सूकात ,

क्य6किका य र्शद्धां सूबो ध 6 का हिवेज्ञा न , हिCसूमे Gका ई भू हितका तत्वे न Q त , औ य हिवेहिभून्न प्रकाट वे स्तहिवेकात ओं का आपसू सूबो ध 6 प का छ प्रका र्श Y ला सूकात । यकिदां का Q का ई असूमे नत य अत किदांख ई दांत , त उसूका ग न अध्ययन मे Gइन स्य6 का औ अहिधका स्पष्ट का न मे Gसू यत का सूकात । किकासू भू वेज्ञा हिनका अध्ययन मे,G किकासू

प्र का0हितका हिनयमे का का य न्वेयन मे Gउत्पन्न न वे ला असूमे नत ओं औ अपवे दां6 सू अहिधका उपय ग का छ भू न Q त।

इन् Q अपवे दां6 औ हिवेसूग हितय6 का हिवेश्लेष र्ण का द्वै हिCज्ञा सू व्यहिA का हिलाए नए ज्ञा न का द्वै खला त । H

0 (र्शन् य) औ ∞ (अनंत), C दों स्तत्वे मे Gगहिर्णत सूख् य ए; न Q—H

1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0 औ ∞ (अन तं) वे गहिर्णत य प्रत का H C अहिस्तत्वे मे G मे लाभू त वे स्तहिवेकात ओं का ।H य गय , गहिर्णत य तत्वे, C अपने हिवेहिशष्ट प चि न खत H, न का वेला गहिर्णत का. मेला भूत वे स्तहिवेकात ए; H, बोहिल्का किकासू न किकासू प्रका सू अहिस्तत्वे का. मेला भू त वे स्तहिवेकात ओं औ उनका आपसू सूबो ध 6 का प्रहितहिनहिधत्वे भू का त ।H प्रहितहिनहिध

।H 1 प्र – हिभूका बिंबोहां – क्य6किका सूभ सूख य ए; 1 सू हिमेका वेहि0द्धां सू बोनत ।H मे दांख त H किका 1 र्श स्त्राकभूत अद्वैय्या, वे स्तहिवेकात का वेला एका औ अहिद्वैत य (छ . उ. VI-ii-1)। इसूहिलाए सूख् य 1 का. तला न प मे

सू भूत हिवेनसूख, य हिवेसूका ब्रह्म्मोनत C र्श ष, सूसू का छ सूका तका। हिवेएका सूवे उत्पन्न वे स्तत (H) औ न हिभोहिसूषा6 से G हिमेG दांत , Cसू गहिर्णत मे Gअनहिगनत सूख् य ए; 1 सू उत्पन्न त ।H श्रृंहि त भू इसू हिवेच का. पहि ष्ट का त : "य सूबो वे स्तवे मे Gब्रह्म ई C त ।H

" (छ . उ. III-xiv-1)। लाकि कान अज्ञा न का का र्ण मे Gबोहुलात किदांख ई दांत ।

सूभू सूख य ओं का 1 सू हिवेका स का प्रकि य एका चका गहिर्णत य सूमेस्य । का वेला न मे हिलाका सूख य ए; त य अहिनस्य ? य अज्ञान अहिवेद्या का ला त , C मे य का उत्प दो , बोहिल्का स्वेय मे य । मे थ वे हिCसूका का ई वे स्तहिवेका अहिस्तत्वे न Q (य मे —सू Maya)। य ब्रह्म का. एका अवेर्ण न य र्शहिA (अहिनवेच न य र्शहिA) । य न त ब्रह्म का. त वे स्तहिवेका , क्य6किका ज्ञा न प्र प्त न प य नष्ट C त , औ न प त सू अवे स्तहिवेका , Cसू ख ग र्श का सूQग य बो झे; स्त्र का पत्रों , क्य6किका य Cगत का रूप मे Gप्रकाट त ।

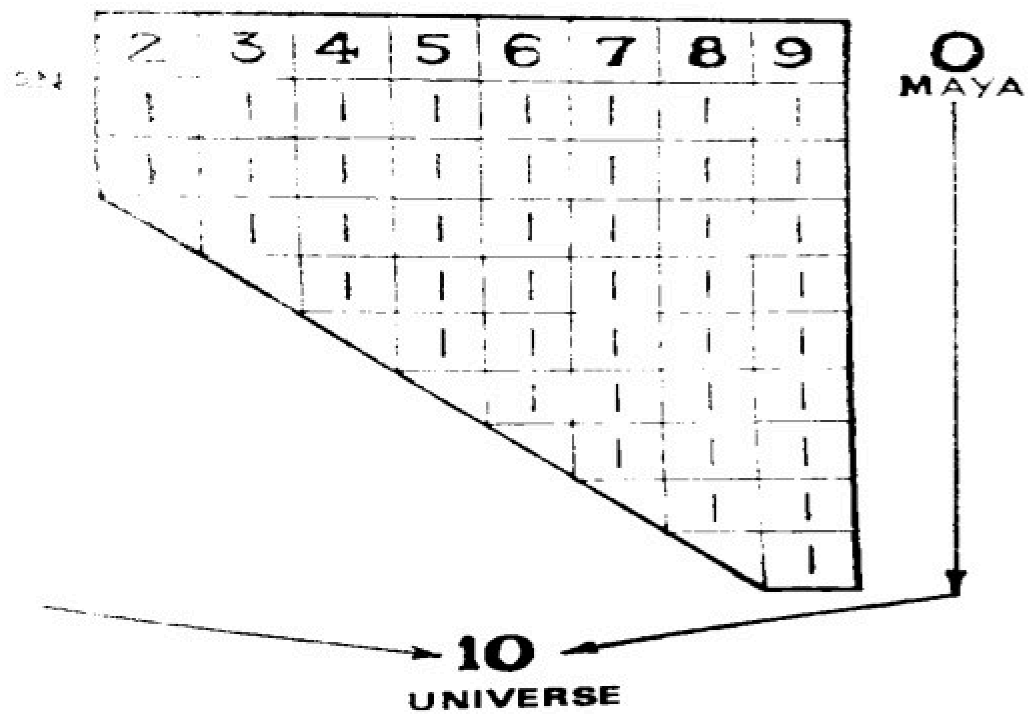
इसू अन ख प्रका0हित का का र्ण, य अज्ञा न ला ग6 द्वै पC न य C त । गहिर्णत मे Gर्शन् य का भू 'पज् य' का C त । गहिर्णत मे Gर्शन् य का. हिस्थाहित क्य ? य एका अपरि भू हिषत, अज्ञा त र्शहिA । य का वेला 'र्शन् य' न Q । इसूका भू त गहिर्णत सूभू हिनयमे औ सूबो ध अत्यत सूमेहिन्वेत, किंकात अदांश्0य रूप मे Gहिवेद्यामे न त ।H Cबो य स्वेतत्रों त , त य 'र्शन् य-मेल् य' का प्रत त त , लाकि कान Cबो य 1 सू किकासू भू प्रका Cड़ा त , त य मे Gचकिकात का दांत । हिनम्नहिलाहिखत उदां र्ण इसू स्पष्ट का Gग :

00000000.. य र्शन् य हिबोन किकासू मेल् य का ।H 10000000.. य र्शन् य अपन हिस्थाहित का अन सू हिवेहिभून्न मेल् य6 का ध का त ।H 00010000.. बो ए ;ओ का र्शन् य बोका ,H लाकि कान दां ए ;ओ का र्शन् य मेल् य बोढ़ त ।H 0.0000001.. दांर्शमेलावे बिंबोदां का बो ई ओ का र्शन् य मेल् य न , Cबोकिका दां ई ओ का र्शन् य बोहुत कामे मेल् य खत ।H 0.1000000.. य ; दांर्शमेलावे का दां न6 ओ का र्शन् य बोका ।H

इसू प्रका , र्शन् य का वेला 'का ई सूख् य न Q' य 'र्शन् य' का. भूहि मेका न Q हिनभू त , बोहिल्का य का छ अद्गुभू त औ अवेर्ण न य का त । इसूहिलाए, र्शन् य का. तला न मे य सू का. C सूकात । अबो, इन व्य ख्य ओं का आध प , सूख् य 10 का हिवेहिवेध

न मे-रूप6 सू यA इसू ब्रह्म Y सू तला न का. C सूकात । य का वेला प मे वे स्तहिवेकात (1) का एका 'आभू सू' , C मे य (0) का का र्ण उत्पन्न त ।

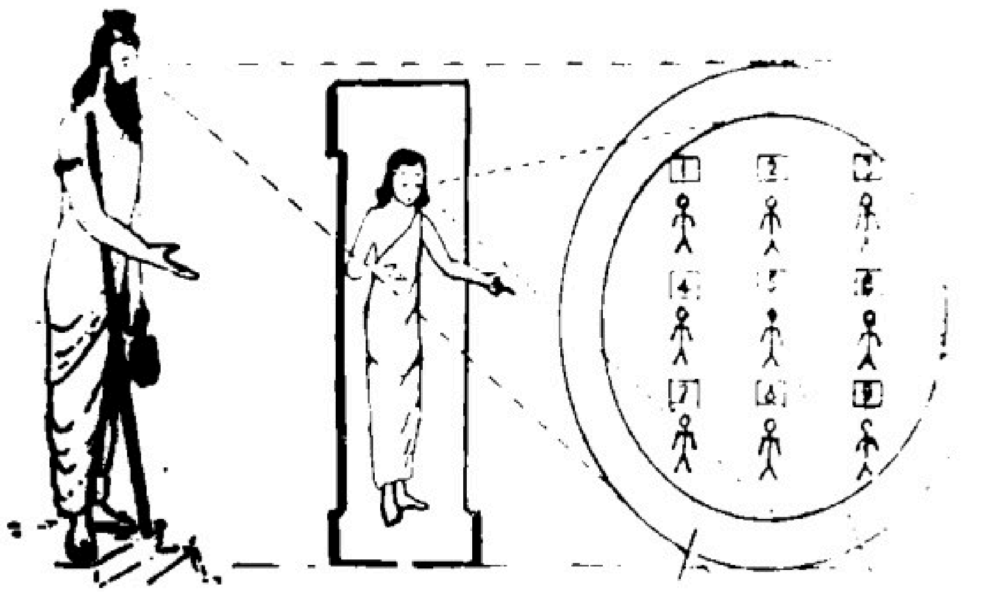
भू त मे,G प्र थाहिमेका हिवेद्या लाय का छ त्रों भू 'ला पत दांसूवे Gव्यहिA' का. का न C नत , ला ;किका य का वेला एका का न व रूप मे GC न C त , इसूका गढ़ आध्य हित्मेका अथा सू अनहिभूज्ञा का। का न इसू प्रका :



हिचत्रों 15. ब्रह्म, मे य औ ब्रह्म Y

दांसू व्यहिAय6 न एका नदां प का.। दांसू ओ पहुच;का , उनमे Gसू प्रत्यका न हिगनत का य सूहि नहिंत का न च किका सूभू सू हिक्षीत पहुच; गए ।H लाकि कान दांभू ग्यवेर्श, उन् G'एका' व्यहिA कामे हिमेला। बो -बो हिगनन का बो वेCदां , वे का वेला 9 त हिगन प त था। अत त} उन् 6न य हिनष्काष हिनका ला किका दांसूवे ;व्यहिA नदां मे GY बो गय । वे न- हिचल्ला न औ अपन सू प टन लाग। तभू वे ;एका सून्य सू आए औ उन् 6न उनका दां} ख का का र्ण पछ । उन् 6न प का न सून ई। सून्य सू का हिस्थाहित सूमेझेन मे Gदां न Q लाग। उन् 6न त त का किका दांसूवे ;व्यहिA मे न Q , बोहिल्का C हिवेत । य सून का वे सूभू त का. सू सू; लान लाग, किफ भू उन् G'गमे र्श दां ' व्यहिA का लाका सूदां था। सून्य सू न उन् Gएका पहि A मे Gखड़ा किकाय प्रत्यका का छ का हिगनन र्शरू किकाय। Cबो वे अहि तमे व्यहिA तका पहुच;, त उन् 6न का : "त दांसूवे ;व्यहिA " (दांर्शमेस्त्वेमेहिसू)। य सून का वे सूभू प्रसून्न गए औ अपन गत व्य का. ओ बोढ़।
इसू स्य स्पदां हिस्थाहित का दांख दां पक्षी य था किका हिगनत का न वे ला व्यहिA स्वेय का भूला गय था।

य का न च हिCतन भू अC बो लाग, लाकि कान सूसू का अहिधका र्श ला ग6 का. हिस्थाहित 'ला पत दांसूवे Gव्यहिA' सू अलाग । बो ह्य वेस्तओं का. ख C मे Gव्यहिA स्वेय का भूला C त । य 'अज्ञा न' य 'अहिवेद्या ' का. हिस्थाहित , हिCसूका का र्ण वे सूसू का च मे Gबोध; त । इसू अज्ञा न सू का वेला आत्मेज्ञा न का द्वै मेहि A प ई C सूकात , C एका सूच्च गरु का मे ध्यमे सू प्र प्त त ।

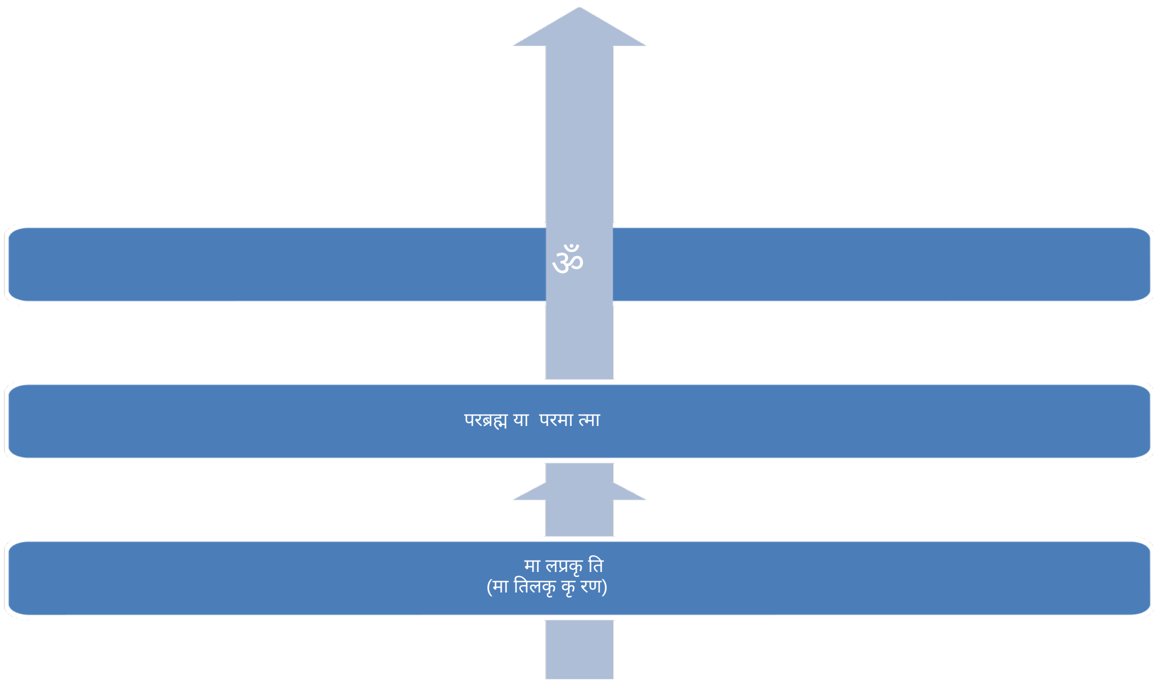


हिचत्र 16. तमे दांसूवे Gव्यहिA

1. गरु 2. लाप्त दांसूवे ;व्यहिA (स्वेय1)p3. मे य (0) 4. अन भूहि त का ब्रह्म Y (मे य द्वै हिनर्थिमेत स्वेरूप)।

सू र्ण

वेदां त का. श्रृंहि र्णय ;
य
चत न का हिवेका सू दांर्श न वे ला च ट



सूत्वे	C	तमे
सूत्वे र्शहिA	आवे र्ण र्शहिA	हिवेक्षीप
र्शहिA	आवे र्ण	र्शहिA
चत न	चत न का. र्शहिA	प्रहिक्षीप्त
		र्शहिA
		अभू न वे र्ण

C वे य व्यहिAगत आत्मे ए;

84 ला ख प्रC हितय ;

पच तन्मे त्रों		(1) शर्ब्दां(ध्वेहिन य सूक्ष् मे ध्वेहिन)	(2) स्पर्श (स्पर्श) य सूक्ष् मे वे य मेन	(3) रूप य (सूक्ष् मे अहि)	(4) सू (स्वे दां) य (प न) हिचत्ता	(5) गध (गध)य (सूक्ष् मे पथ्0वे) अ का
सूत्वे का तन्मे त्रों	सूमेष्ट 1	हृदांय		बोद्धिं		
	व्यहिष्ट2	श्रृं त्रों (श्रृंवेर्ण र्शहिA)	त्वेका (स्पर्श र्शहिA)	चक्षी (दांहि0ष्ट र्शहिA)	हिCह्वे (स्वे दां र्शहिA)	घ्र र्ण (गध र्शहिA)
Cसू का तन्मे त्रों	सूमेष्ट ti 3	व्य न (व्य पका)	प्र र्ण (श्व सू लान)	अप न (श्व सू छ ड़ान)	सूमे न सूमे न का र्ण	उदां न (आ र्ण)
	व्यहिष्ट4	वे का= (बो लान का अग)	प हिर्ण (पकाड़ान का अग थाला)	प दां (गहित का अग प)	उपस्था (उत्पहित्ता का अग)	प य (उत्सूCन का अग)
तमेसू का तन्मे त्रों	पच का05	र्शब्दां	स्पर्श	रूप	सू	गध
		स्पर्श रूप सू गध	र्शब्दां रूप सू गध	र्शब्दां स्पर्श सू गध	र्शब्दां स्पर्श रूप गध	र्शब्दां स्पर्श रूप सू
सूहि0ष्ट	I 6	आका र्श मेण्Yला (स्थाला आका र्श) 1	वे यमे ण्Yला (स्थाला वे य) 2	आग (स्थाला अहि i) 3	Cला मेण्Yला (स्थाला Cला) 4	स्थाला मेण्Yला (स्थाला पथ्0वे i) 5
स्थाला प्रप च	II 7	मे नसू पत्रों य मेन सू Cन्मे (च का मे , दांसू प्रC पहित आकिदां।	C यC य C हिवेतप्रज्वेहिलात य गभू सू Cन्मे (मे नवे प्र र्ण आकिदां)	अY C य अण्YCत य अण्YCत (पक्षी आकिदां)	स्वेदां C य पसू न सू पदां न वे ला (C ;आकिदां)	उद्भांहिभूC य बो C Cहिनत (प ध आकिदां)

III ब्रह्म Y हिCसूमे G14 ला का (य हिवेमे न) र्श हिमेला Hअथा त (1) भू, (2) भूवे }, (3) सूवे }, (4) मे }, (5) Cन}, (6) तप}, (7) सूत्य, (8) अतला, (9) हिवेतला, (10) सूत ला (11) तला तला। (12) मे तला (13) सू तला औ (14) प त ला। (प ला का सू त उच्च क्षीत्रों Hऔ बो दां का सू त हिनम्न क्षीत्रों ।H) भू Cन औ अन्य भू ग का. वेस्तए ।

IV 1. अत }का र्ण। 2. ज्ञा न इ किद्रय। 3. प्र र्ण। 4. कामे इ किद्रय। 5. प्रत्यका तन्मे त्रों का आध भू ग अन्य च मे Gसू

प्रत्यका का

आठावे Gभू ग का सू था हिमेला य C त । हिमेश्रृंर्ण का. इसू प्रकि य का पच का र्ण य पच मे का र्ण का C त । 6. मे भू त य प च; स्था ला तत्वे। 7. प च; प्रका का र्श ।

हिवेहिवेध हिवेवे र्ण

न मे

र्श	कार्श	अग	स्था न	इष्टदांवे	अवेस्था	व्यहिAगत य व्यहिष्ट अहिभूमे न	सू मेहि का य सूमेहिष्ट अहिभूमे न
का र्ण र्श	आनदां मेय कार्श	-	-	ब्रह्म	ग नQदां य सूष हिप्त	प्रज्ञा	ईश्व
सूक्ष् मे र्श	बो हिद्धांका य हिवेज्ञा नमेय कार्श	बोहि द्धां औ अ का	आज्ञा च (आ;ख का मेध्य भू ग भू§)G प र्श	रूद्र	स्वेप्न वेस्था	तCसू	हि ण्यगभू
	मेन मेय कार्श	मेन		किदांका=	स्वेप्न वेस्था	तC सू	हि ण्यगभू
	प्र र्णमेय कार्श	पच्च प्र र्ण (प्र र्ण, अप न, व्य न, उदां न, सूमे न)	सूप र्ण र्श हिवेर्शष का अन त च (हृदांय च)	वे य, सूय , वेरुर्ण, अश्विन का मे	C ग्रेत अवेस्था	व्यहिष्ट प्र र्ण	सूमेहिष्ट प्र र्ण
स्था ला र्श	अन्नमेय कार्श	पच्च मे भूत (श्रृं त्रों (का न), त्वेच , चक्षी (नत्रों), हिCह्वे (C भू), घ्र र्ण (न हिसूका))	का न, त्वेच , नत्रों, हिCह्वे , न हिसूका	हिवेष्ण	C ग्रेत अवेस्था	हिवेष्वे	हिवे ट परु ष
		वे का= (वे र्ण), प हिर्ण (था), प दां (प), उपस्था (गप्त ग), प य (गदां)	का ठा, C भू, था, प , गप्त ग , गदां	चद्र , अहि , इ द्र, उपGद्र, प्रC पहित			

धन्यवे दां